प्रवासी

२०२२

जयकान्त जन्मशतवार्षिकी विशेषांक



(२० नवंबर १९२२-०३ फरवरी २००९)

• मिथिला-सांस्कृतिक-संगम, प्रयाग •

"We can confidently say that Dr. Jay Kant Mishra's name will be handed down to posterity in India as the greatest benefactor of Maithili at the present day, after that of illustrious George Abraham Grierson, and will earn for him gratitude of 16 millions of Maithili speakers in the first instance and of the scholarly world of the whole of India in the second".

-Suniti Kumar Chatterjee, 2 June 1970

साहित्य अकादमीमे मैथिलीक संस्थापन पर डाक्टर जयकांत मिश्रक प्रति कृतज्ञता

'अत्यंत अह्लाद भेल। अहाँ केँ कतेक धन्यवाद दिअ'। अहाँक नाम स्वर्गीय मिथिलेशक नामक संग मैथिलीक इतिहासमे मातृभाषाक भगीरथीक रूपमे स्वर्णाक्षरमे अंकित रहत।'

-आचार्य रमानाथ झा, 18 फरवरी 1965

'मैथिली केँ उचित स्थान भेटि गेलन्हि अछि, ई ऐतिहासिक महत्त्वक विषय थिक। अहाँ लोकनिक भगीरथ प्रयासक फलस्वरूप जे अमृत गंगा बहरैलीह अछि से जन-मन केँ शीतल आप्यायित करैत रहतीह।'

-प्रोफेसर हरिमोहन झा, 25 फरवरी 1965

प्रवासी

(वार्षिक पत्रिका)

देस सुहावन पावन बेद बखानिय।
भूमि तिलक सम तिरहुति त्रिभुवन जानिय।।
जानकी-मंगल / गोस्वामी तुलसीदास

सम्पादक
संजीव कुमार मिश्र
तरौनी (बड़की), दरभंगा



मिथिला सांस्कृतिक संगम, प्रयाग

2022

प्रवासी (वार्षिक साहित्यिक मैथिली पत्रिका)
तैंतीसम् प्रसून

प्रकाशन वर्ष : 2022

प्रकाशक :
मिथिला सांस्कृतिक संगम, प्रयाग
269/172 ए, आजाद नगर
साउथ मलाका, इलाहाबाद
दूरभाष : 919935687072

सहयोग राशि : मातृभाषा मैथिली प्रेम

आवरण छवि : साभार श्री काशीकान्त मिश्र

मुद्रक :
एकेडमी प्रेस
दारागंज, प्रयागराज
मो.नं. : 09415214788

अनुक्रमणिका

❑❑

सम्पादकीय

जय जयकान्त



छल नञि छल प्रपंच रंच भरि, सात्विकताक स्वरूप।
जे विदेह भू भागक रहला, बनि उपलब्धि अनूप।।
जे जनपद हेतु कएल ई, जीवन अपन समर्पित।
जनिका हेतु रहल नञि कहिओ, राजा-दैव विवर्जित।।

-श्री प्रवासी साहित्यालंकार

ई जन्मशतवार्षिकी बर्ख थिक माँ मैथिलीक अप्रतिम संतति प्रोफेसर (डॉ.) जयकांत मिश्रक। जन्मभूमि हिनक बनारस मुदा कर्मभूमि बनलनि तीर्थराज प्रयागराज। मैथिली साहित्यक पहिल प्रमाणिक इतिहासकार जनिक शोधकृति 'A History of Maithili Literature' आइ धरि मैथिली साहित्यक अध्ययन लेल आधार-ग्रंथ मानल जाइत अछि। अंग्रेजीक विश्व प्रसिद्ध विद्वान, इलाहाबाद विश्वविद्यालयक अंग्रेजी विभागक विभागाध्यक्ष मुदा से सभ आजीविका धरि। विश्वविद्यालयमे जे T.S. ELIOT एहनि कवि कैं व्याख्यायित करैत छलथि से अपन मन-मानस कैं मैथिली कैं समर्पित कएनैं रहलाह। पढ़लनि-पढ़ौलनि अंग्रेजी मुदा रहलाह सरिपहुँ मैथिल से एतेक जे हुनक घरक लोकपर्यन्तकैं हुनक अँग्रेजी विभागक विभागाध्यक्ष होम'मे भाङठ होनि। जेना श्री काशीकांत मिश्र स्वयं कहलनि अछि-

''कागज के कागत, कॉपी के कापी आ जवाहरलाल के जमाहिर लाल कहयवाला हमर दादा के विषय मे हमरो किछु संदेह रहय। संयोगवश रिटायरमेन्टक बाद प्रयाग विश्वविद्यालयमे कतेको अंग्रेजीक विद्वान सबहिक एक विशिष्ट गोष्ठीमे दादा निमंत्रित छलाह। दू दिन पहिने सँ दादाक तैयारी रहनि। ओहिदिन पुस्तक सभक बंडल लए कैं हमरे हुनका संग जाय पड़ल। दादाक भाषण आर व्याख्याक शैली अंग्रेजीमे प्रथम बेर सूनि हम अवाक् रहि गेलहुँ। हुनक Diction आर Fluency क संग Phonetics केर अद्भूत ज्ञान सँ हमर परिचय भेल'' (जयकांत मिश्र समज्ञा, पृ .२०)।


संजीव

मिथिलाक लोकाचार आ संस्कृति सँ निर्मित एहि विभूतिक समर्पणक एकटा संस्मरण सेहो द्रष्टव्य "Some Aspects of Cultural Life of Mithila (1944) लेल सकरीक निकटस्थ बलिया गामक रहमान मियाँ सँ मरसिया गीत संग्रह कैलनि। रहमान कैं लखनवी पैजामा-कुर्ता उपहार देलनि। सकरी रेलवे टीसन पर बैसि कतेको लोकगीत संकलन कैलनि। एहि क्रममे बेर-बेर कौलिक आचार संहिता टारि देलनि। सलहेसक गीत संकलन लेल धोइ घाट गेलाह। महुआ घटवारिनक गाथा-गीत संग्रह करबा लेल सुखसेना (पूर्णिया)

गेलाह।'' (श्री पंचानन मिश्र, जयकांत मिश्र समज्ञा, पृ.५-६)।

हिनक धार्मिक आस्था त' हिनक सामरथे छलनि। कार्तिक मास बनारसमे आ माघ मास प्रयागमे संगम कात कतेको साल भरि मासक कल्पवास। जीवनक अंतिम साल सेहो गंगा-भक्त गंगा कात कल्पवासेमे छलाह। मिथिलाक संस्कार सँ बनल ई व्यक्तित्व भरि जिनगी धार्मिक ग्रंथक अध्ययन, धार्मिक आस्थाक प्रचार-प्रसार आ वस्त्र उतारि भोजन करथि। मिथिलाक शाक्त परंपराक अनुसरण कएनिहार डॉ. मिश्र मूलतः सनातनी धर्मावलम्बी छलथि जनिक आस्था संकीर्ण नहि परंच सर्वधर्मसमभाव छलनि।

धन्य जयकांत जे मैथिली भाषाक संस्थापन साहित्य अकादमीमे भेल जाहि कारणेँ पछाती मैथिली अष्टम सूचीक भाषा सेहो बनलीह, धन्य जयकांत जे मिथिला राज्य एकटा सशक्त अवधारणा बनल अछि। मैथिली केँ ओ जीवित जातिक भाषा मानैत छलथि। एहि कारणेँ साहित्य अकादमी सँ प्रकाशित अपन मैथिली साहित्यक इतिहास केँ ओ अद्यतन कर' चाहैत छलाह। एहि काज केँ डॉ. मिश्र अपन जीवनक अंतिम काज कहैत छलथि आ तैँ एहि सँ विशेष सेहन्तो छलनि। एहि काजमे प्रो. (डॉ.) भीमनाथ झा झाक मदति सेहो करबाक नेआर छलनि। मुदा साहित्य अकादमीक मैथिल परामर्शीमण्डलक कोनो अपुष्ट बैसकमे मैथिली साहित्यक इतिहासकेँ अद्यतन करबाक प्रस्ताव केँ खारिज क' देल गेल। डॉ. मिश्र के मण्डलक एहि अधलाह कृत सँ बढ़ वेदना आ आक्रोश भेलनि आ एहि वेदना संग ओ विदा भ' गेलथि। एहि संदर्भ मे प्रो. भीमनाथ झाक वक्तव्य द्रष्टव्य-

''जनिके उद्योग आ रणनीतिक बदौलति साहित्य अकादेमीमे मैथिली प्रवेश पौलक, आइ कतोक जन जकर पुरस्कार आ सदस्यता पाबि महारथी बनल ताल ठोकैत छथि, तनिके एक अनुरोधकेँ, ने जानि कोन कानिसँ, ठामहि अमान्य कऽ देल गेलनि, हुनका संदर्भमे तकरा विडम्बना नहि तँ आर की कहबैक?'' (जयकान्त मिश्र समज्ञा, पृ. ७१) अस्तु!

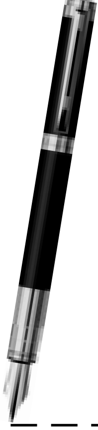
ई हमर अतिशय सौभाग्य जे मिथिला सांस्कृतिक संगमक सम्मानित पदाधिकारी लोकनि हमरा एहनि अकिंचन केँ संस्थाक मुखपत्रक एहि विशेषांकक संपादनक अवसरि देलनि ताहि लेल हम हृदय सँ हुनक सभक कृतज्ञ छी। अपन अत्यल्प सामरथ आ अनुभव सँ ई गुरुतर काज हम कएलहुँ अछि। तेँ जे किछु त्रुटि से सभ हमर आ ताहि लेल क्षमा याचना संग अहींक

-संजीव मिश्र

I quite agree that Maithili is an important Indian language and most certainly deserves recognition.

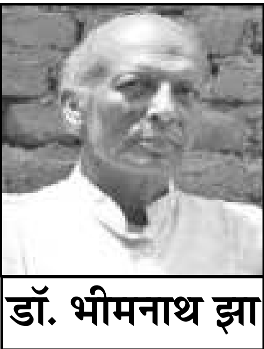
Smt. Sophia Wadia
Founder and editor of The Indian P.E.N
साभार- जयकान्त मिश्र समज्ञा (पृ.५८)

भाषा-साहित्यक चिरसाधक इतिहासपुरुष जयकान्त मिश्र



डॉ. जयकान्त मिश्रक जन्मशतीपूर्त्ति- सप्ताहक अभ्यन्तरे आयोजित संगम-तीर्थ प्रयागराजक एहि सारस्वत समारोहमे सेहो अनेक पावन संगम दृष्टिगोचर भ' रहल अछि। आयोजक संस्थामे पहिल, साहित्य अकादेमी तँ स्वयं भारतीय अनेक भाषा-साहित्यक संगम थीके। दोसर, तीरभुक्ति विद्यापति मिथिला पूर्त न्यास, जकर नामहि खास स्थान, व्यक्तित्व आ संस्थाक संगमकेँ सिद्ध करैछ। मंचपर विराजमान महानुभाव लोकनि चिन्तन-लेखन-उद्बोधनकलाक संगमे तँ थिकाह । सोझाँमे दृश्यमान् सहृद्-सुहृद् प्रबुद्ध श्रोता-वक्ता सहभागी लोकनिमे सेहो एक-एक जनमे मैथिली-हिन्दी-अङरेजी सहित अन्य अनेक भाषाक वाग्धाराक संगम प्रवाहित होइत छनि। एत' स्थान-प्रान्त- प्रयोजन प्रभृति विविध संगमक प्रतिच्छवि प्रतिभासित होइत अछि।

स्वयं डॉ. जयकान्त मिश्र त्रिवेणी संगमक तटवासिए टा नहि छलाह, हुनक व्यक्तित्व आ कृतित्वमे सेहो कतधा त्रिवेणी संगमक प्रवाह अनुभव क' सकैत छी । यथा- जन्म काशी, निवासी प्रयाग, वासी मिथिलाक । तीनू धारा समान रूपेँ सदानीरा । पढ़लनि अङरेजी, कौलिक विद्या संस्कृत, सेबलनि मैथिलीकेँ- तीनू भाषाक गम्भीर वेत्ता। वृत्ति-अध्यापन, प्रवृत्ति- मातृभाषा-सेवन, चित्तवृत्ति- साधना, कर्मणा, गर्जना । मन गंगा, तन यमुना, जीवन सरस्वती अङना । धाराक मिलान तँ अनेक ठाम भेटत, प्रयाग मुदा एके टा अछि। तहिना, डॉ. जयकान्त मिश्र एकसरे भेलाह, वैह टा छलाह ।


डॉ. भीमनाथ झा

हिनक अङरेजीक ज्ञान मैथिलीकेँ नवीन दृष्टि देलक, अङरेजीमे पाण्डित्य मैथिली साहित्यक इतिहास-रचनाक ठोस वैज्ञानिक आधार प्रदान कयलक, हिनक संस्कृतक संस्कार मध्यकालीन अनेको सामग्रीक महत्त्वकेँ बुझबाक विवेक देलक, ओकर अनुसन्धान आ अर्थ-निरूपणमे सहायता कयलक, संस्कृतक वातावरण मिथिलाक संस्कृतिसँ निरन्तर हिनक सम्बन्ध बनौने रखलक । संस्कार हिनका संस्कृत देलक, सोच देलक अङरेजी । संस्कार थिक सीर, से जतेक गहीँर धरि जायत ततेक जीवन-रस प्राप्त करत । सोच थिक गाछ जे ऊर्ध्वमुख रहैछ, जकर शाखा चारू दिस बढ़ैछ; से जतेक चतरत-पसरत ततेक जनकल्याणकारी बनत । संस्कार आ सोचक ई शिक्षा डॉ. जयकान्त मिश्र अपन पिता महामहोपाध्याय उमेश मिश्र एवं महान् गुरु डॉ. अमरनाथ झासँ प्राप्त कयलनि । ओ दुनू गोटे कोट-पेन्टपर तौनी आ पाग दैत छलथिन । ईहो तहिना सूटपर तौनी रखैत छलाह आ माथपर पाग । ई अङरेजी आ संस्कृतक समन्वय बिना सम्भव नहि छल । ई एहि बातक

संकेत छल जे मैथिल मिरजैवला युगमे जीविक' वर्तमानक संग डेगमे डेग मिला नहि चलि सकैत अछि । तहिना, टोप धारण क' लेत तँ अपन सांस्कृतिक अस्मिताकेँ लोप क' लेत ।

जेना कहलहुँ सीर आ गाछ, से डॉ. मिश्रक सीर छल (अर्थात् संस्कारमे छल) मैथिलीक रक्षा, उत्थान, विकास, सर्वमान्यता, प्रसार । से सीर बहुत गहीँर धरि गेल छल, भीतरमे बहुत पसरल छल, मजगूत छल, पुष्टसँ जीवन-रस प्राप्त करैत छल । तेँ स्वाभाविक जे गाछ सेहो विशाल छल, तकर शाखा-प्रशाखाक बहुलता छल, चतार-पसार बहुत दूर धरि गेल छल- अनुसन्धान, इतिहास-लेखन, निबन्ध- समीक्षण, सम्पादन, कोशनिर्माण, अनुवाद, पत्रप्रकाशन, संगोष्ठी-समारोहमे सहभागिता, भाषा-आन्दोलन, प्राथमिक वर्गसँ मैथिलीमे शिक्षा-अभियान, साहित्य अकादेमी, स्त्रीजागरण, राजनीतिक जुड़ाव, कोर्ट-कचहरी, एत' धरि जे मैथिली लेल गारि-मारि पर्यन्त सहबा लेल आ जहलो जयबा लेल तैयार । ओ गाछ नहि, स्वयंमे गाछिए छलाह । जयकान्त मिश्र एक व्यक्ति नहि, एहन संस्था छलाह जाहिमे भाषा, साहित्य, संस्कृति, राजनीति, समाजनीति, अधिकारनीति, कर्तव्यनीति, भूत-वर्त्तमान- भविष्यनीति, बूढ़-युवा-नेना सभक हित निहित छल ।

हिनक काजक बड़का फिरिस्त अछि, जे अधिक गोटे जनिते छी । तकर महत्त्व आ प्रभावपर अधिकारी विद्वान् लोकनि दू दिन धरि सांगोपांग प्रकाश देताह । हम ओतेक विस्तारसँ आ ओहन सूक्ष्मतासँ ताहि प्रसंग कहि सकी, से योग्यता नहि आ ने एखन ततेक समये छैक । हम किछु मात्र हुनक अवदानपर ध्यान आकृष्ट कर' चाहैत छी । ताहिसँ पहिने ई टिप्पणी ।

कोनो दिन अपन एक पूज्यवर गुरुवरसँ पुछलियनि- साहित्यमे कोनो व्यक्तिविशेषक योगदानकेँ कोना बेराओल जा सकैत छैक ? ओ कहलनि- बड़ सोझ छैक । जाहि विधामे हुनक योगदानकेँ बेरयबाक हो, ताहिमे देखियौक जे हुनक कृतिकेँ जुड़बासँ पूर्व ओ विधा ओहिना रहितैक, ओतबे पुष्ट, कि ओहिमे किछु अभाव भ' जइतैक ? जँ ओहिना रहितैक तँ हुनक मात्रात्मक योगदान मात्र मानल जयतनि । जँ अभाव रहितैक तँ हुनक कृतिक कारणे जतेक अधिक ओ समृद्ध भेलैक, ततबा हुनक गुणात्मक योगदान कहौतनि । एहि तराजूपर किनको अहाँ जोखि सकैत छियनि।

आब किछु प्रमुख क्षेत्रमे डॉ. मिश्रक काजकेँ देखल जा सकैत अछि आ एहि कसौटीपर हिनक योगदानकेँ परेखल जा सकैत अछि ।

मैथिली साहित्यक इतिहास-ई मैथिली साहित्यक इतिहास लिखलनि । छपल ओकर पहिल खण्ड १९४९मे, दोसर खण्ड १९५०मे । ओ मैथिली साहित्यक पहिल इतिहास छल । ओहिसँ पूर्व मैथिली साहित्यक क्रमबद्ध अध्ययनक कोनो समटल सामग्री नहि छलैक । सामान्य अध्येता तँ असहाय छले, विशेषो पढ़ल-लिखल लोक अन्हारेमे तीर छोड़ैत रहथि ।ओ पोथी लोककेँ पहिल बेर अपन साहित्यक गौरवपूर्ण अतीत एवं सर्जनशील वर्तमानक दर्शन करौलक । ओ इतिहास अङरेजीमे छैक । ताहिसँ मैथिलीक महत्त्व पहिल बेर अखिल भारतीय स्तरपर स्थापित भेलैक । आनो भाषाक विद्वद्वर्गक बीच मैथिली साहित्य अपन श्रेष्ठत्त्वकेँ सिद्ध कयलक । ई इतिहास नहि रहितैक तँ १९५५मे प्रो. कृष्णकान्त मिश्रक मैथिलीमे इतिहास अबितनि की नहि, से कहब कठिन । ओ अपन इतिहासकेँ अग्रज डॉ. जयकान्त मिश्रकेँ समर्पित क' तकर संकेत द' देने छथि । मैथिलीमे डॉ.दुर्गानाथ झा श्रीशक इतिहास डॉ. मिश्रक इतिहासक अठारह वर्षक बाद १९६८मे तथा अङरेजीमे प्रो. राधाकृष्ण चौधरीक इतिहास छब्बीस वर्षक बाद १९७६मे अयलनि । एहि परिप्रेक्ष्यमे डॉ. मिश्रक एहि काजक महत्त्व सहजेँ बुझल जा सकैत अछि ।

अनुसन्धान- मध्यकालकेँ नाटकक युग कहल गेल अछि, जाहिमे सर्वाधिक योगदान कीर्तनियाँ नाटकक अछि । डॉ.मिश्र तीन खेप नेपालक यात्रा कयलनि- १९४४ आ

५३मे काठमांडूक, १९६२मे जनकपुरक । अनेक कीर्तनियाँ एवं नेपालीय मैथिली नाटककेँ तकलनि, तकरा खोहसँ निकालि सम्पादित क' प्रकाशित करौलनि । आइ जे मध्ययुगकेँ स्वर्णयुग कहल जाइत अछि, से हिनके अवदान थिक। ज्योतिरीश्वरक 'मैथिली धूर्तसमागम', विद्यापतिक 'गोरक्षविजय', नन्दीपतिक 'श्रीकृष्णकेलिमाला', रमापतिकृत 'रुक्मिणी-परिणय', कान्हारामक 'गौरीस्वयंवर' प्रभृति अनेक नाटक हिनके द्वारा प्रकाशमे आयल ।

लोकसाहित्य–आइ लोकसाहित्यक विकासक धूम उचिते मचल अछि । एकरो स्वतंत्र सत्ता आ साहित्यिक मर्यादा देनिहार अपन देशक, मिथिलामे, प्रथम पुरुष डॉ. मिश्रे भेलाह । हिनके संकलन-सम्पादनमे 'Introduction to the Folk Literature of Mithila' नामसँ बहुविध सामग्रीसँ सज्जित पोथी १९५०मे प्रकाशित भेल छल । तकर बादे एकर साहित्यिक महत्त्व दिस जनमानस आकर्षित भेल । फलत:आइ लोकसाहित्य मुख्य धारामे विराजमान भ' गेल अछि । मणिपद्म पश्चात् एहि क्षेत्रमे प्रवेश कयने रहथि, जे सर्जनात्मक साहित्यक पथार लगा देलनि ।

साहित्य अकादेमीमे मैथिली– एखन ई जे भव्य समारोह भ' रहल अछि, से साहित्य अकादेमीक सौजन्यसँ अछि । ई दिन आइ तँ देखि रहल छी जेँ ओत' मैथिली सम्मिलित-सम्मानित अछि। मैथिलीकेँ ओत' पहुँचौनिहार व्यक्तित्वमे अग्रगण्य यैह महापुरुष छलाह ।

साहित्य अकादेमीमे मैथिली-प्रवेशक इतिहास बहुज्ञाते अछि । १९६३ ई.क ९,१०,११ दिसम्बरकेँ दिल्लीमे मैथिली पुस्तक प्रदर्शनीक भव्य आ विराट आयोजन क', ताहिमे प्रधानमंत्री आ साहित्य अकादेमीक तत्कालीन अध्यक्ष पं. नेहरूकेँ आमंत्रित क' हुनका मैथिली साहित्यक उज्ज्वल अतीत एवं समृद्ध वर्त्तमानसँ अवगत करायब, साहित्य अकादेमीक जेनरल काउन्सिलमे मैथिलीक माङकेँ सहजोर ढंगसँ उठायब, पछाति डॉ. राधाकृष्णनक अध्यक्षता-अवधिमे १९६५मे अकादेमीक मान्यता देआयब, पश्चात् एगारह वर्षसँ ऊपर धरि मैथिली परामर्शी मण्डलक संयोजकत्व स्वीकार क' अकादेमीक उच्च मानदण्डक अनुरूप मैथिली साहित्यक जे सम्मान बढ़बैत रहलाह, से इतिहासमे अमिट भ' गेल अछि ।

प्रकाशन-संस्था–महामहोपाध्याय उमेश मिश्र १९४४मे 'अखिल भारतीय मैथिली साहित्य समिति' एवं 'तीरभुक्ति पब्लिकेशंस' नामसँ दू गोट संस्था बनौलनि, जे पछाति हिनक संरक्षणमे आबि गेलनि । एहि प्रकाशनसँ महामहोपाध्यायजी एवं हिनक ग्रन्थक अतिरिक्त किछु आनो साहित्यकारक पोथी छपल अछि। 'मैथिली समाचार' नामक पाक्षिक बुलेटिन विशेष उल्लेखनीय एहि कारणे थिक जे ओहिमे मैथिली साहित्य आ आन्दोलन सम्बन्धी यावन्तो समाचार छपैत छल, नवीन पुस्तक-प्रकाशनक सूचनाक संग ताहिपर संक्षिप्त टिप्पणियोँ रहैत छलैक। हिनक अपन साहित्यिक एवं आन्दोलनात्मक गतिविधिक जनतब, जेना सरकारसँ पत्राचार, केस-मोकदमाक अद्यतन स्थितिसँ अवगत करबैत अपन कार्यक्रम आ अग्रिम योजनाक सूचना रहैत छलनि । ई सिलसिला १९६३ सँ २००९ तक, पैँतालिस वर्षसँ ऊपर धरि जारी रखलनि ।

विशेष उल्लेख्य ई जे ओही संस्थासँ डॉ. मिश्र १९४९मे यात्रीजीक 'चित्रा' एवं १९५०मे प्रो. उमानाथ झाक 'रेखाचित्र' प्रकाशित कयलनि । ई दुनू पोथी मैथिली कविता आ कथाधारामे मोड़ आनि देबा लेल प्रख्यात अछि । 'चित्रा' तँ क्रान्तिकारी पोथी सिद्ध भेल । ओहि समयक जे प्रकाशन-स्थिति रहैक, ताहिमे डॉ. मिश्र जँ ओकरा नहि छपने रहितथिन तँ कहब कठिन अछि जे तकर कतेक दिनक बाद ई दुनू पोथी मुद्रणक मुँह देखैत आ तखन अपन काव्य आ कथा-क्रान्ति कते पछुआ जाइत । ध्यातव्य जे राजकमलक 'स्वरगंधा' १९५८मे, चित्राक नौ वर्षक बाद, आयल एवं ललितक 'प्रतिनिधि' १९६४मे, रेखाचित्रक चौदह वर्षक बाद । डॉ. जयकान्त मिश्रक महत्ताकेँ एहू रूपमे रेखांकित करब कर्तव्य थिक ।

प्राथमिक शिक्षा-ई हिनक सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण अभियानमेसँ रहनि । हिनक मान्यता छलनि, आ एहिसँ के असहमत भ' सकैछ, जे जाधरि प्राथमिक स्तरसँ मैथिली माध्यमे शिक्षा-व्यवस्था नहि आरम्भ होयतैक तावत एहि भाषाक भविष्य अन्धकारमये रहतैक । भाषे टा नहि, मिथिला भूमिक भविष्य सेहो पलटि नहि सकतैक । तेँ मैथिली माध्यमे प्रथमहि वर्गसँ स्कूली शिक्षा देबाक आन्दोलनक जतेक प्रकार भ' सकैत छैक, सभ विधिकेँ ई अजमौलनि, तन-मन-धनकेँ झौंकि देलनि । पदयात्रा, जनजागरण, गुरुगोष्ठी, अभिभावक-सम्मेलन, विद्यालय-भ्रमण, राजनीतिक दबाव, कानूनी लड़ाइ, अनशन-आन्दोलन सभ-किछु करैत रहलाह । खण्ड सफलता प्राप्तो भेलनि । बिहार टेक्स्ट बुक कारपोरेशन सन् १९९९मे प्रथम वर्गसँ एगारहम वर्ग धरिक सभ विषयक मैथिली भाषामे टेक्स्ट बुक छपबो कयलक, बिहारक दैनिक अखबार सभमे सरकारी विज्ञापनो प्रकशित भेलैक, किन्तु समाजक जड़ता भंग नहि भ' सकलैक । ई कचोट ओ लैए क' गेलाह ।

मैथिल महिला विद्यापीठ-मिथिला-मैथिलीक सर्वांगीण उन्नतिक हेतु ई महिला-जागरणकेँ अनिवार्य मानैत छलाह । महिलामे शिक्षाक प्रसार, अपन विधि-व्यवहारक ज्ञान, गीतनाद, पाकशास्त्र एवं वास्तुशिल्पकलाक विकास आदिक संरक्षण आ प्रशिक्षण लेल मैथिल महिला विद्यापीठक स्थापना १९७१मे क' तकर मुख्यालय मधुबनीमे रखलनि आ पत्नी श्रीमती अपराजिता देवीकेँ अध्यक्ष बनौलनि । ई संस्था अपन स्तरपर विभिन्न परीक्षाक संचालन क', प्रमाणपत्र द' अनेक महिलाकेँ जीविकोपार्जनक योग्य बनौलक । ओहि समयमे हिनक दूरदृष्टिए कहब जे स्त्रीगणक स्वावलम्बन दिस हिनक ध्यान गेलनि आ ताहि दिशामे सकारात्मक योगदान देलनि । एहि प्रकारक नारी-शिक्षण संस्थान एहिसँ पहिने कोनो छल, से हमरा ज्ञात नहि। एकर पीठोपरक एहन दोसर मन नहि पड़ैत अछि ।

शब्दकोशक प्रकाशन-ई वृहत् मैथिली शब्दकोश तैयार कयलनि, जकर दू खण्ड मात्र १९७३ आ ९५मे प्रकाशित भ' सकल । प्रकाशक अछि इंडियन इंस्टिच्यूट ऑफ एडवांस्ड स्टडी, शिमला । ई शब्दकोश विलक्षण एहू अर्थमे अछि जे एहिमे मिथिलाक्षर, देवाक्षर आ रोमन तीनू अक्षरक प्रयोग कयल गेल अछि । शब्द व्याकरणक दृष्टिएँ कोन प्रकारक थिक, ओकर उत्पत्ति, वैकल्पिक वर्तनी, विभिन्न भाषाक शब्दसँ तुलना, ओकर प्रयोग मैथिलीक कोन रचनामे भेल छैक, अङरेजी-अर्थ आदि अनेक सूचनासँ सज्जित अछि । दोसर खण्डसँ ई स्पष्ट प्रतीत होइछ जे बादमे ओकरा संक्षेप करब हिनका वाध्यता भ' गेल होयतनि।

राजनीतिक दल-डॉ. मिश्रक मान्यता छलनि जे प्रजातांत्रिक व्यवस्थामे मिथिलाक सम्यक् विकास तखनहिँ सम्भव थिक जखन एहि ठामक लोक राजनीतिक रूपसँ जाग्रत हो । अपन भाषा-साहित्य-संस्कृति-शिक्षाक समस्याक समाधान लेल मैथिली सेनानी संसद आ विधानसभामे आवाज बुलन्द करत तखने सरकारक कान ठाढ़ होयतैक । तेँ, २०००मे बिहार विधानसभाक चुनावमे बहेड़ा क्षेत्रसँ श्री कमलेश झाकेँ ठाढ़ कयने रहथिन आ हुनका सभ प्रकारेँ मदति पहुँचौने रहथिन, पर्चा-पोस्टर छपबाय स्वयं घुमि-घुमि सघन प्रचारो कयने रहथिन ।

अन्य कार्य- ई अखिल भारतीय प्रतिष्ठाप्राप्त तत्कालीन संस्था 'Indian PEN' मे मैथिलीक प्रतिनिधित्व कयने रहथि। देश भरिक मैथिली संस्थामे बेर-बेर उपस्थित भ' साहित्यिक आ विकासात्मक- आन्दोलनात्मक गतिविधिसँ ओकरा जोड़ब, मैथिलीक समस्यापर अङरेजी आ मैथिलीमे अनेको पुस्तिकाक प्रकाशन- वितरण क' वृहत्तर क्षेत्रक प्रबुद्ध समाजक ह्रदयमे मैथिलीक ज्योतिकेँ जरौने राखब तथा नवतुरिया दलकेँ निरन्तर प्रेरित- प्रोत्साहित करैत रहबाकेँ डॉ. मिश्र मानू जीवनक उद्देश्य बना लेने छलाह।

ई तँ हिनक मैथिली सम्बन्धी काजक किछु बानगी थिक। अङरेजी साहित्यक शोध-समीक्षामे सेहो हिनक विशिष्ट अवदान छनि। प्रयाग तँ हिन्दीक गढ़े थिक, तत्रस्थ

हिन्दी साहित्य परिषदक सेहो सदस्य रहथि । डॉ. सर गंगानाथझा संस्कृत विद्यापीठक पहिने कार्यसमितिक सदस्य, पछाति आजीवन अध्यक्षक हैसियतसँ महत्त्वपूर्ण सेवा कयने छथि। एहिना, भाषा-साहित्य आ सामाजिक क्षेत्रमे आर अनेको कार्य चिरकाल धरि हिनक व्यक्तित्वकेँ आलोकित रखने रहत।

डॉ. मिश्रक बहुआयामी विराट व्यक्तित्वक प्रसंग हमर मुँह खोलबकेँ लौले टा कहल जा सकैछ । किन्तु, अपने लोकनि तँ विद्वान् छी । एत' एतबे प्रार्थना अछि जे हमर उक्त गुरुवर द्वारा कहल ओहि सूत्रकेँ कृपया मन पाड़ल जाय आ तत्काल एतबो बिन्दुपर ध्यानस्थ भ' सोचल जाओ जे तहिया जँ हिनक हस्तक्षेप नहि भेल रहितनि तँ कथित सभ विधा आ शाखाक आइ की दशा रहितैक आ अपना लोकनि एखन कथीपर गर्व करितहुँ ?

(दि. २६-२७ नवम्बर २०२२ केँ प्रयागमे साहित्य अकादेमी आ तीरभुक्ति विद्यापति मिथिला पूर्त न्यासक संयुक्त तत्त्वावधानमे डॉ. जयकान्त मिश्र जन्मशताब्दी समारोहमे पठित बीज भाषण)

❑❑



मानवीय सम्बन्धक प्रभास



प्रभास कुमार चौधरी के हम सभ १९८० ई. सँ जान' लगलियनि। एक कथाकार ओ उपन्यासकार रूपमे हुनकर छवि मोनमे निर्मित भ' गेल रहय। चेतना समितिक विद्यापति पर्वमे हुनका पहिल बेर देखलियनि। ओहि समय पर्व पटनाक हार्डिंग पार्कमे होइ। विशालमैदान। विशाल पण्डाल आ मंच। लाइट सभक अदभुत चकमकी। लोक सभ टहलि रहल अछि। पण्डालमे बैसि क' कार्यक्रम देखि रहल अछि। हमरा सभ त' एम्हर-ओम्हर घुमैत अपन अग्रज सहित्यकार सभक खोजमे लागल रही। भेंट-घाँट आ गप-सप, परिचय-पात के उत्कंठा रहय। कियो भेंटि जाथि त' सभक चेहरा पर खुशीक बसात बह' लागय। एहनामे कियो कहलनि 'हौउए प्रभास जी छथि। चाहक दोकान लग बैंच पर बैसल।' नजरि उठल त' दूरमे एकटा चाहक ठेला लग दूनू दिस राखल बैंच पर किछु लोक सभ बैसल। राजमोहन झा, भीमनाथ झा, गंगेश गुंजन, जीवकान्त, मोहन भारद्वाज आ सुकान्त सोम संग एक मोंट-डाँट व्यक्ति बैसल। इएह प्रभास जी छथि। हम सभ आगू बढ़ि हुनका सभक अभिवादन केलहुँ। परिचय-पात भेल। लागल प्रभासजी नाम सँ हमरा चिन्हैत छथि। खुशी भेल। आर व्यक्ति सभत' प्रायः चिन्हिते रहथि। गप-सप हुअ' लगलैक। तकरबाद हुनका सँ कतेको बेर भेंट भेल। डाकबंगला रोड पर एकटा चाहक दोकान रहै। ओत' साँझमे आफिस आदि सँ घुरैत मैथिलीक साहित्कार सभ बैसथि। से बैसकी दू-तीन घंटा तक के लागि जाइ। प्रभासजीक एल.आइ.सी आफिस ओहिठाम दोसर दिस रहनि। थोड़ेक दूरक बाद गाँधी मैदान दिस जाइबला रस्तामे गोलम्बर लग क्वाटर रहनि। हमहुँ १९८३मे पटना आबि गेल रही त' आफिस सँ कहियो ओहि चाहक दोकानमे जाइ तँ सभ सँ एकेठाम भेंट भ' जाय। मिथिला मिहिर कार्यालयमे सेहो भेंट हुअय। एल आइ सी आफिसमे सेहो। हुनकर बात-व्यवहारमे स्नेह आ आपकता रहैत छल। आफिसोमे पहुँचला पर व्यस्त रहितो, चैम्बरमे तुरन्त बजा लैत रहथि।



अशोक

जखन हमर गाम लोहनामे 'किरण जयन्ती' क अवसर पर एक दिसम्बर १९८१ के कार्यक्रमक बाद ओतहि रातिमे मिडिल स्कूल पर बहुतो अतिथि साहित्यकारक संग हम सभ रही त' एक ऐतिहासिक निर्णय भेल। प्रभासजी ओहिमे नहि रहथि। बेस राति क' हम सभ गप करैत रही त' शिवशंकर श्रीनिवास पंजाबी के चलैत 'दिवावले सारी रात' कार्यक्रमक चर्चा करैत प्रस्ताव रखलनि जे ओहने कार्यक्रम-कथा-पाठ आ ओहि पर त्वरित टिप्पणी, समीक्षाक गोष्ठी मैथिलीमे सेहो हेबाक चाही। ओहि समय मिथिला-मिहिर पत्रिका बन्द भ' गेल छल। साहित्यकारक बीच एहि ल' कए घोर निराशा व्याप्त रहय। एहनामे सोचि-बिचारि क' 'भरि राति भोर' नामसँ कथा गोष्ठी करबाक निर्णय भेल। हम

ओहि समय कटिहारमे पदस्थापित रही। पहिल आयोजन ओतहि २५ दिसम्बर १९८९ क करबाक नेआर भेल। ओहीठाम पूरा प्रस्ताव लिखल गेल आ ओहि पर ओहिठाम उपस्थित सभ गोटे हस्ताक्षर केलनि। निर्णय के फोटो-स्टेट करा क' हम सभ कथाकार, समीक्षक सभ के पठा देलियनि। मुदा अपन जेठ बहीनिक आकस्मिक देहावसानक कारण हमरा ओ कार्यक्रम स्थगित कर' पड़ल। ई समाचार ज्ञात भेला पर प्रभास जी, जे ओहि समय मुजफ्फरपुरमे पदस्थापित रहथि, २१-१-१९९० क 'सगर राति दीप जरय' नाम सँ पहिल कार्यक्रमक आयोजन केलनि। एहि प्रकारे ओ एहि कार्यक्रमक पहिल आयोजक-संयोजक भेलाह। एकर बादसँ ओ चारि बेर एहि कार्यक्रमक आयोजन केलनि। पटना, कलकत्ता, बनारस आ इलाहाबादमे। केवल आयोजने एहि केलनि, अपन सम्पूर्ण क्षमता ओ व्यवस्थापकीय कौशल आ ममत्व के संग ओहि कार्यक्रमक अनिवार्य व्यक्ति भ' गेलाह। जाबत ओ जीलाह, सभके हकारि बजबैत रहलाह, कार्यक्रमसँ सम्बद्ध रहला। हुनकर परोक्ष भेला पर सभ के लगलै जे हुनक अभावमे कार्यक्रम सुनियोजित रूप सँ भ' सकत कि नहि। मुदा ओ तेहेन ओहि कार्यक्रमक नींव मजबूत क' गेल छलाह जे ओ गोष्ठी आइयो चलि रहल अछि। आब त' सए सँ बेसी कार्यक्रम आयोजित भ' चुकल अछि, विभिन्न ठाम। हुनकर एहि प्रकारक निष्ठा, सृजनात्मक प्रबन्धन पर तारानन्द वियोगी 'प्रभास माने सार्थक सृजनात्मक मंचक मैनेजर' नामसँ संस्मरण हुनक देहावसानक बाद लिखलनि।

ओहिमे ओ कहने छथि जे, '**आब प्रभास जी चल गेलाह अछि। ओ जे गेलाह से हुनका संग अनेक-अनेक अध्याय सभ, अनेक-अनेक स्मरणीय प्रयास सभ चलि गेल अछि। ओ जे मुइलाह भाइ, से हमरा लागैए जे हुनकहि संग हमरो लोकनि थोड़े-थोड़े मरि गेलहुँ अछि।**'

ओ पटनामे 'युवालेखन' संस्थामे गोष्ठी सभ करैत रहैत छलाह। एहि संस्थाक स्थापना ओ १९७२मे केने रहथि। जत' रहथि 'युवालेखन' के बैनरमे गोष्ठी सभ करथि। पटनामे जाहिया हम हुनक डेरा पर युवालेखनक पहिल गोष्ठीमे गेलहुँ त' ओहि दिनक गोष्ठीक हमरा अध्यक्ष बना देल गेल। ओहि गोष्ठीमे सुधांशु शेखर चौधरीक संग बहुतो वरिष्ठ साहित्यकार सभ रहथि। एहनामे हमरा अध्यक्ष बनला पर संकोच ओ असौकर्यक अनुभव हुअ' लागल। ई बात बजला पर प्रभास जी कहलनि। 'एहि गोष्ठीमे जे पहिल बेर अबैत छथि, हुनके ओहि दिनक अध्यक्ष बनाओल जाइत छनि। इएह नियम छैक।' हम चुप भ' गेल रही। ओकर बाद कतेको गोष्ठीमे गेलहुँ। इएह नियम देखैत रहलियैक। एहि प्रकारें देखलहुँ जे ओ सभ दिन नवलोक सभ कें खास क' युवालोकिन कें आगू बढ़ेबामे प्रयत्नशील रहलाह। युवा सभक संग समानताक व्यवहार करथि। कोनो आयोजनमे हमरा सभ कें आगू बैसबाक लेल कहथि। चाहथि जे हम सभ सम्पूर्ण रूपमे सक्रिय रही। कोनो गोष्ठीक संचालन लेल कहथि त' एही संग संचालनक छोट-छोट बिन्दु के कहि देथि। हुनका समक्ष कोनो व्यक्ति अपना के छोट अनुभव नहि करय।

प्रभास कुमार चौधरी कें साहित्यकार बनबामे घरक वातावरणक खूबे योगदान रहलनि। हुनकर पिता सुरेन्द्र चौधरी गामक हाई स्कूलमे प्रधानाध्यापक रहथिन। पिता कवि छलथिन। हुनका कविता लिखैत देखि आ हुनक कविता सभ के सुनि प्रभासजी कें कविता लिखबाक प्रेरणा भेटलनि। हुनकर घरमे समृद्ध पुस्तकालय रहनि। ओ नेनहिमे रवीन्द्र, शरत ओ प्रेमचन्द्रक साहित्य पढि गेल रहथि। विभिन्न हिन्दीक पत्रिका सभ पढ़थि। हुनकर स्कूली शिक्षा गामक स्कूल सँ शुरू भेलनि ओ ओकर बाद ओ लहेरियासरायक एम. एल. एकेडमीमे आबि गेलाह। ओत' चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर ओ कथाकार ललित सँ भेंट भेलनि। हिनका लोकनिक सान्निध्यमे प्रभास जीक भावी जीवनक न्यों पड़ि गेलनि। मेट्रिक के बाद प्रभास जी पटना आबि

गेलाह। पटना साइन्स कॉलेजमे नाम लिखौलनि। १९६०मे आइ.ए.ओ राजनीतिशास्त्रमे आनर्स १९६१मे केलनि। फेर १९६४मे एम.ए.क' के .के.एम कालेज, जमुईमे प्राध्यापक भेलाह। दू वर्षक बाद ओत' सँ भारतीय जीवन बीमानिगममे प्रशासकीय पदाधिकारीक रूपमे आबि गेलाह। बीमा निगम मे आंचलिक प्रबंधक पद पर रहथि त' १९९८मे देहावसान भेलनि।

प्रभास जीक पहिल मैथिल कथा अछि 'धरती कुहुरि उठल' (१९५६) तथा 'प्रतीक्षा' (१९५७)। ई दुनू कथा वैदेहीमे छपल अछि। एकर रचना मूलतः हिन्दीमे भेल छल। कथाकार ललित एहि दुनू कथाक मैथिल रूपान्तर केने रहथि। हिनक पहिल मौलिक मैथिल कथा अछि 'बाहर इजोत भीतर धुआं' (१९६१)। ओकरबाद ओ धुरझार लिख' लगलाह। हमरा सभ जनैत छी जे राजकमल चौधरीक तीनटा कथा– 'अपराजिता', 'अन्धकार' ओ 'फुलपरासवाली' जे ओ पहिनें हिन्दीमे लिखने रहथि, तकरो मैथिल अनुवाद ललित केने रहथि। राजकमलक 'ललका पाग' पहिल कथा छी जे ओ मूल रूप सँ मैथिलमे लिखलनि। वर्ष १९६१ ई अबैत अबैत प्रभासजी हिन्दी ओ मैथिली कथाकारक रूपमे प्रतिष्ठा अर्जित क' लेने रहथि। बादमे ओ मैथिली मे मूल रूपमे लिख' लगला जकर हिन्दी अनुवाद हिन्दीक पत्रिका सभमे छपैत छल।

हमरा सभ देखैत छी जे प्रभासक पीढ़ीमे आबि क' मैथिली कथाकारक जीवन ओ साहित्यमे परिवर्त्तन आयल अछि। जीवन ओ साहित्यमे अन्तर्विरोध कम भेल अछि। अनेक लेखक अपन उर्जा अन्त धरि संरक्षित रखबामे सफल रहला अछि। राज मोहन झा, जीवकान्त, प्रभास कुमार चौधरी, गंगेश गुंजन आदि नाम एहि बातक प्रमाण अछि। अपन जीवन आ साहित्यमे एक तारतम्य बना क' रखबामे ई लोकनि सफल रहलाह। जीवन सँ साहित्य प्रभावित भेल त' साहित्य सँ जीवनमे ऊर्जा बनल रहलनि। प्रभास जीमे ई गुण हम सभ देखैत छी से हुनकर समस्त पीढ़ीमे छलनि। रचनाक संग हुनक लोकनिक व्यक्तित्व के सेहो एक खास महत्व रहलनि। हुनकर सभक व्यक्ति के जानब ओतबे जरूरी जतेक हुनक साहित्य के। प्रभासजीक समकालीन राज मोहन झा अपन संस्मरण 'प्रभासक प्रभास'मे लिखने छथि जे, 'प्रभास जी सन व्यक्ति आगां जा क' होयताह, से विश्वास कोन आधार पर कयल जा सकैत अछि? प्रभास जी के हम सभ जे हुनक समकालीन छियनि, देखलियनि– जनलियनि। अग्रज पीढ़ी जे छलाह वा छथि, हुनका देखलथिन–जनलथिन। मुदा आब' बला पीढ़ी जे हुनका नहि देखलकनि–जनलकनि, से प्रभासजीक व्यक्ति के कोना चिन्हतनि? की हुनक साहित्य ओकरा आगां प्रभास जी कैँ अपन सम्पूर्ण अखण्ड रूपमे आनि क' ठाढ क' द' सकैत छनि?... तैँ हम क्षमा चाहब जँ हम कही जे शाश्वतक आगां एत' नश्वर पैघ भ' जाइत अछि। अपन अमरताक अछैतो साहित्य अपन सृजनकर्त्ता व्यक्ति सँ पैघ नहि भ' सकैत अछि। कालातीत भेनाइए की महानताक लक्षण थिकैक? धूमकेतुमे की ग्रह और तारा सँ बेसी प्रकाश नहि होइत छैक?' मोटामोटी राज मोहन झाक कहबाक अभिप्राय लगैत अछि जे प्रभासजीक व्यक्ति महान छनि। जे हुनका देखलक–जनलक सैह हुनक व्यक्ति के सम्पूर्ण रूपें बूझि सकैत अछि। साधारणतया ई मानल जाइत अछि जे रचनाकारक व्यक्तित्वक छाप ओकर रचना पर रहैत छैक। रचना पढि क' रचनाकारक व्यक्ति के जानल जा सकैत अछि। एत' राज मोहन झा कह' चाहैत छथि जे, नहि, रचनासँ ओहि व्यक्ति के सम्पूर्ण रूपें नहि जानल जा' सकैत अछि।

प्रभासजीक जीवन हुनक बहुतो रचनामे प्रतिबिम्बित भेल अछि। ओ जे जीवनमे विभिन्न क्षेत्रमे अनुभव केलनि, देखलनि–सुनलनि से सभ कथा– उपन्यासमे आयल। मुदा से रचनात्मक रूप सँ। हुनकर रचना केवल कल्पनाक आधार पर नहि रचल जाइत छल। हिनक कथा–उपन्यासमे स्कूली जीवनक कतेको चित्र आयल अछि। प्रभासजी कैँ

गामसँ अत्यधिक लगाओ छलनि। गाममे सभ सँ प्रमुख हुनकर पिता छलथिन। हुनका द्वारा लिखल चिट्ठी सभ प्रभासजी के सदिखन सम्पूर्ण गाम ओ ओहिठामक छोट-पैघ बात, गतिविधि सँ जोड़ने रहैत छलनि। हुनकर कथा सभमे से सभ बात आयल अछि। नोकरीक कारणे जखन ओ शहरमे रह' लगला त' ओहिठामक प्रमुख हुनकर पत्नी ज्योत्सना जी छलथिन। प्रभासक कथामे गामक संयुक्त परिवार सँ शहरक एकल परिवार धरिक बहुतो बात-विचार आयल अछि। संयुक्त परिवार सँ एकल परिवार दिस जे संक्रमण भेल से प्रभासक कथाकार के मोन के बहुत दिन धरि छेकने रहलनि। एहि पर हुनक समकालीन कथाकर जीवनकान्त लिखलनि जे, 'प्रभासक कथामे कथानायक पिता आ पत्नीक बीच 'ओसिलेट' करैत अछि।' एहि बात के प्रभास जी संज्ञान ल' लेलनि। सचेत भेला आ जीवकान्तक टिप्पणी के कटबाक लेल ओ प्रसिद्ध कथा 'पिता' लिखलनि। ई बात, ई बोध अन्त धरि मुदा हुनकर पछोड़ नहि छोड़लकनि। अपन अंतिम कथा 'अष्टावक्रक शेषकथा'मे सेहो ओ 'पिता'मे कहल बात के पुष्ट केलनि। एहि प्रकारें नेनपनमे बिताओल गामक जीवन संग 'पिता' सेहो हुनकामे फ्रीज भ' गेलनि।

असलमे प्रभासजी जाहि समयमे कथा लिखब धुरझार रूपसँ शुरू केने रहथि अर्थात् १९६१ ई० के बाद सँ त' ओ समये छल एहन जे मैथिल युवक-युवती सभ के गाममे रहब सम्भव नहि रहलनि। त' ओ सभ पढ़ै लेल अथवा कमाइ लेल शहर दिस गेलाह। परिवारक भरण-पोषण लेल ई हुनक विवशता छल। से ओना बहुत पहिनें सँ होइत छल मुदा देशक स्वाधीनताक बाद क्रमशः अन्तर ई भेल जे 'स्त्री गाममे आ पति शहरमे' के स्थान पर 'पति-पत्नी दूनू शहरमे' रह' लागल। मैथिलकथामे पति-पत्नी सँ सम्बन्धित कथा सभमे संयुक्त परिवारमे पति-पत्नी, पत्नी गाममे आ पति शहरमे, शहरमे पति-पत्नीक संगे शहरमे रहलाक बाद बिन पढल-लिखल पत्नी आ पढ़ल-लिखल पति आ तकरबाद पति-पत्नी दुनू पढ़ल-लिखलक कथा लिखायल। जीवकान्त जत' गामक संयुक्त परिवार के स्त्री वा गाममे असगर रहैत पत्नीक कथा कहैत छथि, ओतहि प्रभास कुमार चौधरी संयुक्त परिवार आ शहरक एकल परिवारक बीच फसल पति-पत्नीके कथा कहलनि। गंगेश गुंजन पति-पत्नीक बीच राग भाव, कोमल उत्तेजनाक कथा कहलनि। राज मोहन झा हिनका तीन सँ फराक पढ़ल-लिखल नागरिक पति-पत्नीक बीच बनैत, बिगड़ैत सम्बन्धक कथा कहलनि अछि। पति-पत्नीक बीच तनाओ चारू कथाकारक कथामे देखाइत अछि। परन्तु चारू कथाकारक पति-पत्नीक बीच तनाओ के प्रकृत्तिमे भिन्नता अछि। मिथिलाक सन्दर्भमे ई कथा सभ गाम सँ नगर दिस बढ़ैत परिवारक, संयुक्त परिवार सँ एकल परिवार दिस बदलैत परिवारक आ पुरूषतंत्री सँ परिवारमे स्त्रीक अपन जगह बनेबाक आ ओहि कारणे होइत आन्तरिक संघर्षक कथा सेहो कहैत अछि। सामंती पारिवारिक ढाँचा सँ लोकतांत्रिक परिवार दिस उन्मुख होयब एहि कथा सभक केन्द्रीय विन्दु थिक।

प्रभास कुमार चौधरी पूर्व जमीन्दारक पौत्र रहथि। एक कवि-शिक्षकक पुत्र रहथि। बंगला साहित्य सँ नेनपनेमे परिचित भ' गेल रहथि। ह्रदयक उदारता हुनकामे मानवीयता आ मानवीय सम्बंधक उष्मा प्रदान केलकनि। ओ एहि उष्माक सृजनात्मक उपयोग केलनि। व्यक्ति रूपमे जरबो-पजरबो केलाह। सुख-दुख भोगलनि। मुदा ई उष्मा हुनकर हाथ सँ कहियो नहि छूटल। एही उष्मा सँ लोकके, पाठकके प्रकाश आ गरमी परसलनि। जे ठिठुरैत जड़कालामे सुरजक ताप ल' के आयल। सर्वहारा, दलित लेल हुनका ह्रदयमे ममता छलनि। सहानुभूति छलनि। सहानुभूतिएक कारण ओ ओहि वर्गक गतिविधि के सेहो अखियासैत रहलाह। समयक संग चलि रहल परिवर्त्तन ओ आन्तरिक बैचेनी के गमेत रहलाह। मुदा हुनक दृष्टि सामाजिक-सांस्कृतिक छलनि। ई अकारण नहि अछि जे दलित-शोषितक जाहि बिन्दु के-

आत्मसम्मान आ इज्जतिक विन्दु के-ओ अपन रचनाक विषय बनौलनि से एम्हर आर्थिक शोषण सँ आगू निकलि गेल अछि। सामाजिक न्यायक ई एक प्रमुख विन्दु मानल जाइए। ई फूट बात थिक जे एकर जड़िमे सेहो आर्थिक शोषणे अछि। अन्ततः बात त' ओतहि धरि जायत। एही संग प्रभासजी अपन कथा आ उपन्यासमे व्यक्ति के शाक्तिशाली होयबा सँ बेसी, नीक लोक हेबा पर जोर देलनि। एहन नीक लोक जे सहज त' होइए, दुखो- तकलीफ सहैए मुदा जे बात ओकरा अधलाह लगैत अछि ताहि सँ सहमत नहि होइए। कदाचित एहन जिद्दी, नीक-बेजाए बुझनिहार, समाज-बन्धमे आस्था रखनिहार चरित्र सभक सृजन केलनि प्रभास जी अपन रचना संसारमे। हुनक कथा-संसार एहने लोकक संसार आछि। हुनक दृष्टि दैहिक कुरूपता के भेदि क' व्यक्तिक आन्तरिक सुन्दरता के देखबाक आकांक्षी रहल।

सभ कियो मानैत छथि जे प्रभासजीक इच्छा-शक्ति बहुत मजगूत छलनि। ओ जे काज करबाक इच्छा केलनि, से काज सुनियोजित रूपमे, परिश्रम सँ क' कय छोड़लनि। आलोचक ओ हुनक घनिष्ठ मित्र मोहन भारद्वाज हुनक देहावसान पर लिखल संस्मरण 'अभिशप्त युगपुरूष'मे लिखलनि, 'हम सभ जनैत छी जे प्रभास कुमार चौधरीक इच्छा शक्ति केहेन दृढ़ छलनि। परिवारक अधिकांश लोकक अनिच्छाक बादो ओ स्वेच्छा सँ बियाह करबामे नहि हिचकिचयलाह। तहिना मिथिला वा बिहार सँ बाहरक पत्र- पत्रिकामे हिन्दी-रचनाक प्रकाशन सँ भेटैत यश-लाभ के छोड़ि क' मैथिल कथा-लेखन दिस प्रवृत्त भेलाह। ई सभ हिनक इच्छा- शक्तिएक नहि, निर्द्वन्द्व आत्म-ज्ञानक परिचायक थिक।' ओ अपन कथा-रचना लेल सेहो एहि दृढ़ इच्छा-शक्तिक उपयोग केलनि। प्रभासजी अपन कथा-लेखन सम्बन्धमे लिखने छथि जे, '**हम अपन लेखनमे सभ दिन किछु नव कहबाक चेष्टा करैत आयल छी-मध्यवर्गीय यथा-स्थिति सँ जनवादी यथार्थक चित्रणधरिक अपन कथा-यात्रामे......तँ, आशा करैत छी जे एहि सदीक अन्तिम दशकमे एहन, किछु लिखि सकब जे आइ धरि लिखि नहि सकलहुँ-नव सदीक आगमन सँ पूर्वक दशकक लोक ओ ओकर जिनगीक कथा।**' वस्तुतः अपन प्रकाशित अन्तिम कथा 'अष्टावक्रक शेष कथा'मे ओ एहि दिस प्रयत्नशीलो भेला मुदा अकस्मात फरवरी १९९८मे देहावसानक कारणे योजनानुसार हुनक शेष कथा शेष रहि गेल। जँ हुनकर देहावसन नहि होइतय त' ओ अपन अभिलाषाक अनुसार नव-नव कथा मैथिल के जरूर दितथि। तथापि जे कथा सभ ओ हमरा सभक लेल छोड़ि गेल छथि, ओहि सम्बन्धमे तारानन्द वियोगीक कथन समीचीन अछि, 'जेना बीज ओगरिक' राखैत अछि अपन भीतर विशाल वृक्ष, प्रभासजी अपना भीतर अपन बाबी, अपन पिता, अपन कका, अपन गाम, बाध-बोन, गाममे बीतल नेनपनक ओहि समय के ओगरि क' रखने छथि। हुनक व्यक्तित्व आ संस्कारक बुनाबटि केर परिप्रेक्ष्यमे जँ हम हुनक रचना सभक अध्ययन करैत छी तँ हुनक रचना सभ हमरा एक विराट ब्रह्माण्डीय घटना-सन लगैए। पिता हुनका जन्म देलथिन आ आब लगातार अपन पिताकेँ जन्म देने जा रहल छथि। बाबी आ कका हुनका रचलथिन आ आब ओ बाबी आ कका के रचि रहल छथि। अन्ततः प्रत्येक लेखक अपन आत्म केर सूक्ष्म उद्घाटन द्वारा इएह करबाक चेष्टा करैत अछि।'

वस्तुतः प्रभासजीक कथा आ उपन्यासमे 'सम्बन्ध' बहुत प्रमुखता सँ उभरि क' अबैत अछि। पिता-पुत्रक सम्बन्ध, जेठ भाइक छोट भाइ सभ संग सम्बन्ध, पति-पत्नी, माय-बेटा, प्रेमी-प्रेमिका, दोस, अपन वर्ग-समाज सँ इतर लोक सभक संग सम्बन्धक विभिन्न रंग ओ छटा देखबामे अबैत अछि। कोनो बुढ़िया वा मोदिआइन, झिल्ली-मुरही बाली स्नेहिल स्त्री, गामक बोन-झांखुर, स्कूल, बुढ़िया सभ, स्नेह करै बाली दाइ, कतेक रास चम्पा, भीरू ओ बिढ़नी सभमे बालक सँ जुआन प्रभास टुकुर-टुकुर तकैत

भेटैत छैक। बदलैत समयमे निखालिस अपने सुख भोग' बला व्यक्ति के प्रभास जी प्रश्नांकित करैत चलैत छथि। संगहि एहन स्त्री चरित्र सभक रचना करैत छथि जे कुण्ठा रहित ओ मोहक व्यक्तित्व वाली अछि।

प्रभासजीक व्यक्ति आ रचना के एक संग देखैत, हमरा लगैत अछि जे अपना सँ, अपन आत्मकेन्द्रित जीवन सँ बाहर आबि क' व्यापक मानव समाजसँ जोड़ि क' अपनो के देखबाक कला ओ हमरा सभ के सिखा गेल छथि। एहनामे ओ व्यष्टि सँ समष्टि दिस कतेक बढ़ि सकला अपना रचनामे से देखब छोड़ि क' ई देखब जरूरी अछि जे व्यक्ति कतेक व्यापक भ' सकैत अछि। एहि लेल जे हृदयक विशालता चाही से प्रभास जीमे छलनि। ओ आब नहि छथि मुदा हम सभ एखनो हुनकासँ जुड़ल अनुभव करैत छी। लगैत रहैत अछि जे ओ एखनो कतहु बैसल मैथिल साहित्यक काज के आर आगू बढ़ेबाक लेल टोकारा दैत छथि।

मो० नं०. ८९८६२६९००१



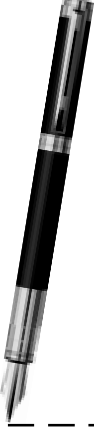
गीत

- यात्री

भगवान! हमर ई मिथिला सुख शान्ति केर घर हो
आदर्श भै सभक ई इतिहासमे अमर हो
जहि ठाम जाइ हम सब सिंहे तहाँ कहाबी
दुर्दान्त होई सभठां केवल अहाँक डर हो
जग भरि सुनी नचारी तिरहुति महेशबानी
सभ केर कण्ठपथमे मृदु मैथिलीक स्वर हो
अत्यन्त शक्तिशाली जे द्वीप अछि तहू पर
एहि देश केर भाषा ओ भेषहुक असर हो
पसरए एतय यथोचित अभिनव कला- कुशलता
प्रतियोगिताक रणमे ई प्रान्त अग्रसर हो
अन्तिम विनय दयालो! बस आब एकटा, जे-
ई पाग विश्व भरिमे सभकेर माथ पर हो।

- मैथिल सन्देश / १९३३

सम्बन्ध आ विच्छदेक कथाकार लिली रे



अपन सस्मरण 'समयकेँ धङैत'मे लिली रे लिखने छथि जे ओ बारह वर्षक अवस्थामे कथा लिखब आरम्भ कएने छलीह। पितिआइनि आ बहिनिसब श्रोता / पाठक रहैत छलथिन। अखबारक संग हिन्दी पत्रिका 'माया' आ 'मनोहर कहानी' घरमे अबैत छलनि। सुरुचिपूर्वक पढ़ैत छलीह। प्रकाशनक इच्छासँ प्रेरित भए 'माया'मे एकटा कहानी पठा देलथिन। पहिने स्वीकृतिक सूचना अएलनि।

लेखकीय प्रति डाकसँ अएलैक तँ पढ़बा लेल उपरा–उपरी होअए लागल। जेठ पितिआनि पुछलथिन, ''हइ ! ककरा पर लिखलहक अछि? सत्ते–सत्ते कहि दै, के थिका?'' लिली रेक उत्तर छलनि, ''ई सबटा हमर कल्पना थिक।'' तीन वर्षमे लिली रेक तीन टा कथा 'माया' मे छपलनि। प्रत्येक बेर पन्द्रह टाका पारिश्रमिक सेहो भेटलनि। जखन 'वैदेही' नियमित रूपसँ आबय लगलनि तँ 'कल्पनासँ लिखैत छी' कहनिहारि लिली रे 'कल्पनाशरण' क नामसँ कथा पठौलनि। 'रोगिणी' वैदेही, (जुलाई १९५५ ई.) मे छपल। एकठाम 'चनरी' (वैदेही, १९५२ ई.)क उल्लेख भेटल अछि। कोन नामसँ छपल छल, तकर चर्च नहि अछि। कथा सेहो अनुसन्धान सापेक्ष अछि। ताधरि कल्पनाशरणक नामसँ छपल 'रोगिणी'केँ पहिल प्रकाशित कथा मानब, उचित लगैत अछि। पहिल प्रकाशित कथा 'चनरी' हो वा 'रोगिणी', ई निश्चय जे बजारक माया लिली रेकेँ लटपटा नहि सकल। तात्कालिक अर्थलाभ, मंचलुब्धता एवं प्रचार–लोभसँ निर्लिप्त रहि लिली रे हिन्दीमे लिखब सदाक लेल त्यागि देलनि। अपन सर्जनात्मक प्रतिभाक अभिव्यक्तिक एकमात्र माध्यम रखलनि मैथिली। एकनिष्ठ भावसँ मैथिली टामे रचना करैत रहलीह।

लिली रे मैथिलीक एहन रचनाकार छथि, जिनकर साहित्यक अनुवाद अन्य भाषा सबमे प्रचुर मात्रामे भेल अछि। एहिसँ ओ मैथिलीक एक सुच्चा रचनाकारक रूपमे ख्याति अर्जित कएलनि अछि। लिली रेक भाषानिष्ठासँ मैथिली भाषा एवं साहित्यकेँ व्याप्ति एवं प्रतिष्ठा भेटलैक अछि। सम्प्रति बाह्य आ आन्तरिक चाप अपन बारहो कला एवं बिखाह–नोखाह चाङुरक संग मैथिली भाषापर निरन्तर प्रहार कए रहल अछि। बजारक प्रलोभक–अपियारीमे कतेको मैथिलीक लेखक कूदि रहल छथि, एवं मंचलोभ मैथिलीनिष्ठ होएबासँ बरजि रहल छनि, लिली रे मैथिली निष्ठा मैथिलीक सरंक्षणक लेल काम्य आ अनुकरणीय अछि, आदर्श एवं सर्वथा श्लाघ्य अछि।



डॉ. रमानन्द झा 'रमण'

लिली रे गहन संवदेनशीलता एवं सूक्ष्म पर्यवेक्षण क्षमताक लेखक छथि। हिनक अनुभवक क्षेत्र अत्यन्त व्यापक अछि। ओ कोनो एक भौगोलिक वा भाषा–क्षेत्र धरि सीमित नहि छैक। उद्योगीकरण आ शहरीकरणसँ लोककेँ लागल पड़ैनी, पुरान कपड़ा जकाँ खुस–

खुस फटैत सामाजिक-पारिवारिक सम्बन्ध, आ शिक्षाक विकासक संग युग-युगसँ पीड़ित महिला समाजमे स्वतन्त्र व्यक्तित्व स्थापनाक चेतनाक प्रतिफल की-की भेलैक अछि, पूर्ण संवेदनशीलताक संग हिनक कथामे सर्वत्र अभिव्यंजित आ सहज-सुलभ अछि।

लिली रेक कथाक विवेचन अनेक दृष्टिसँ सम्भव अछि। मुदा, जाहि कोनो दृष्टिसँ आ मानदण्डपर हिनक कथाक विश्लेषण कएल जाए, सर्वत्र लेखकीय गम्भीरताक दर्शन होइते टा छैक। शिक्षाक विकास, पड़ैनी, प्रवासन एवं आर्थिक आत्मनिर्भरतासँ सामाजिक एवं पारिवारिक जीवन सबसँ बेसी प्रभावित भेल अछि।

ओहि प्रभावमे पति-पत्नी सम्बन्ध शीर्षपर अछि। पहिने सामाजिक-पारिवारिक सम्बन्ध सहनशीलता, त्याग एवं समष्टि भावनापर केन्द्रित छल। बजार एवं पाश्चात्य शिक्षाक प्रभावसँ ओहि मूल्यक क्षरण भेल अछि। प्रमुख भए गेल अछि व्यष्टि-भावना। आर्थिक आत्मनिर्भरतासँ पति-पत्नीमे पृथक आ स्वतन्त्र व्यक्तित्वक लेल संषर्ष चरमपर अछि। सघंर्षक परिणति होइत छैक विच्छदे । एहि विच्छेदसँ सबसँ बेसी प्रभावित होइत छैक हुनक सन्तान। लिली रे आधुनिक युगक एहि सामाजिक समस्यासँ पूर्णतः अवगत छथि।

'रोगिणी'क बालविधवा आत्महत्या कए सकैत छलि, मुदा ओ अपरिचित स्थान जाए पुत्रकेँ जन्म दैत अछि। माङि-चाङि आ नोकरी कए बेटाकेँ पोसैत अछि। अन्तिम समयधरि ई रहस्य बनल रहैछ जे भोलाक जैविक पिता के छथिन। अविवाहित बगरा (सम्बन्ध) सेहो अपन बेटीक जैविक पिताक नाम नहि खोलैत अछि। पालैत-पोसैत अछि। पढबैत अछि। अन्तर छैक अघोषित जैविक पिताक चरित्रमे। 'रोगिणी'क डाक्टर चीन्हि जाइत छथिन आ 'सम्बन्ध'क गुप्ता जी चिन्हिओकेँ अनचिन्हार छथि। पुरामूल्यक विरोध आ नारी-स्वातन्त्र्यक प्रति सचेतन रहब - लिली रेक प्रथमहि कथामे लेखकीय दृष्टिक परिचय होइत अछि।

समाजशास्त्री लोकनि सम्बन्ध-विच्छेदक मूल कारण स्वतन्त्र व्यक्तित्व- स्थापनाक आकांक्षाजन्य व्यक्तित्वक संघर्ष मानैत छथि। एकर अनेकहु तात्कालिक एवं प्रेरक कारण अछि। ओहि कारण सभमे प्रमुख अछि - १. व्यक्तित्वमे संघर्ष, स्वतन्त्र रहबाक प्रबल आकांक्षा, २. विवाहेतर व्यक्तिमे आकर्षण, ३. नपुंसकता/सन्तानोत्पत्तिमे अक्षम, ४. शारीरिक असमर्थता, ५. दैहिक सम्पर्कमे अरुचि/अनाकर्षण, ६. बेढ़ब एवं अनाकर्षक काया एवं तकर अपरोजक/अलूरि जकाँ अनुरक्षण, ७. अनवरत व्यंग्यात्मक प्रहार, ८. परस्त्री वा परपुरुषसँ अनवरत तुलना, ९. सदिखन अनापेक्षित परामर्श, १०. मद्यपान, ११. स्वास्थ्यमे निरन्तर ह्रास, १२. मानसिक एव ं शारीरिक यातना, १३. आश्वासन एवं आकांक्षामे संघर्ष, एवं १४.सम्बन्धी/मित्रक प्रति सदिखन अवहेलना/उपेक्षाभावक प्रदर्शन, आदि। सभ-सम्बन्ध-विच्छेदमे सभ कारण रहबे करए से आवश्यक नहि छैक। ओहिना शहर आ ग्रामीण क्षेत्रक सम्बन्ध-विच्छेदक कारण एकसमानहि हो, सेहो आवश्यक नहि अछि। लिली रे शिक्षित-अशिक्षित आ शहरी-ग्रामीण - दूनू क्षेत्रक पति-पत्नी वा प्रेमी-प्रेमिकाक सम्बन्ध-विच्छेद एवं ओहिसँ उत्पन्न मानवीय समस्याक कथा लिखल अछि। एहि दृष्टिसँ 'अबूझ', 'जिद', 'बाइस्कोप', 'विशाखन' आदि अत्यन्त महत्त्वपूर्ण कथा अछि।

मंगल (अबूझ) अपन जैविक विवशताक बाट निकालि लैत अछि। गाममे रहैत युवती पत्नी बुलन्तीक दैहिक आवश्यकताक पूर्ति ओ मासेमास पाइ पठबैत रहब बुझैत अछि। बुलन्ती बेटाकेँ पितामही लग छोड़ि दोसर आ फेर तेसर सम्बन्ध कए लैत अछि। सिस्टर रानी सुब्बाकेँ प्रेमक पहिल अनुभूति प्रदीप वर्मामे भेलनि।

होस्टलमे रहि पढ़ैत दू बालक एवं आजीविकापन्न पति एवं मिलिटरी अस्पतालक अपन स्थायी नोकरीकेँ छोड़ि चुपचाप प्रेमीक संग बिदा भए जाइत छथि। सम्बन्ध-

विच्छदेक कारण अछि, हुनकहि घरमे काज करैत भारती। दुर्गा (अबूझ) क पहिल सम्बन्ध-विच्छेदक कारण सन्तान नहि होएब थिकैक। दवेव्रत एवं देवकी (जिद)क विवाह घरकथा एवं सहमतिसँ भेल छनि। देखल-सुनल छनि। किन्तु देवकीक असुघरता, अपटुता एवं स्थूलकाया देवव्रतक वितृष्णाक कारण अछि। रुचि भिन्नता सेहो छैक। डा. मधुकरपर देवकीक लटुआएब सम्बन्ध-विच्छेदक तात्कालिक कारण होइत अछि। किन्तु स्वाद-परिवर्तनक सीमहि धरि देवकी डा. देवव्रत केँ स्वीकार छथिन। देवकीक स्वाभिमान जगैत छैक। ओ पूर्णत: आत्मनिर्भर भए जाइत अछि। अमित आ मधु (विशाखन) दूनू नीक नोकरीमे छथि। प्रेम-विवाह करैत छथि। मधु जल्दी सन्तान नहि चाहैत छथि। भए जाइत छनि तँ तकर सबटा दोष अमितकेँ दैत छथिन। एहिठामसँ आरम्भ होइत अछि व्यक्तित्वक संघर्ष; बात-बातपर उलहन-उपराग; उभयपक्षक माए-बापक प्रति उपेक्षा आ अवहलेनात्मक आलापक वर्षा। क्रमश: पारिवारिक कलह एवं दूरत्वक परिणाम होइत छैक सम्बन्ध-विच्छेद। पत्नी जकाँ रहैत दुर्गा (अबूझ) केँ आत्मसम्मानपर किंचितो आघात स्वीकार नहि छैक। समस्त माया-मोह त्यागि बिदा भए जाइत अछि। स्पष्टत: शुचिता वा पतिव्रताक प्रश्न नहि अछि, आत्मसम्मानक प्रश्न सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण अछि। आत्मसम्मान एवं सन्तानक प्रति ममत्वमे सेहो संघर्ष छैक। बुलन्ती पहिल घरक अपन बेटाकेँ अबैत रहबा लेल कहैत अछि। गौतम बापसँ चोराकेँ माइक लग जाइत-रहैत अछि। दुर्गाकेँ सन्तान नहि भेलैक, ओ बुलन्ती-मंगलक बेटा, गौतम केँ अपन बेटा जकाँ पालैत-पोसैत अछि। पढ़बैत अछि। पुतहु अनबैत अछि। बुलन्तीक लेल सनेस पठबैत अछि। देवकी (जिद)मेगजिनमे अपन बेटा आ बेटीक छपल फोटो देखि आनन्दित होइत अछि। कचोट होइत छैक। अल्पायु पुत्रक सून कोठली एवं सासुक मृत्युक समाचार मधुकेँ मर्माहत कए दैत छनि। अपन पहिल परिवारकेँ देखबाक तीव्र इच्छासँ मर्माहत सिस्टर रानी सुब्बा प्रदीप वर्मासँ आश्वासन चाहैत छथि जे दीपा (बेटी)के ँनहि झीकथि (बाइस्कोप)। नारी स्वाभिमान, स्वतन्त्र व्यक्तित्वक स्थापना एवं नारी हृदयक गहन संवेदनशीलताक मार्मिक संघर्ष - लिली रेक कथा-साहित्यक अन्यतम विशेषता थिकनि।

यद्यपि, लिली रेक कथाक पात्र सर्वदेशीय अछि, कथाक स्थानीयता मैथिली भाषी क्षेत्र नहि अछि, किन्तु अभिव्यक्ति सर्वांशत: मैथिलीक छनि, ने वाक्य-गठनपर आ ने प्रयुक्त शब्द-सम्पदा पर बजारक भाषाक प्रभाव देखबामे आओत। जखन कि लेखिका व्यावहारिक जीवनमे अनेक भाषाक प्रयोग करैत छथि, अनेक भाषाक साहित्य निरन्तर पढैत् छथि, आ विभिन्न भाषा-भाषी एवं सांस्कृतिक क्षेत्रमे जीवन व्यतीत करैत अएलीह अछि। तथापि, कथाक भाषामे मैथिलीक महमहीकेँ सुरक्षित राखब, भाषापर असामान्य अधिकार एवं भाषाक विशेषताक गम्भीर परिचयक द्योतक थिक। कहि सकैत छी, लिली रे अपन व्यापक एवं संघनित अनुभव केँ विलक्षण भाषा-शैलीमे अद्भुत कलात्मकताक संग मनोयागपूर्वक सँठलनि आ परसलनि अछि।

मो. ९३३४३३५४८२

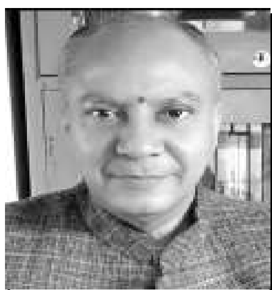


गामक नामकरण : एक परिशीलन



ई तँ हमरा लोकनि जनिते छी जे, आइ भने छोट-पैघ अनेकानेक गाम देखबामे अबैत हो, मुदा पहिने गामक संख्या एतेक नहि रहैक। जँ जँ पाछू जाएब, गाम कम भेटत। जेना जेना जनसंख्या बृद्धि होइत गेल, गाम वा नगर बढ़ैत गेल। मुदा गामक नामकरण कोना भेलैक तकर किछु विचार एतए हम करय चाहब।

प्राचीन कालमे जहिया राजा महाराज लोकनिक युग छल, अथवा ई कही जे महाभारत कालमे अथवा किछु परवर्ती कालधरि, हरेक राज्यमे अपन-अपन सैन्य व्यवस्था छलैक। इतिहास साक्षी अछि जे प्रत्येक सेनामे ४०० हाथी, ५००रथ, १५०० घोड़ा आ २५०० पदाति (पैरहि चलयवला) अवश्य होइत छल। जे छोट राजा वा सामन्त होइत छलाह, तनिकहुँ लग किछु -ने -किछु सेना अवश्य रहैत छलनि। महाभारत (उद्योग पर्व-१५५/३८-३९) क मानी तँ पदाति सेनामे क्रमशः 'पत्ति', 'गुल्म' आ 'गण' होइत छलैक। जतय ५५ व्यक्ति 'पत्ति' होइत छल, ओतहि तीन पत्तिकेँ मिलाऽक' एक 'गुल्म' बनैत छल तथा तीन गुल्मकेँ लएकेँ एक 'गण' होइत छल। आन नियम तँ एक्के रङ अछि, मुदा शुक्रनीतिमे 'पत्ति' क लक्षण किछु भिन्न भेटैछ। एकर अनुसारेँ (शुक्रनीति-२/१४०) पाँचे-छओ सैनिकक टुकड़ी 'पत्ति' कहबैत अछि। आजुक भाँति पहिनहुँ छावनी छलैक, किन्तु छोट-पैघ कऽकेँ अलग-अलग, कतहु पत्ति तँ कतहु गुल्म आ कतहु गण। गण, जेना कहल अछि नओ पत्तिक अर्थात् तीन गुल्मक होइत छल, आ गणक संख्या कम होइत रहैक। जाहि-जाहि स्थानमे पत्ति वा गुल्म रहैत छल, तकरा बादमे ओही आधार पर नाम देल जाइत छलैक। अर्थात् पत्तिक स्थानकेँ पत्ति वा पत्ती ओ गुल्मक स्थानकेँ गुल्म। पछाति इएह पत्ती 'पट्टी'मे परिवर्तित भए गेल अथवा एहि शब्दे व्यवहृत होमय लागल। इएह सभ थिक आजुक शुगापट्टी, कलापट्टी, जयदेवपट्टी, लालापट्टी, किसनी पट्टी, अललपट्टी, बेनीपट्टी, लालमणिपट्टी, मनहरपट्टी, कामेपट्टी, सीतापट्टी आदि। पट्टीक संख्या बेशी रहने उदाहरण बेशी भेटैछ। एहिना जतए-जतए 'गुल्म' छल से आई गुल्मा, गुल्मरिया, गुलमन्ती, गुलमिया आदिक नाम सँ जानल जाइत अछि।



डॉ. यू.एन. झा 'अशोक'

सुनल थिक जे एक गुल्मक प्रधान रहथि बल्लोझा। किन्तु हुनक असावधानीवश अथवा आने कोनो कारणेँ ओहि गुल्ममे चोरी भए गेल। संयोगसँ चोर पकड़ायल आ ओकरा राजाक सम्मुख आनल गेल। राजा निर्णय देलनि जे 'गुल्मा-चोर बल्लोझाक कपार'। अभिप्राय ई जे एकर निर्णय हम नहि बल्लोझा करताह। अस्तु।

प्रत्येक राज्य ओ राजाक लेल सेनाक होएब नितान्त आवश्यक मानल गेल अछि, ई तँ सभ जनिते छी, तेँ राजाकेँ 'चारचक्षुषाः' कहलो गेल अछि। 'चार' मात्र चाकरे नहि

थिक, आजुक CID, CBI एवं सैन्यकेँ सेहो कहल जाइत छलैक, अस्तु। मुदा ई बड़ कम लोक जनैत होएताह जे पहिने सेना कतोक प्रकार होइत छल। जेना आइ सेनाक जल–थल–नभ रूपमे पहिनें तीन भेद देखल जाइत अछि, ततः पर BSF, CISF कमाण्डो आदि उपभेदेँ कतोक भेद देखबामे अबैछ तहिना प्राचीन कालमे सेनाकेँ केयो चारि तँ केयो छओ भेदक स्वीकार करैत छथि। महाभारतक अनुसारेँ तँ एकर आठ अंग कहल गेल अछि–हस्ती, अश्वी, रथी, पदाति, बिष्टि, नाव, चर एवं देशिक। आने देशक भाँति मिथिलहुँक राजाकेँ एहि सभ–प्रकारक सैन्य छलनि, जकर रहबाक स्थानकेँ सैन्य–भेदहिक नामपर नामकरण कएल गेल छल। यथा–हथौड़ी, हतगढ़ा, असबैया, रथनाहा, रोथान, रथीटोल, रथवाड़ा (रतवाड़ा), दाति (दाती), बिष्टुपर, बिष्टौल, नवेल, नवहथ, चरमा, चमरपट्टी (चरमापट्टी), दिशौल, दशका आदि। ई सभ आधुनिक ग्राम ओही प्राचीन इतिवृत्तकेँ देखा रहल अछि। स्मरणीय थिक जे जेना पहिनें सेनामे पथप्रदर्शककेँ 'देशिक' कहल जाइत छलैक, तहिना विशेष–आयुध–सञ्चालन–दक्षव्यक्तिकेँ 'विष्टि' कहल जाइत छलैक, से इतिहाससिद्ध प्रसिद्ध कथा थिक।

गामक नामकरण मात्र सैन्य–छाबनियैक नाम पर नहि, अपितु आयुधहुँक नामपर, अस्त्र–शस्त्रहुँक नामपर राखल जाइत छल। 'नीतिप्रकाशिका'मे बहुतो रास आयुधक वर्णन भेल अछि। (अध्याय दूसँ पाँच धरि), जकरा चारि श्रेणीमे ओतए विभाजित कएल गेल छैक–मुक्त, अमुक्त, मुक्तामुक्ता आ मन्त्रमुक्त। एहि सभ आयुधक की परिचय वा लक्षण–से फरिछाएब हमर प्रबन्धक उद्देश्य नहि थिक आ से जँ करय लागब तँ प्रबन्ध विस्तारहुँक भय, तेँ तकरा छोड़ि देल अछि। किन्तु ई कहब आवश्यक जे उपर्युक्त चारू कोटिक आयुध एक ठाम नहि रहैत छल। आयुधक सञ्चालको अपन–अपन आयुध–क्षेत्रहिमे रहैत छलाह। आवश्यकता पड़लापर ओ लोकनि अपन–अपन अस्त्र–शस्त्र साथ लए निर्धारित स्थान पर जाइत छलाह। जे हो, मुदा स्मर्तव्य थिक जे आयुध जतए रहैत छल, तकरा, अर्थात् ओहि स्थानकेँ ओही आयुधक आधार पर नामकरण होइत रहैक। जेना कि 'मुक्तायुधपुर'–एहिमे सँ 'युध' पद आई लुप्तभए आकार मुक्त पदक संग मीलि संधि संयोगे 'मुक्तापुर' भए भेल अछि। हमरा जनैत 'मुक्ताम' (मोताम) वा 'मुक्तामा' क सम्बन्ध सेहो एही मुक्तायुध सँ रहल होएत।

धर्मशास्त्र, अर्थशास्त्र ओ शिलालेख सभमे भाँति–भाँतिक 'कर' क उल्लेख भेटैत अछि। एहिमे 'कर' लेनिहार, देनिहारक पृथक–पृथक स्थान छलैक। किछु गाम एहनो छल, जाहिपर राजाद्वारा विशेष कर लगाओल गेल रहैक। किछु गाम कर मुक्तो छल, कोनो ने कोनो कारणेँ ओहि गामक लोकसँ राजा कर नहि लैत रहथि। एही प्रकारक गाममे अकरिया, अकौड़, अकड़ी, अकरमपुर (मकरमपुर) आदि थिक। मुदा जाहि गाम पर कर लागल छल अथवा जाहि गामक वासी कर दैत छलाह अथवा जाहि गाममे कर असूलनिहार राजाक प्रतिनिधि रहैत छलाह, ताहि गामक संख्या आपेक्षिक अधिक छल। एहि कोटिक गाममे पुरान गामसभ अबैत छल, जकर नामकरण 'कर' क आधारपर नहि भेल रहैक। परन्तु नव–नव गाम जे बसल वा जे बसले छल, तकर नामकरण एही 'कर' क आधार पर भेल। यथा–करड़िया, करहारा, करिहार, करूआरि, करैया, केरमा आदि। राजाकेँ दातत्व 'कर'मेसँ एक प्रकारक कर छल 'बलि' ऋग्वेदमे एही कारणेँ साधारण व्यक्तिक लेल 'बलिहत' शब्दक प्रयोग भेल अछि (ऋ ७/६/५; १०/१७ ३/६) जकर अर्थ होइत अछि राजाक लेल बलि अननिहार। तैतरीय ब्राह्मणहुँमे हरन्त्यस्मै विशो बलिम्' (तै. ब्रा.–२/७/१८/३) केर प्रयोग देखल जाइत अछि। ऐतरेय ब्राह्मणक अनुसार (ऐ.ब्रा.३५/०३) 'बलिकृत' वैश्यमात्रे होइत छलाह, जे बलि दैत छलाह। बलि, सामान्यतः व्यापार किंवा आयात–निर्यातहिंपर लगैत छल। ब्राह्मण वा क्षत्रिय विशेष परिस्थितिकेँ

छोड़ि कर-मुक्त होइत रहथि। अतएव जाहि गामक वासीकेँ बलि दातव्य होइत छलनि, तकर नामकरण एही बलिक कारणेँ भेल होएत। यथा-बलिगाँव, बाली, बलाल, बलिया, बलियाही, बलिनगर, बल्लीपुर आदि। किन्तु किछु एहनो लोक सभ रहथि जे राज-दरबारमे अथवा प्रतिनिधि लग जाए स्वयं बलि जमा नहि करैत रहथि। ई लोकनि 'हस्तबलि' क माध्यमे अपन बलि (कर) राजकोशमे जमा करैत छलाह। एहि हस्तबलिक नियुक्ति स्वयं राजा करैत छलाह। सम्भव थिक जे ई 'हस्तबलि' जाहि गाममे रहैत छलाह, तकरा हुनके नाम वा पदनामपर जानल जाय लागल। जेना आजुक 'हतबलिया' ओ 'हैठी-बाली' ओकरे आभास दिया रहल अछि।

नगर, पुर, पुरी, पत्तनक, अर्थमे 'हट्ट' शब्दहुँक प्रयोग देखल जाइत अछि। 'राजनीतिप्रकाश'मे देवीपुराणक वाक्य उधृत भेल अछि जे एकर प्रमाण थिक। श्रीधरो अपन भागवत-व्याख्यानमे कहैत छथि-'ग्रामा हट्टादिशून्या, पुरो हट्टादिमत्यः, ता एव महत्यः पत्तनानि....' (भाग.भाष्य-४/१८/३१)। कदाचित् एही हट्टक कारणेँ मिथिलहुँमे गामक नामकरण कएल गेल हो। यथा-हटनी, हटरिया, हाटी, सिरपुर-हाटी, बगड़हट्टी आदि।

ऋग्वेदमे 'ग्राम' शब्दक प्रयोग बहुशः भेल अछि, यथा-'ग्रामजितो नरः' (ऋ ५/५४/८) 'यथा शमसद् द्विपदे चतुष्पदे विश्वं पुष्टं ग्रामे अस्मिन्नातुरम्' (ऋ. १/११४/१) आदि (ऋ १०/६२/११,ऋ.१०/१०/५)। तैत्रिरीय संहितहुँमे विद्वान ब्राह्मणग्रामणी' (तै.सं. २/५/४/४) आदि कहल गेल अछि। एतए स्मर्त्तव्य थिक जे 'ग्राम' शब्दक अर्थ गामे नहि छल, अपितु नगर सेहो होइत छल। ओना तँ नगर, पुर, पुरा, पत्तन, गाँव आदि शब्द कोनो गामक नाममे रहिते अछि, किन्तु एतए पर्यायवाची नहि बूझि नगरक अर्थ शहर वा छोट-मोट शहर बुझबाक थिक। ग्राम-प्रमुख कैँ 'ग्रामणी' वा 'ग्रामिक'(मनु ७/११५-१६), ग्रामाधिपति (कौटिल्य ३/१०), ग्रामकूट (एपि. इण्डिका, जिल्द-७, पृ.३९, १८३, जिल्द.११, पृ.३०४, ३१०) आ पट्टकिल (इण्डि एण्टीक्वेरी, जिल्द-६, पृ.५१,५३ जिल्द-१८, पृ.३२२) कहल जाइत छलैक। इएह शब्द आइ मुखिया आ मेयर दुहू कहबैछ। पट्टीयुक्त सन्तान जाहि-जाहि गाममे बसैत रहथि, ताहू गामक संग 'पट्टी' जुड़ैत छल। तेँ स्मरणीय थिक जे पट्टीयुत गामक नामकरण मात्र पत्ति, पत्तीक कारणहिं नहि, प्रत्युत पट्टकिलक हेतुञे सेहो भेल अछि।

शुक्रनीतिक अनुसारेँ एक 'ग्राम' विस्तारमे एक कोशक होइत छल (शु.नी. १/१९३)। गामक आधा भाग 'पल्ली' कहबैत छल, जकर उदाहरणमे 'सरिसब' गामक आर्द्धभाग 'पाही' कैँ लेल जा सकैछ, जे किछु गोटेक मतमे पल्लीक अपभ्रंशो थिक। परन्तु एक अन्य अवधारणा वा प्राकृत वैयाकरणक अनुसारेँ गामक अर्द्धभाग 'पल्ली' क उदाहरण जगदलपल्ली, मलकानपल्ली, रूपाली, पाली आदि तँ भए सकैछ परन्तु 'पाही' नहि।

हेमाद्रि अपन दानखण्डमे मार्कण्डेयपुराणकेँ उधृत करैत पुर, खेट, खर्वट एवं ग्रामक परिभाषा प्रस्तुत कएने छथि। जखनि कि हिनकहुँसँ पूर्व महर्षि याज्ञवल्क्यक अनुसार चारागाहक विस्तारकेँ ध्यानमे राखि ग्राम, खर्वट, नगर सभ एक्के अर्थकेँ द्योतित करैत अछि, मात्र एकर क्षेत्रफल ओ नागरिकक स्तरमे भेद पाओल जाइत अछि। एहीसभक कारणेँ प्रायः संस्कृतक अलङ्कारशास्त्री लोकनि 'ग्राम्य दोष' देखओने होएताह। हमरा जनैत एही सभमेसँ कोनो 'खर्वट' पछाति 'खर्रख' (खड़रख) भए गेल होयत। हमर एक मित्र एक समय कहने रहथि जे पहिनें खढ़क बोन छल, जकरा काटि लोक बसल तेँ खढ़रख आ कालान्तरमे खड़रख भए गेल। जेना सर्षपसँ सरिसबक कल्पना तहिना खढ़सँ खढरखक, जे हो हमरा एहिमे किछु हास्य-उपहास्यहुँक पुट बुझना जाइछ। जे गाम वा भूमि खढ़केँ रखलक से भेल खढरख आ बादमे खड़रख।

एहिना चोर चपाटीसँ रक्षा करब, चोर-डाकूकेँ सजा दिआएब 'चौरोद्धरणिक' वा 'कोट्टपाल' (कोतवाल) क कार्य

होइत छल (एपि. इंडिका जिल्द.११,१-८३, इण्डि.एण्टी. जिल्द १५ पृ.३०५)। जखनि कि कौटिल्यक मतेँ ई कार्य 'चौररज्जुक' करैत छलाह (कौ.अ. ४/१३)। ई अधिकारी चोरीक क्षतिपूर्तियो करबैत रहथि। सम्भव थिक क्षेत्रविशेषक 'चौररज्जुक' जतय रहैत छलाह, सएह कालान्तरमे रजौड़, रज्जुका (रजुका), रजुआही, चौड़जबा आदि भए गेल हो।

किछु गाम जातिक नामपर सेहो बसल वा बसाओल गेल, जाहिमे बभनियाम, सिंहवार, तेलियाहा, तेलियाही, तेलगामा, भौर, नौआ-बाखरि, कैथवार, कैथिनियाँ, एकम्मा, बरही, राजधाम, ठगमारा, कर्णपुर, सिसवारि, आदि केँ लेल जा सकैछ। 'भर' जातिक क्षत्रियबहुल गाम 'भौर' छल जे बादमे खण्डवला-कुलक राजा लोकनिक गाम भेने 'राजग्राम' सेहो कहओलक। सिसवा-क्षत्रिय, जकर शाखा सिसोदिया थिक, तकरा भगाए, जतय गाम वा वस्ती बसल, सैह भेल सिसवारि (सिसवा-अरि)। एहि तरहेँ व्यक्तिक नामपर सेहो कतोक गामक नामकरण भेल अछि जेना सीताजीक नामपर सीतामढ़ी, सीतापट्टी; गौरीक नामपर गौरिया, उमाक नामपर उमगाँव, मधुसिंहक नामपर मधुबनी; धर्मनाथ ठाकुरक नाम पर धर्मपुर; कल्याण झाक नाम पर कल्याणपुर; माखनसिंहक नामपर माखनपुर; राजा कंसनारायणक नाम पर कंसी (सिमरी); एक अज्ञात शुक्लाक नामपर शुक्लाराही आदि।

एतय इहो स्मर्त्तव्य थिक जे एक्के नामक अनेको गाम अनेको ठाम छैक, ताहि सभक नामकरणक पाछू कोनो एक कारण वा इतिहास नहि रहलैक अछि। जेना लोहनारोडक सन्निकट धर्मपुर मात्र धर्मनाथ ठाकुर बसओलन्हि, जखनि कि आनो ठाम धर्मपुर पाओल जाइत अछि। एहिना सरिसब-पाहीक निकटक 'कल्याणपुर' मात्र कल्याण झाक द्वारा बसाओल ग्राम अछि, आन नहि। बक्सर जिलामे स्थित -'अहरौली' केँ अहल्याक नामपर स्थापित कहल जाइत अछि, जखनि कि इएह कारण 'अहियारी' क संग सेहो देल जाइत रहल अछि।

मिथिलाक किछु एहनो गाम अछि, जकर नामकरणक पाछू एक इतिहास रहलैक अछि, भारतीय राजनीतिक वा सांस्कृतिक इतिहास। जेना विराटपुर, विराटनगर, वनाटपुर, वैराटीक, नामकरणक पाछाँ मिथिलाहिक एक भागक अर्थात् मत्सदेशक राजा विराटक सम्बन्ध जुड़ल छनि, जनिक दरबारमे पाण्डव लोकनि अपन अज्ञातवासक अवधि बिताओने रहथि। मिथिलाक तत्कालीन जनपद सभमे विदेह, वैशाली, मत्सय आदि देश प्रमुख छल। जखनि कि पाण्डवहिंक बसाओल वर्तमान 'पण्डौल' अछि जे पाण्डवालयक अप्रभंश थिक। परम्परया ई श्रुत थिक जे अज्ञात वास हेतु जएबाकाल पाण्डव लोकनि एतहुँ रात्रि-विश्राम कएने रहथि। बेनीपट्टी थानामध्य जे वनाटपुर गाम अछि तकर सुनैत छी प्राचीन नाम विराटपुरे रहैक। एकर निकटहि अछि 'उत्तरा' नामक गाम, जे विराटराजक पुत्री ओ अभिमन्युक पत्नीक नामपर बसल अछि। उत्तरासँ किछु हटि 'कीचकवाहा' नामक स्थान अछि, जतए विराटक सार कीचककेँ घिसिया-घिसिया मारल गेल छल। ओना ओकर वासस्थान छलैक किछु हटिकेँ जे आई 'कछरा' कहबैत अछि। कीचकसँ किचरा, पुनः कचरा आऽ अन्तमे कछरा भेल होएत, जे सभ मत्सदेशमे अबैत छल। एकरे लगपासमे अछि विष्णुपुर आ मधवापुर, जतए माधव (श्रीकृष्ण) अपन विष्णुरूप देखओने रहथि। स्मरणीय अछि जे ई सभ गाम 'भाला' प्रगन्नामे पड़ैत अछि। एही विष्णुपुर लग अर्जुन अपन अज्ञातवासक समय गाण्डीव आ बाण नुकओने रहथि, जाहि स्थान पर आई 'गाण्डीवेश्वर महादेव' एवं 'बाणेश्वर महादेव' क मन्दिर अवस्थित अछि। एहिना नेपालक मोरंग जिलामे वर्त्तमान विराटनगर ओ चम्पारणक वैराटी गामक सम्बन्ध सेहो विराटराजहिसँ जुड़ल अछि, जे ऊपर कहि आएल छी।

राजा सीरध्वज जनकक पुष्पोद्याने आजुक 'फुलहर' गाम थिक, जतए 'गिरिजामन्दिर' गिरिजास्थान सँ प्रसिद्ध अछि आओर एतहिं जगज्जननी सीताक भेंट श्रीरामसँ भेल

रहन्हि। एही ठाम हरलाखी थानामे विश्वामित्रक शिविर छल, जे आई 'विशौल' कहबैत अछि। सौराठ ओ रहिकाक सन्निकटे विद्यमान 'कपिलेश्वरस्थान' भगवान् कपिलक आश्रमकैँ स्मरण करा रहल अछि, संगहि इहो परम्परया श्रुत अछि जे एहि शिवक स्थापना स्वयं कपिले मुनि कएने रहथि। गौतमऋषिक जतए आश्रम छल, से ब्रह्मपुर आइ विकृत भएकैँ 'बढ़मपुर' भए गेल अछि, जखनि कि कमतौलक एही परिसरमे अहल्यापुरीसँ प्रसिद्ध प्राचीन नगरीक नाम अपभ्रंश भए 'अहियारी' भए गेल अछि।

सीतामढ़ी जनपदमे सीताजीक उद्‌भव स्थान लक्ष्मणानदीक तटपर अवस्थित तकालीन 'पुण्यऊर्वी' आई विकृतभए 'पुनौर' नामे प्रसिद्ध अछि। एही ठाम पुण्डरीक ऋषिक आश्रम सेहो छल, जनिका नाम पर पुनरी–सरोवर (पुण्डरीक सरोवर) प्रख्यात अछि। एकरे बगलमे स्थित गिरमिशानी नामक गाममे छथि पुराण–प्रसिद्ध 'हलेश्वरनाथ महादेव' जनिक अनतिदूरेमे प्राचीन कालक 'उर्विजा–वारिजा', उरिया–बेरिया नामे प्रसिद्ध अछि। सुरसण्ड ओ जनकपुर रोडपर आइ जे 'पन्थ पाकड़ि' पाओल जाइछ, सुनैत छी ई वएह स्थान थिक, जतए पाकड़िक गाछतर सीताजी कैँ आयोध्या लए जयबाक क्रममे कहार सभ सुस्तेबाक हेतु रखने रहनि।

नेपालक महोत्तरी जिलामे जलेश्वर महादेवस्थानक बगलहिमे एकटा गाम अछि 'सुग्गा'। एतहिं राजर्षि जनकक द्वारा व्यासपुत्र शुकदेवजीक आवास–व्यवस्था कराओल गेल छल। बादमे इएह शुकाश्रम शुकासँ 'शुक्का' होइत 'सुग्गा' भए गेल अछि। शुकदेवजी मिथिला अएबाकाल रस्तामे चम्पारणक बेतिया लग सेहो रुकल रहथि, जे स्थान आइ 'सुगाओ' सँ जानल जाइत अछि। जनकपुरसँ दस मील दूर हटि 'धनुषा' नामक स्थान जतए रामचन्द्रजीक द्वारा कएल गेल धनुषभंगक कथाकैँ स्मरण दियबैत अछि, ओतहि मुजफ्फरपुर 'रीगा' ओ 'रेवारी' (ऋग्वारि), सीतामढ़ीक 'अथरा', 'यजुआर' आ मधुबनीक 'समौल' क्रमश: ऋग्वेद, अथर्वेद, यजुर्वेद ओ सामवेदक तत्कालीन अध्ययन–अध्यापनक स्थान कैँ स्मृति–पटल पर अनैत अछि। धनुषा जिलामे अवस्थित 'कुसुमा' गाामकैँ यद्यपि किछु गोटे याज्ञवल्क्य ऋषिक आश्रमस्थल मानैत छथि, मुदा ओहि गाममे वाजश्रवा ऋषिक आश्रम छलनि से बहुतो प्रमाणसँ प्रमाणित अछि, हिनके पुत्र रहथिन नचिकेता। याज्ञवल्क्यक आश्रम तँ योगिवनमे छल, जे आई 'हीरापट्टी–जगबन' कहबैत अछि। ई गाम अछि मधुबनी जिलाक बेनीपट्टी थानामे।

मधेपुरा जिलाक सिंहेश्वरस्थानक सम्बन्ध रामायणकालीन ऋषि शृंगीसँ रहल अछि, जनिक आश्रम एतए छलन्हि आ जनिका द्वारा स्थापित 'शृंगीश्वरनाथ महादेव' आई सिंहेश्वरसँ प्रसिद्ध छथि। भागलपुरक कहलगाँवमे एकटा पहाड़पर दुर्वासाऋषिक आश्रम छल आओर सुलतानगञ्जमे गङ्गानदीक पार्श्वमे एकगोट पहाड़पर जह्नुऋषिक आश्रम रहन्हि जे आई जह्नुगिरिक अपभ्रंश भए 'जहँगिरा' कहबैत अछि। विद्वान् अन्वेषकक ई धारणा रहलन्हि अछि जे पालवंशीय सुप्रसिद्ध विक्रमशिला विश्वविद्यालय, एही जह्नु –आश्रमक निकटमे छलैक।

दरभंगाक नाम कोना पड़ल से विवाद एखनो हल नहि भए पाओल अछि, कारण 'मुण्डे मुण्डे मतिर्भिन्ना'। तथापि अनेक किंवदन्तीमेसँ किछुकैँ एतए उधृत करैत छी। जेना किछु गोटे द्वारबंग (बंगालक द्वार) सँ दरभंगाक कल्पना करैत छथि तँ केयो दरभंगीखाँ नामक कोनो पैघ व्यक्तिकैँ आनि बैसाओल आ कहल जे इएह दरभंगाक निर्माण कएलन्हि। जँ १८ म शतकक सुबेदार दरभंगीखाँक नाम पर दरभंगाक स्थापना मानि ली तँ एहिसँ पूर्व दरभंगाक चर्चा कोना भेटैत अछि? तहिना यदि बंगालक द्वारसँ 'द्वारबंग' क कल्पना करी तँ 'बंगद्वार' होएबाक चाही, न कि द्वारबंग, संगहि दरभंगाक कोन स्थानसँ बंगालमे प्रवेश कएल जा सकैछ, सेहो एक प्रश्न अछि। किनको–किनको अनुसार इहो श्रुत अछि जे राजा शिवसिंहक दल (सेना) कैँ मोसलमान

आक्रान्ता जखनि भंग (नाश) कएलक, तकर बादे एकर नाम 'दलभंगा' भेल आ संस्कृतक 'रलयोरभेदः' कैँ मानि ई दरभंगा कहओलक अथवा उच्चारण-सौविध्यक कारणेँ दरभंगा भेल। शिवसिंहक एतूका तत्कालीन पड़ाव-स्थलकैँ आइयो लोकसब 'शिवधारा' सँ जनैत अछि। परन्तु एहि शहरक नामकरणमे उपर्युक्त कोनोटा कारण समुपयुक्त प्रतीत नहि होइछ। हमरा जनैत आठम-नवम शदीमे चौरासी गोट सिद्ध लोकनि भेलाह, ताहिमध्य मिथिलहुँक कतोक सिद्ध प्रसिद्ध रहथि। हुनके सभक नाम पर हुनक स्थान-विशेषकैँ परवर्ती कालमे नामकरण कएल गेल होएत, जेना 'दरिःपाद' (दरिपा) सँ दरिभंगा ओ 'हरिःपाद' सँ हरिभंगा, 'भरःपाद' सँ भरभंगा (आजुक नाम भरंगा), 'शंकरपाद' सँ शकरी वा सकरी, एहिना 'शबरपा'सँ सबौर आदि।

विभाण्डकमुनिक आश्रम रहनि कालीवनमे, जे पछाति करियन कहओलक आ आइ ई समस्तीपुर जिलामे 'करियन-बलहा' सँ प्रसिद्ध अछि। स्मरणीय थिक जे एही गाममे परवर्ती कालमे उदयनाचार्य, गोवर्धनाचार्य आदि मिथिला-विभूति भेल रहथि। एही कालखण्डमे, मुदा किछु पूर्व भेल छथि 'रत्नकीर्ति' नामक प्रसिद्ध आ निविष्ट बौद्धविद्वान्, जे धर्मपालक शिष्य ओ विक्रमशिला विश्वविद्यालयक आचार्यो रहथि। हिनक परोक्ष भेलापर हिनकासँ प्रभावित समाज हिनक गामक नाम राखि देलक 'रत्नपुर', जे आई बिगरिकैँ 'रतनपुर' भए गेल अछि। एकरे अनति दूरपुर स्थिति अछि 'किरतिनिया', जे हिनकहिं नामार्धकैँ लए बसाओल गेल प्रतीत होइछ आ 'रतनपुर-किरतिनियाँ' कहबैत अछि।

मिथिलाञ्चलक किछु गामक नामकरण ओतूका राजा वा जमीनदारक कारणेँ सेहो भेल अछि, एहने गाम वा स्थान सभमे सुप्रसिद्ध अछि राजर्षि जनकक 'जनकपुर', राजबलिक राजधानी-स्वरूप 'बलिराजपुर' (बाबूबरही लग), अलर्कक सम्पत्तिसँ राजा बननिहार कर्णाटवंशीय राजा नान्यदेवक नामपर सीतामढ़ीक 'नानपुर', राजा कंशनारायणक नाम पर 'कंसी' (कंसी-सिमरी) आदि। तहिना ओइनिवार मूलक राजा कामेश्वर ठाकुरक पूर्वज ओएनठाकुरक स्थापित 'ओहनी' (ओएनी) गाम आइ-काल्हि समस्तीपुरक ताजपुर थानामे पुसारोड स्टेशन लग 'ओइनी-बैनी' सँ प्रसिद्ध अछि। एहि वंशक राजा शिवसिंहक पिता देवसिंह अपन नामपर 'देवकुली' गाम स्थापित कएल, जे आइ लहेरियासराय लग 'देकुली' सँ जानल जाइत अछि। शिवसिंह, पद्मसिंह सभक बाद भेल राजा धीरनारायणक भाई कुमार लक्ष्मीनारायण सेहो अपन नामपर एक गाम बसाओल, जे देकुलिये लग 'लक्ष्मीनारायणपुर' सँ प्रसिद्ध अछि। धीरनारायणक पश्चात् राजा भेनिहार रामभद्रनारायण ओ कंसनारायण दुनूगोटे अपन-अपन नामपर गाम वा राजधानी बनाओल, वैह थिक, रामभद्रपुर आ 'कंसनरैनी' किंवा 'कंसी-सिमरी', जकर चर्च पहिनें कए चुकल छी। तहिना 'महेशपट्टी', 'शुभंकरपुर', ओ 'सुन्दरपुर'क सम्बन्ध क्रमशः महेशठाकुर, शुभङ्करठाकुर ओ सुन्दरठाकुर संग रहल अछि। बेगूसराय जिलामे राजा जयसिंह अपन ओ पत्नी मङ्गलादेवीक नाम पर जतय 'जय- मङ्गलागढ़' के स्थापना कएल, ओतहिं नौलागढ़ (बेगूसराय), अलौलीगढ़ (खगड़िया), कटरागढ़ (मुजफ्फरपुर) आदिक सम्बन्ध सेहो ओतूका राजा लोकनिक संग रहल अछि। बिहारक मिथिलाक्षेत्र, मगध ओ भोजपुरक्षेत्र अथवा बिहारक बाहर राजस्थान प्रभृतिमे स्थित 'पाली' वा 'पाल' शब्दयुक्त गामसभक सम्बन्ध कदाचित् प्राचीनकालक पालवंशीय राजसभक संग रहल होइन्हि, ताहू सम्भावनाकैँ नकारल नहि जा सकैछ। एहिमे अछि मिथिलाक 'पाली', 'जगदलपाली', 'घनश्यामपुर-पाली', 'रानीपाल' आदि गाम।

'सुगौना' पहिनें सुगौनमूलक ब्राह्मण जमीनदार लोकनिक गाम छल, जतय बादमे ओइनिबारमूलक एक ब्राह्मण शाखा सेहो आबि बसल। ई गाम मधुबनी जिलामे कपिलेश्वरस्थान लग अवस्थित अछि। एकर पूबमे भामतीकार बृद्धवाचस्पति मिश्रक आश्रयदाता नवम शताब्दीक राजानृगक राजधानी 'नगवार' सँ प्रसिद्ध अछि, जे ओहि समय नृगपट्टी आदि नामक रहल होएत। एही कोटिक गामसभमे अबैत

अछि जगतसिंह, शक्तिसिंह, लखिमारानी, गंगदेव, राघवसिंह, माधवसिंह, दुलारसिंह, महिनाथ ठाकुर आदि द्वारा संस्थापित जगतपुर, शक्तिपुर (शकतपुर), रानीपुर, गंगद्वार (गंगदुआरि), गंगोली (गनोली–पहटन), राघवपुर (राधोपुर), माधवपुर (माधोपुर), दुलारपुर, महिनाथपुर आदि।

मिथिला ओ मिथिलाक बाहरक किछु गाम वा स्थान एहनो अछि, जकर नामकरण सनातनधर्मक सम्प्रदायपर राखल गेल अछि। यथा–विष्णुपुर , हरिपुर, हरिनगर, हरिदासपुर, हरियाइरि, नारायणपुर, गोविन्दपुर, मोहनपुर, चक्रधरपुर, माधवपुर, मधवापुर, श्यामपुर (मोजा), दामोदरपूर, रामपुर, रामभद्रपुर, रामनगर, रामचन्द्रपुर, रामदयालपुर, रामदयालु, राघवपुर, जयदेवपट्टी, बेलमोहन, घनश्यामपुर, चकरिया (भगवानक चक्रपर राखल गेल नाम), लक्ष्मणपुर, भरतपुर, आदि जतय वैष्णवनाम थिक, ओतहिं शैवनाममे प्रमुख अछि– शिवपुर, शिवनगर, शङ्करपुर, शङ्करसराय, शम्भुआर, महादेवनगर, महादेवपुर, महदेवा, रुद्रपुर, ईशानचक, ईशपुर आदि। एहि तरहेँ शिवपञ्चायतन नामपर राखल गेल नाम थिक कुमारपुरा (कार्तिकेयक नामपर), गनपतिया (गणेशक नामपर), बरदहट्टा (बसहा बरद वा नंदीक नामपर), गंगजला (गंगाजल पर) आदि। तहिना शाक्त–साम्प्रदायिक गाममे परिगणनीय थिक– भवानीपुर, भगवतीपुर, लक्ष्मीपुर, शारदापुर, शक्तिपुर, दुर्गापुर, दुर्गागञ्ज, गंगापुर, कमलापुर, (कमलपुर–बिठुआर भिन्न अछि), उमगाँव (उमागाँव), अपर्णा (अपरना), पारोगाँव (ई पार्वतीगाँव अपभ्रंश बुझाइत अछि), कालीपुर, कालिकापुर, सीतापट्टी, शेरपुर आदि। सौरग्राममे सूरजगढ़ा, भानुपूरा, सूरजनगर, रवियाही आदि जतय उल्लेखनीय अछि; ओतहिं 'बहिनपुरा' नामक गामकेँ वह्निपुरक अपभ्रंश मानि सकैत छी। जखनि कि हनुमाननगर, मदना, मदनपुरा, ब्रह्मपुर, ब्रह्मपुरा, ब्रह्मोत्तरा, चानपुर, चानपुरा, चनौर आदि सेहो जतय हनुमानजी, कामदेव, ब्रह्मा ओ चन्द्रमाक नामपर बसल ग्राम प्रतीत होइछ, ओतहि देवहार, भगवानपुर आदि सामान्य देवतापर आधारित गाम कहल जा सकैछ।

किछु गामक नाम तँ अस्त्र–शस्त्र अथवा धातुपर आधारित कोनो विशेष कारणेँ राखल गेल होएत, जेना कि भालपट्टी (भाला), करौच(किरीच), तलवारि (तरुआरि), कुरहरिया (कुरहरि) लोहा (सौरठ), लोहार (भवानीपुर), सोनाली (सोना), रूपौली (रूपा), रजतपुर (चान्दी), रजतपुरा (चान्दी), सोनपुर (स्वर्ण) आदि।

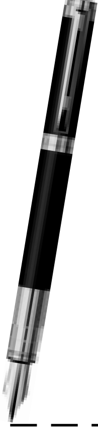
– डॉ. उदयनाथ झा 'अशोक'
वरीय आचार्य, केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, श्रीसदाशिव परिसर
पुरी (ओडीशा)–७५२००१
(मो.८८९५१२२३१२)

❑❑

Maithili wishes rightly to maintain its identity. But this will be looked upon a fissiparous move by those who wish to gigantize Hindi. It is not wise for a non-Hindi fighter to take sides in this issue. I know you will fight with all your energy.

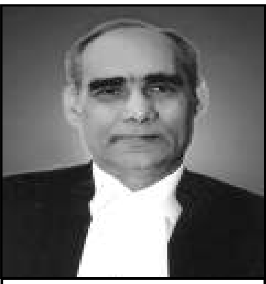
Sri. C. Rajagopalachari
साभार- जयकान्त मिश्र समज्ञा (पृ.११)

मनक बात



मिथिला सांस्कृतिक संगम, प्रयाग पूर्व वर्ष जकां एहि वर्ष सेहो अपन वार्षिक उत्सव मना रहल अछि। मिथिलाक भूमि सँ दूर प्रयागमे गोटेक १५००-२००० परिवार जे बसल छथि हुनक अपन सांस्कृतिक धरोहर आ परम्पराक प्रति जागरूकता, सचेष्टता आ गर्व हम अपन इलाहाबादक सत्ताइस मासक परिस्थिति जन्य प्रवासमे हुनका सभसँ जुड़ि कऽ देखि चुकल छी आ अत्यंत प्रभावित भऽ कतिपय प्रयास कएने रही, परंच भरिसक ईश्वरक इच्छा नहि छन्हि वा छलन्हि ओहि सभ प्रयास कें मूर्तरूप देबा लेल, तथास्तु।

मैथिल जीविकाजन्य आवश्यकता सँ माइ-बापक सानिध्य छोड़ि भारतवर्षक कतेको नगरमे प्रवासी छथि। कतेको लोक तऽ अपन गाम-घरक सुधिओ बिसरि गेल छथि, परंच एखनहुँ हुनका सभक ह्दयमे अप्पन सांस्कृतिक धरोहरक प्रति आग्रह छन्हि जे प्राय: मिथिलाक मुख्य-भूमि मे निवास कएनिहार मैथिलीमे लुप्त प्राय भऽ गेल अछि। मिथिलाक गाम-घर एखन दोसर समस्या सभसँ जूझि रहल अछि, जाहिमे पारम्परिक सांस्कृतिक चेह्न धूमिल भऽ रहल छैक। मुख्य भूमि सँ आव्रजन सँ कतेको गाम खाली भऽ रहल अछि आ नीक शिक्षाक आवश्यकता ओ रोजगार एकर मुख्य कारण छैक। जे तिरहुत पूर्वमे अपन धन-धान्यक कारणें प्रतिष्ठित छल ओतय आब कृषि कार्य आ अन्नोत्पादन पिछड़ि गेल अछि। हमरा लोकनि पराधीन भेल छी आ आब कतिपय गाममे श्रमिकक खगता कारणें कृषि कार्य प्राय: उपेक्षित अछि जाहि सँ ओहि भूमिमे उपजय बला कतेको धानक किसिम ओ अन्यान्य फसिल प्राय: विलुप्त भऽ गेल अछि, अगत्ये स्वास्थ्य संबंधी कतिपय समस्या उत्पन्न भऽ स्वस्थ मैथिलक इतिहास कें समाप्त प्राय कएनें अछि। शिक्षाक जे एक प्रतिष्ठित-सशक्त परम्परा आ ओहि सँ उपजल शिक्षा-केन्द्र छल ओ तऽ आब गनल-गुथल अछि। एकटा पैघ परम्परा जे सांस्कृतिक धरोहरि कें पीढ़ी-दर-पीढ़ी हस्तान्तरित करैत छल, जेना माइ-दाइ सँ धी-पोती, मिथिलाक विभिन्न सांस्कृतिक विधा-अरिपन, मिथिलाक गीत-नाद, खान-पान, साज-सज्जा, विभिन्न प्रकारक उत्सवक अनेको-अनेक श्रृंखलाक छोट-पैघ विध-विधान आदि-सेहो लगभग समाप्तहि अछि। हमरा लोकनि बेटी-बेटा कें आधुनिक शिक्षाक संग जीवनक ई सभ परम्परा, विध-विधान वा कलात्मक-सृजनात्मक परिअंग सँ परिचित करा पटु बनावी, इएहो एकटा हमरा सभक दायित्व अछि, जे ध्यात्व अछि।



न्यायमूर्ति श्री धरणीधर झा

पछिला कतेको चुनाव सँ ई देखल जाइछ जे मैथिल वोट सँ मिथिला भूमिक राज्यमे सरकार तऽ बनैत रहल परंच ओ ओहि भूमिक विकासक कोनो चेष्टा नहि कएलक।

बिहारमे आ केन्द्रमे जे सरकार सम्प्रति अछि ओ हमरा सभक क्षेत्रीय विकासक प्रति उदासीन अछि। हमरा लोकनि कतेको प्रयास कएल तऽ विद्यापति स्मारकक किछु काज भेल। हम अहमदाबादमे आयोजित सन् २०१९ मे अंतरराष्ट्रीय मिथिला महोत्सवमे आमंत्रित रही आ ओतए जे पैघ प्रवासी मैथिलक समूहमे विद्यापति स्मारक आ एकटा शोध–संस्थानक स्थापनाक प्रति उत्साह आ उद्वेग देखनें रही ओ छल बढ़ अजगुत। ओतए जे सभ गोटे छथि से सभ एकटा विशेष आग्रह चेतना–समिति, पटनाक पदाधिकारीगण केँ कएनें रहथिन। मुदा हम ओतहि कहि देनें रहिअनि जे सम्प्रति जे सरकार अछि ओकरा सँ उमेद नहि राखल जाए। वएह स्थिति भेल। हमरा सभ केँ ई विचारणीय जे हम सभ मैथिलवासी एकठाम भऽ ई नेआर करी जे हमरा लोकनि एकटा सार्थक–सशक्त राजनैतिक सामरथ बनाबी आ अप्पन क्षेत्रक विकास हेतु प्रयास करी।

भाषा–सृजन भऽ तऽ रहल अछि मुदा लेखक लोकनि अर्थाभाव कारणेँ छपा नहि रहल छथि आ जं छपिओ गेलन्हि तऽ पोथी किननिहार नय। इएहो एकटा विचारणीय प्रश्न अछि। तैं हमरा लोकनि पोथी किनि पढी आ रचनाकार लोकनि केँ प्रोत्साहित करिअनि।

दाइ–माइ लोकनि नेना–भुटका संग मैथिली बाजथि, बजाबथि। पैघ लोक जे केओ मैथिल भेलाह वा छथि हुनक शिक्षा जे कोनो भाषामे भेल होनि, ज्ञानक बात, पोथीक बात वा विषयवस्तु ओ बाल्यकालमे अप्पन माइक भाषा मैथिलीमे बुझलनि। एखनहु हमरा सभक विषय–जन्य सोच गुमसुम भऽ अपन मैथिलीमे होइत अछि। डाक्टर सुधाकर झा तेरह भाषाक ज्ञानी छलाह। परंच हम तऽ हुनका सदिकाल मैथिलीए बाजैत देखनें छिअनि। प्रयाग तऽ मैथिल विद्वानक आगार रहल अछि। सभ गोटे मैथिली बाजलाह आ मैथिलीए मे सोचि सृजन कएलनि।

एकटा गप्प नवतुरिया लोकनि सभसँ–

मैथिल अप्पन विद्वताक कारणें प्रतिष्ठित रहलाह अछि। पूर्वज जे कोनहु गोटा रहलाह ओ सभ अपन विद्वताक कारणेँ अद्यावधि स्मरण कएल जाएत छथि। ओ विद्वता शास्त्रीय छल आ ओकर महत्ताक सुगंध अद्यावधि अछि आ हमरा लोकनि स्मरण कऽ प्रफुल्लित होइत छी। आइ ओहि मानकमे कतेको खाढ़ी कमी देखना जाइत अछि। कम्प्युटर आ विज्ञानक अन्य विद्या जे आइ जीवनक आधार अछि ओ तऽ समीचीन मुदा काव्य–शास्त्र–विनोदेणक आनंद जे विद्वतवर्ग आ सामान्य बुझनुक लोक गामक खोपड़ी, झोपड़ी अंगना–दलान वा चौक परक मचान पर बैसि लैत छलाह ओ आनंद आजुक सुसज्जित ड्राइंग–रूममे नहि भेंटि सकैत अछि। आजुक ड्राइंग–रूम चिन्तनक नहि चिन्ताक मसान रहि गेल अछि। की ई अन्यथा जे नवतुरिया लोकनि एहि दिस विचारथि आ विद्वताक शिखर दिस बढ़ैत अप्पन परंपराक केँ सेहो जगजिआर राखथि??

हमर मोन केँ जे बात उद्वेलित करैत रहैछ ओहि सँ अपनें सभ केँ अवगत कराएल। गौरव अछि जे हम मैथिल छी आ प्रयागस्थ प्रवासी मैथिल लोकनि एखनहुँ स्मरण कऽ आदर करैत छथि।

धन्यवाद



जीवन पर्यन्त मिथिला राज्य वास्ते संघर्षरत जयकान्त बाबू



भारतवर्षमे पौराणिक कालहि सँ मिथिला एकटा महत्वपूर्ण राज्य रहल अछि जकर ख्याति सदिखन बौद्धिक विलक्षणता, विद्वता आ मार्गदर्शकक रुपेँ सर्वत्र व्याप्त रहल। शांति आ अहिंसाक वास्ते सेहो ई धरा विश्व भरिमे प्रतिष्ठित रहल अछि। बुद्ध, महावीर सँ लय गाँधी धरि अपन आन्दोलन एतहि सँ आरम्भ कयलनि। वास्तवमे मोहनदास के गांधी बनयबामे सेहो एहि माटि- पानिक महत्वपूर्ण भूमिका रहल अछि। तेँ बौद्धिक क्रांतिक वास्ते ई धरा जुग-जुग सँ पूजित होईत रहल अछि। एकर अन्दाज विश्व भरिमे पसरल मैथिल लोकनिक अनुपम उपलब्धि सँ सेहो लगाओल जा सकैछ।

राजा निमिक पुत्र मिथिक नाओं पर स्थापित मिथिला राज्यक स्वरुप राजा जनक विदेहक कालमे आर विकसित भय दिग्दिगन्तमे प्रशस्ति पओलक। शतपथ ब्राह्मण, महाभारत, रामायण, बौद्ध आ जैन ग्रंथक अतिरिक्त अनेकहु पौराणिक ग्रंथादिमे मिथिला राज्यक नगर, गामक संस्कृति आ लोकवेदक वृहद् वर्णन एकर गौरव गाथाके सद्य: प्रस्तुत करैछ। माय जानकी आ सती अहिल्याक संग ऋषि गौतम, याज्ञवल्क्य ,विदुषी भारती, मंडन मिश्र, बाबा विद्यापति, राजा शिव सिंह, राजा शलहेश, नैका-बनिजारा, दीना-भद्री आदिक संग पं. अयाची मिश्र, कविवर चन्दा झा, पं. सीताराम झा, हरिमोहन बाबू, बाबा नागार्जुन धरि शताधिक विद्वान लोकनिक सहयोग मिथिलाकेँ मिथिला बना रखबामे सदति रहलनि। एहि विद्वत वृन्दक संगहि संग कर्नाट वंशीय शासक आ तकरा पछाति ओइनिवार साम्राज्यक भूमिका स्वतंत्र मिथिला राज्यक अस्तित्व बनाय रखबामे उल्लेखनीय रहल। दड़िभंगा महाराज लक्ष्मेश्वर सिंह, कामेश्वर सिंह, रामेश्वर सिंह आदि-आदिक अवदान फिरंगियोक शासन अवधिमे अपन स्वतंत्र स्थान आ फराक छाप बनाय रखबामे समर्थ रहल।


डॉ. जयशंकर मिश्र

राज्यक अवधारणा आ निर्माण वास्ते जहिना राजा किंवा शासक वर्गक योददान रहैछ तहिना भाखा- बोली आ साहित्यकार लोकनिक अवदान सेहो महत्व रखैछ। एहि सन्दर्भमे विद्वत आ बौद्धिक समाजक अवदान के किन्नहु नकारल नहि जा सकैछ। बौद्धिक वर्गे आम जन- मानस धरि पहुँचि शासकीय निर्णय किंवा कोनो जन आन्दोलनक अथवा क्रांतिक चेतना ओ सनेश प्रसारित करैछ। जन-जागृतिक कोनो काज निश्चित रुपेँ भाखा किंवा साहित्येक दुआरा संभव होईछ। मिथिला राज्यक गप्प करी तँ भारतवर्षक स्वतंत्रता प्राप्ति धरि ई मात्र दड़िभंगा राजक रुपेँ एहि क्षेत्रक प्रतिनिधित्व करैत छल, मुदा कालान्तरमे देश भरिमे पसरल आन शताधिक रियासतक भाँति राज्य रुपेँ एकरो स्वतंत्र अस्तित्व समाप्त

भय गेल। फेर गप्प उठल देशमे अनेक राज्य वा प्रांत गठन के तऽ पूर्वक भाँति मिथिला बिहार राज्येक हिस्सा रहि गेल। जखन कि संविधान अनुसार भौगोलिक, ऐतिहासिक, क्षेत्र, भाखा आ संस्कृतिक आधार पर आगू चलि अनेक राज्यक भारतवर्षमे अभ्युदय भेल। एहि प्रान्त सभक गठनमे जन आन्दोलन आ क्रांतिक संगहि राजनेताक दृढ ईच्छा शक्ति सेहो काज कयलक। परिणामतः गुजरात, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, सिक्किम आदि पूर्वोत्तर राज्यक संग बादमे गठित झारखण्ड, उत्तराखण्ड, छत्तीसगढ़, गोवा, तेलंगाना आदि प्रान्त सेहो अस्तित्वमे आयल। एहि सभ राज्यक गठनमे निर्विकार रुपमे मानल जा सकैछ जे एहिमे क्षेत्र विशेषक बोली– भाखा, साहित्य संस्कृति आदिक महत्वपूर्ण भूमिका रहल।

किछु राज्य सभक गठनमे उग्र आन्दोलन आ हिंसाक महत्वपूर्ण आ निर्णायक भूमिका सेहो द्रष्टव्य अछि, मुदा मिथिलाक माटि–पानि आ संस्कार किन्नहु एहि तरहक आन्दोलनक अनुमति आ प्रश्रय नहि दैछ। तेँ एक मात्र जन–आन्दोलन आ भाखा व साहित्यक प्रयोग टा हमरा लोकनि केँ फराक मिथिला राज्य प्राप्तिक लेल उपयुक्त उपकरण अथवा संसाधन थिक। एहि संसाधनक सशक्त, प्रभावी, वृहद् आ व्यापक प्रयोगहि सँ अपन लक्ष्य साधि सकैत छी। निश्चित रुपेँ मिथिला राज्य प्राप्तिक बाटमे हमरा लोकनिक एकटा पैघ उपलब्धि किंवा सफलता राष्ट्रीय भाखाक अष्टम अनुसूचीमे मैथिलीक समावेश आ मान्यता थिक जे समस्त मैथिल वृन्दक विभिन्न तरहक निरन्तर आन्दोलन आ दृढ संकल्प सँ प्राप्त भय सकल। ई उपलब्धि एहू वास्ते महत्वपूर्ण थिक कारण राज्यक गठनमे एकटा प्रमुख आधार क्षेत्रीय भाखाके राखल गेल अछि तेँ राज्य प्राप्तिक बाटमे एकरा एकटा पैघ उपलब्धिके रुपमे मानल जा सकैछ। एहि सफलताक प्राप्तिमे मैथिल दधिचि डॉ जयकान्त मिश्रक अवदान सर्वोपरि आ उल्लेखनीय रहल।

विवशतावश अपन उदर पूर्तिक वास्ते मिथिलाक माटि–पानि सँ दूरस्थ रहि मिथिला, मैथिल आ मैथिलीक लेल जी–जान सँ काज कयनिहार बड थोड़ लोक, ताहिमे एकटा नाओं सदिखन आदर आ सम्मान सँ लेल जायत रहत ओ थिक प्रयाग प्रवासी सन्त स्वरुप प्रोफसर डॉ जयकान्त मिश्र। मिथिला राज्य प्राप्तिक बाटमे साहित्यकार आओर भाखा विशेषज्ञ लोकनिक एकटा पैघ श्रृंखला अछि जाहि मध्य बहुआयामी प्रतिभाक सागर, कालजयी, मैथिल शिरोमणि डॉ. जयकान्त मिश्रक नाओं सभसँ अग्रणी रहल। ओ जीवन पर्यन्त माय मैथिली आ मैथिलक सेवामे निमग्न रहलाह। सन्त स्वरुप डॉ.मिश्र सरल आ उदार व्यक्तित्वक धनी छलाह। ओ सदिखन मिथिला आ मैथिलीक सेवा हेतु तत्पर रहैत छलाह। ओ बड़ थोड़ लोकमे छलाह जे अपन सर्वस्व मैथिली भाखाक उत्थान आ मिथिला राज्यक प्राप्तिक निमित्त न्यौछावर कय देलनि। जिनगीक अन्तिम क्षण, अन्तिम साँस धरि ओ एहि काज वास्ते लागल रहलाह। "डॉ जयकान्त मिश्र मिथिला समाजमे एहन गनल लोक छलाह जे जिनगी भरि मैथिलीक उत्थान हेतु आ मिथिला राज्य के साकार करबाक हेतु काज करैत रहलाह। मिथिला राज्य हेतु लोक के संगठित कयनाई आ एहि वास्ते चुनाओमे उम्मीदवार ठाढ़ केनाई हिनक एहि सन्दर्भमे उल्लेखनीय अवदान रहलनि।"[१] मिथिलाक गामे–गामे हुनक पहुँच छलनि आ तहिना ओ देश भरिक मंच सभ पर मिथिला आ मैथिलीक पक्षमे ओजस्विता सँ अपन विचार रखैत छलाह। "अपन मिथिलांचलक बाहर विशिष्ट मंच सभ पर मैथिलीक पक्ष रखनिहार जॉर्ज ग्रियर्सनक पछाति दादा सन महामानव आन कियो नहि भेलाह। दादा दुआरा सन् १९६३ ई.मे नई दिल्लीमे मैथिली पोथीक प्रदर्शनीमे साहित्यक विशाल भण्डारक बारेमे विस्तृत जानकारी भेला पर तत्कालीन प्रधानमंत्री जमाहिर लाल नेहरुके बड आश्चर्य भेलनि आ ओ कहय लेल विवश भय गेलाह–"Maithili is a living languge"[२] वास्तवमे दिल्लीमे मिथिला–मैथिली के स्थापित करबामे हिनक अवदान कोनो आन मैथिलक

तुलनामे श्रेष्ठतम रहल अछि।"राष्ट्रीय ओ अन्तराष्ट्रीय स्तर पर ख्याति स्थापित करबाक श्रेय जाहि तीन व्यक्ति के अछि ताहिमे प्रथम थिकन्हि विद्यापति द्वितीय डॉ. जयकान्त मिश्र आ तृतीय स्व. हरिमोहन झा। वस्तुतः अपने मैथिलीक दधिची छी।"[३] जीनगीक अन्तिम दिनमे सेहो जयकान्त बाबूक माय मैथिलीक प्रति अनुराग आ अगाध स्नेह देखल जा सकैछ। ओ २००५ ई.मे यूनेस्कोक सहयोग सँ कोलकातामे आयोजित "National Conference of Mother Languages" विषयक संगोष्ठीमे "A Report by Dr. Jaikant Mishra for Mithila Maithili" आलेख प्रस्तुत कयलिन, जाहिमे मिथिला आ मैथिली भाखाक समस्याके उठौलनि।

जरुरी नहि जे आन्दोलन वास्ते कोनो राजनीतिक दलक सम्बद्धता चाहबे करी। जन आन्दोलन वास्ते बौद्धिक प्रयत्नो पर्याप्त थिक। तैं जयकान्त बाबू कोनो राजनीतिक दल सँ दूरे रहलाह, तथापि अपन लक्ष्य पूर्ति वास्ते हुनका सभक समक्ष अपन विचार रखबामे कखनो पाछू नहि रहलाह आ सदति हुनका सभके मिथिला आ मैथिलीक उत्थान लेल प्रेरित करैत रहलाह। "भाईजी सदति दलगत राजनीति सँ दुर रहलाह, रचनात्मक, संगठनात्मक मिथिला, मैथिलीक सर्वांगीण विकासक हेतु सदति प्रयत्नशील रहलाह। जनमानसमे मैथिलीक प्रति सुसुप्त भावनाके जाग्रत करब, साहित्यकार, कलाकार, राजनेता प्रभृत्ति वर्गक गोष्ठी सभमे हुनका सभके अपन-अपन पथ पर होयबा लेल उत्प्रेरित करब इएह हिनकर क्रिया-कलाप रहल।"[४]

विभिन्न साहित्यिक संस्था आ मंच सभ पर मैथिलीक स्थान आ महत्व वास्ते ओ सदिखन सक्रिय रहलाह। एहि क्रममे सर्वाधिक महत्वपूर्ण छल भारत सरकारक साहित्य अकादमीमे माय मैथिलीक मान्यता आ स्थान भेटनाई। एहि सन्दर्भमे जयकान्त बाबूक नाओं एहि उपलब्धिक पर्याय थिक। सन् १९५९ ई.मे एहि लक्ष्य प्राप्तिक ध्वज ओ अपन कान्ह पर लय अग्रसर भेलाह जकर सफलताक परिणति १९६५ ई.मे भय सकल। "साहित्य अकादमीमे मैथिलीक स्वीकृतिक संवाद अखबार ओ वैदेहीक नाम आयल तार दुनूँ सँ जानि अत्यन्तिक आनन्द भेल। विद्यापतिक बाद दिल्लीक धरती पर मैथिली के संस्थापित करबाक समस्त श्रेय अपनहि के अछि। एतदर्थ हमर हार्दिक सम्बर्द्धन अवश्य स्वीकार करी।"[५] जयकान्त मिश्र मैथिलीक ध्वजवाहक छलाह। ओ अपन आन्दोलनक क्रममे अंग्रेजी माध्यम सँ मिथिला ओ मैथिलीक गरिमा, समस्या एवं राजनीति भारते नहि विश्व धरि पहुँचौलनि। "साहित्य अकादमीमे मान्यताक अपन धर्मयुद्धक क्रममे' "A Case of Maithili", "What they say about Maithili" ओ "Maithili Advances Three Steps Forward" पुस्तिका प्रकाशित कयलनि। ताहू सँ पूर्व छद्मनाओं सँ "The Formation of Separate Provinces of Mithila" छापि अपन जन्म स्थानक प्रति चेतना प्रदर्शित कयलनि"[६] ई आलेख जयकान्त बाबूके अन्तर्मनमे हिलोर लैत पृथक मिथिला राज्यक अभिलाषा के सद्यः स्पष्ट करैत अछि। राजनीतिक आधार तेआर करबामे लेखनी आ साहित्यक अवदान अत्यधिक महत्व रखैछ आ एहि काजके ओ जीवन पर्यन्त पूर्ण जिम्मेवारी आ मनोयोग सँ पूर करैत रहलाह। "पृथक मिथिला राज्यक औचित्य पर १९५९ ई.मे विस्तृत आलेख प्रस्तुत कयलनि। फेर गामे-गाम पदयात्रा, संगमे कमलेशजी। जन-जागरण केर गहन प्रयास। जनवरी १९९७ ई.मे पेसमेकर लगाओल गेलनि। तकरा बाद स्वास्थ्य लेल परहेज आवश्यक। परहेज नहि कयलनि पदयात्रा करैत रहलाह। मिथिला, मैथिल आ मैथिलीक विकास लेल, अपन संस्कृति केर समुचित विन्यास लेल। तन, मन, धन केर कथे नहि, सर्वस्व उत्सर्ग लेल तत्पर। सोझाँ अबैत विध्न बाधाकँ ध्वस्त करैत।"[७] हुनक आन्दोलनक परिचर्चाक क्रममे हुनका संग चित्रकूटमे बिताओल हम अपन किछु अनुभवके अपने लोकनिक संग साझा करब उचित बुझैत छी जाहिमे हुनक चित्रकूटहुमे मिथिला ओ मैथिलीक प्रति

कर्तव्यक आभास होयत।

स्वनाओंधन्य, प्रात: स्मरणीय मैथिली दधिचि आदरणीय जयकान्त बाबूक सन्दर्भमे हम विद्यार्थी जीवन सँ अवगत छलहुँ। हुनका सँ हमही किएक मिथिलामे रहनिहार समस्त मैथिल, नहि तऽ कम-सँ-कम बौद्धिक, सामाजिक आ राजनीतिक वर्ग त' अवश्ये सुपरिचित रहल। हुनक लेखन, आन्दोलन आ माय मैथिली आ मिथिलाक लेल कयल जा रहल प्रयत्न आ संघर्ष कोलकाता प्रवासी हम अपन पित्ती स्व. किशोरी कांत मिश्र, मिथिला सांस्कृतिक परिषद, कोलकाताक प्रमुख खाम्हि अनेक बेरक अध्यक्ष आ मंत्री सँ यदा-कदा गप्पक क्रममे सुनैत छलहुँ आ हुनका प्रति हमर अगाध श्रद्धा आ भेंट करबाक उत्कण्ठा नित-प्रति बढ़ैत चलि गेल। ओना हमर बाबूजी स्व. इन्द्रकान्त मिश्र सेहो हुनका सँ सुपरिचित आ प्रभावित छलाह। हमर चित्रकूट आगमनक पछाति बाबूजीक अभिलाषा छलनि जे एहि मनिषीके एक बेर पुन: भेंट कय सकी, जे सन् २००८ ई. कऽ दिसम्बर १३ तारीख क' पूर्ण भेलनि तकरा-एक-डेढ़ मासक पछाति जयकान्त बाबू महाप्रयाण पर चलि गेल छलाह।

हमरा ग्रामोदय विश्वविद्यालय, चित्रकूटमे अयला आठे-दस दिन भेल छल कि अतिथि प्रोफेसरक रुपेँ डॉ. जयकान्त मिश्र सेहो एहि विश्वविद्यालयमे भाषा संकायक गठन आ नव स्थापित विश्वविद्यालय कैँ अपन अनुभव आ विद्धता सँ अभिसिंचित करबा लेल अएलाह। हमरा ज्ञात भेल जे प्रयाग सँ चित्रकूट आबि कोनो प्रोफेसर मिश्र तीन- चारि साँझ सँ मात्र चूड़ा-दूध भोजन कए रहल छथि कारण जे ओ स्वपाकी छलाह आओर दोकान-दौरीमे भोजन नहि करैत छलाह। उत्कण्ठा सँ भरल अति आह्लादित होईत हुनक दर्शन कय अपनाके धन्य कयल। फेर हुनक आवास व्यवस्था भेलनि का आदरणीया चाचीजी (हुनक धर्मपत्नी) सेहो चित्रकूटहि आबि रहय लगलथिन। सेहो हमरा आवासक लगीचेमे। हमरा लोकनिक प्रसन्नताक कोनो ठेकान नहि छल, जेना परदेशमे माय-बापक रुपेँ कोनो अनमोल धरोहरि भेट गेल होए। जनिक दर्शनक चिर अभिलाषा मोनमे संजोगने छलहुँ आब हुनक सानिध्य नित- प्रति सुलभ छल। लगभग दू बरख धरि ओ चित्रकूटमे रहलाह ताधरि हुनक अविरल स्नेह आ आशीर्वाद हमरा लोकनिके अनायासे, बिनु कोनो प्रयत्ने भेटैत रहल। दिन भरिमे नहि बेसी तऽ एक बेर संग बैसि गप्प-सप्प होइते छल। शनैः-शनैः हिनक परिवार जन सभ सँ सम्बन्ध आर प्रगाढ़ होइत चल गेल आ जयकान्त बाबूके हमहूँ सभ चचाजीक स्थान पर दादा कहि सम्बोधन करय लगलियनि। परिणाम भेल जे प्रयागक हमर कोनो यात्रा बिनु हिनक दर्शन कयने नहि बीतल। हुनका मुईलाक पछातियो हमर प्रयागक यात्रामे प्रयत्न रहैए जे ओहि धरा के स्पर्श करी आ से करितो छी। ओतए भाईजी काशी बाबू (जयकान्त बाबूक कनिष्ठ पुत्र) सँ भेंट कए अतीतक किछु स्वर्णिम मधुर पलक स्मरण करबाक सदति प्रयत्न रहैत अछि।

डॉ. जयकान्त बाबूक संग बिताओल अवधि आइयो हमरा गौरवान्वित करैत अछि। हम साक्षी आ सहगामी रहलहुँ हुनक चित्रकूट प्रवासावधिक मैथिली आन्दोलनक। हुनक मिथिला आ मैथिलीक प्रति अनुराग आ एकर विकासार्थ आन्दोलन चित्रकूटहुमे निरन्तर चलैत रहल। जो भगवान श्रीरामक वनवास स्थलीमे रहि माय मैथिली (जगत् जननी जानकी) के कोना बिसरि सकैत छलाह। परिणामस्वरुप, ग्रामोदय विश्वविद्यालयमे मैथिलीक प्रचार वास्ते भाषा संगम नाओं सँ सान्ध्य कालीन कक्षा संचालनक व्यवस्था कएलनि जकर संचालनक दायित्व हमरे ऊपर छल। यद्यपि एहि भाषा संगममे आनो भाषा जेना-तेलगू, बांग्ला, मराठी, फ्रेंच आदिक प्रशिक्षण चलैत छल। कहबाक तात्पर्य जे हुनक अपन माटि-पानि आ भाखा-बोलीक प्रति अनुराग आ आन्दोलन जीवन पर्यन्त सर्वत्र चलैत रहल।

आब ओ एहि धरा पर सशरीर नहि छथि मुदा हुनक व्यक्तित्व आ कृतित्व सदति मिथिला राज्यक आन्दोलनमे

मार्गदर्शन करैत रहल आओर एहि सन्दर्भमे कयल गेल हुनक काजके कहियो बिसरलो नहि जा सकैए। सरिपहुँ 'कीर्तियस्य सः जीवति' क उक्ति रुपेँ जयकान्त बाबूक सन्दर्भमे उचित द्रष्टव्य होइछ। निःसंदेह हुनक फराक मिथिला राज्यक अभिलाषा अपूर्ण रहि गेलनि मुदा एकर पूर करबाक भार आब हमरा लोकनिक कान्ह पर अछि जे अपन सर्वस्व लगाय मिथिला राज्यक परिकल्पनाके पूर करबामे समर्थ होए। हमर व्यक्तिगत मन्तव्य अछि जे जेना सोसल मीडिया पर जी जान सँ मैथिल युवा लोकनि अपन विचार, गीत-नाद ,कला-संस्कृति आदिक प्रचारित- प्रसारित करबामे मुखरित छथि तहिना मिथिला राज्यक आन्दोलन वास्ते पूर्ण ऊर्जा आ उत्साह सँ एहि निमित्त सेहो सक्रिय भय जाथि। सात सतुद्र पार धरि लीज ट्रस के प्रधान मंत्री बनएबामे, लन्दन संसद आ रसियन संसद आदिमे जाय मैथिल लोकनि जखन झंडा गाड़ि अपन डंका बजाय सकैत छथि तऽ ओ मैथिल एकटा राज्य गठन नहि करबा सकैछ, ई अजगूत थिक। यद्यपि वैश्विक स्तर पर पसरल मैथिल एहि सन्दर्भमे जी-जान सँ सदति लागल रहैत छथि, तथापि आवश्यकता अछि जे एकजुट भय दृढ ईच्छा आ संकल्प लय एहि पथ पर अग्रसर होयबाक आओर एकरा अन्तिम परिणति धरि लय जयबाक।

जागि जाऊ मैथिल वृन्द जागि जाऊ,
भोर होयबे करत सकल प्रयास सँ,
कहि दिऔ कि नहि हम सूतल छी------

सन्दर्भः

१. शिवचन्द्र झा- प्रकाशकीय- जयकान्त मिश्र समज्ञा, मिथिला सांस्कृतिक परिषद् ,कोलकाता

२. करुणेश झा- पृ-६३ जयकान्त मिश्र समज्ञा, मिथिला सांस्कृतिक परिषद् ,कोलकाता

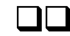
३. प्रो. मायानंद मिश्र ३२/८/२०२३ मैथिल समाचार वर्ष-४५अंक-१

४. इन्द्रनाथ झा- पृ-५८ जयकान्त मिश्र समज्ञा, मिथिला सांस्कृतिक परिषद् ,कोलकाता

५.श्री रामदेव, २२/२ १९६५ मैथिल समाचार, वर्ष-४५ अंक-१

६. पंचानन मिश्र- पृ.६ जयकान्त मिश्र समज्ञा, मिथिला सांस्कृतिक परिषद् कोलकाता

७. श्रवण कुमार चौधरी- पृ.-६१ जयकान्त मिश्र समज्ञा, मिथिला सांस्कृतिक परिषद् ,कोलकाता



अपन समस्त जीवन मैथिलीक लेल उत्सर्ग करएवाला भाइजी मैथिलीक लेल सर्वस्व त्याग कएने छलाह। आचारक एक अंश खान पानक शिथिलताक मुख्य कारण सेहो हमरा जनैत एहि मैथिलीक भक्तिक अंश छलन्हि। मुदा तैं अपन मैथिली भाषाक कोनो विवादमे, कोनो लड़ाइमे ओ कोनो नैतिकताकेँ तिलांजलि देने होथि से हमरा ज्ञानमे नहि अछि। हुनकर मैथिलीक प्रति निष्ठा सर्वोपरि छलनि।

- श्री रमाकान्त मिश्र

गप्पक फोड़न



अगहनक पूर्णिमा बीति गेल रहैक।

पूसक आरम्भ। साँझ हेबामे कनिक्के भाङठ। मामी सजमनि छीलैत रहथि आ हम रही जलखै करैत। भूजल चूड़ा आ तरल माछ।

बथुआ साग लेबैइ अए ऽऽऽ......

मामी ?

कपार कड़ा क' क' आ पपनी तानिक' हम मामी दिस ताकल । ओ बजली अपनहि तँ अओतइ? से सत्ते कनी काल वाद सागवाली अपनहि आइलि।

बेश कठमस्त। पहिरने फड़गज्जी ननगिलाट। चाकर चेहरा, रूच्छ केश। हाथ पयर बेश सोंटल........

कोना देबैइ?

ल' ने लू ? अब अतबे बचलइ अ'.......

लेबइ की, से ने कहू?

छ' गो पइसा लागत।

ठोर आ नाकमे आङगुर सटाक' मामी कहलथीन गे मइओ, हमही भेटल छी अहाँ कँ? अनका ठकिअउ ग'.......

सागवाली गुनधुनमे पड़ि गेलि, बाजलि, की देबै?

दू टा पइसा भेटत। बथुओ सागक कोनो कमी।

नइँ महतमाइन। एहेन बढ़िआ साग नइँ भेटत, दीअर पर सँ खोंटिक' अनलिअइए....चारिओ टा पाइ कोना ने देबै?

ईह!



यात्री

हमरा ई मोल-भाओ असह्य लागए। दू-एक पइसा लए कतउ एते झउहरि भेलइए?

मामी अनासक्त भावेँ धान उसिनबाक दु-चुल्हिआ लग जाक' बैसि गेली आ मिझाइत आँच कँ उसका देलथीन। दू टा टीनमे धान उसिनल जाइत रहैक...

तँ, की कहै छिअइ मलिकाइन?

कहलउँ तँ।

एको गो पइसा आउर दितिअइ।

तीन सँ तिरपट हैब तइओ नहि...!

सागवाली पथिआ उनटा देलकइन आ ठाढ़ि भ' गेलि, लिअ' मलकाइन आब भेल?

अपना आग्रहक पूर्ति देखि मामी कैँ प्रसन्नता भेलइन।

दु-चुल्हिआक मुँहमे हबर-हबर भुस्सा झोंकिक' उठली आ अधन्नी आनि देलथीन सागवाली कैँ।

ओ अपन पथिआ काँखतर दबओलक आ आङन सँ बहरा गेलि।

पछाति नहि रहल गेल तँ मामी कैँ कहलिअनि, जाउ, अहूँ धरि खूब छी! ई कहाँ बूझल छलए जे अपने कोनो मारवाड़ी कन्यारत्न थिकहुँ....

मामी भरि गाल पहिने हँसलीह तखन बजलीह, से की?

से की! गरीबक घरमे दू टा पइसा आओर जइतइ तँ तइसे अहाँक की होइतइ? हम तँ मामा कैँ ई बात चिट्ठीमे लिखबइन.....

बेश् ! ब'ड़नी!! जेहने माम तेहने भागिन, अपना लक्ष्मी कैँ ई सब सिखा देबइन...

मामी हँसइत-हँसइत भनसा घर दिस गेलीह।

हम गंजिए पहिरने बहरेलहुँ आ सोर पाड़लिए।

ओ आइलि तँ दू टा पइसा ओकरा हम अपना दिस सँ देलिअइ आ पुछलिअइ जे एहि दू कइंचा बेत्रेक तोहर काज अकाज होइतउ।

कृतज्ञता द्वारे सागवालीक दुनू आँखि चमक' लगलइक। ओ बाजलि, बाबू, अधेलीक लेबै नीमक आ डेढ़ पइसाक लेबै कडू तेल....आ बुढ़िया बेराम छै, भरि राति ढों -ढों करै छै, गूड़ नेने जेबइ.... मालिक आब नइँ बचतै बुढ़िआ बेटा कैँ चिट्ठी लिखबाक' भेज देलिअइअ'..

फेर ओ अपन चल जाइत रहलि।

आ ओही राति हम स्वप्न देखल जे एक टा मरणासन्न अकिंचन बुढ़िआ सोझाँमे आबिक' बैसि गेल, लगहिमे फराठी छैक, धयल, दुजू हाथमे दू भेली गूड़, कउखन एक टा चटइए कउखन दोसर। आ बीच-बीचमे किछु बाजिओ रहल अछि, मुदा स्वगते?

स्वप्नस्थ बुढ़िआक ई स्वगतोक्ति पहिने तँ बुझबामे नहि आएल, परंच पाँछा बुझिलिऐकः

ई दू भेली गूड़ खाक' हम दू बर्ख आरो जीबै की!

इएह रहैक बुढ़िआक स्वगतोक्तित!

दोसर दिन मामी कैँ स्वप्नक ई कथा कहलिअइन तँ बजलीह, अहाँक कोन? अहू पर किछु ने किछु गढ़िए लेबै की? देखब भगिना बाबू, गप्पक ई फोड़न छिड़िया ने जाए!

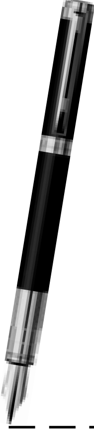
वैदेही / दिसम्बर, १९५४



हुनक काजक चर्चा होएत। हुनक जे उत्साह छल, भाषा हित लेल जे असीम ऊर्जा छल, से प्रणम्य अछि। ओहि भावनाक आदर करैत छी आ आशा करैत छी जे आबए वला समय मे ओहने संकल्प पूरित भावना वला बहुतो मैथिल जन्म लेताह। जयकान्त बाबूक निधन इलाहाबादमे भेल। हुनका आजीविका इलाहाबादे देलक। ई प्रवासी मैथिल मैथिली लेल जतबा कए सकलाह, से अविश्वसनीय लगैत अछि। एखन लोक मैथिली बजबामे धखाइत अछि, से चिन्तनीय अछि। ओ मैथिली बजबामे जे गौरव-बोध करैत छलाह, से देखल अछि। मैथिली सभ तरहेँ प्रणम्य आ आदरणीय अछि, एहि लेल हुनका हृदय मे जे आत्म-विश्वास आ आत्माभिमान छल, से अतुलनीय अछि।

- जीवकान्त

भरदुतिया



ओना बूझी तँ किरण दाइ केँ कोनो सुधियो ने छलनि जे काल्हि भरदुतिया छियै। जन्मदिन तँ अपनो मोन छनि, सैहबोक आ धीयोपुताक। सेहो तारीखक हिसाबे। एहन फूहड़ पाबनि– तिहारक स्मृति तँ छलनि, मुदा अपनो कहियो कैने छथि, से नइँ मोन छनि। हुनका धीया पुता केँ तँ बुझलो ने छनि जे कोन पाबनि कोन तिथि केँ होइत छैक। तँ सैहेब जखनि आबिक' कहलथिन जे हुनकर अंजनी भैयाक टूर कार्यक्रम काल्हि ओही शहरमे छनि तँ किरण दाइमे कोनो प्रतिक्रिया नइँ भेल छलनि। एतबा ओ जनैत छलथिन जे अंजनी भैया केन्द्रमे मंत्री छथिन आ संबंधे ममियौत छथिन। मुदा हुनकर कोनो नीक लोकक चित्र मोनमे नइँ छनि। हुनकर लखेरापनीक मारि किरण दाइ ताहि तरहे भोगने छथि जे अद्यावधि आत्मामे टहकैत रहैत छनि। प्रायः तँ किरण दाइक मोनमे बहुत प्रच्छन्न घृणा एक टा द्वेषक रूपमे फेंच उठाक' फुफकारि उठलनि। बजली, "अच्छा! केना माननीय मंत्रीजी केँ एक टा निरीह पिसियौत मोन पड़लथिन? हमरा तँ भेंटो भेना बीस बरख सँ उपरे भेल हैत ।"

सैहेब हँसैत बाजल छला, "से जानथि भाए आ जानथि बहीन। हम तँ समदिया छी। नोतो लेता आ बहिनिक अन्नो खैता।" तकर बाद पुलकित होइत सांगोपांग ओ खिस्सा किरण दाइ केँ सुनौने छलथिन, केना चीफ सेक्रेट्री हिनका बजौलथिन, ठाढ़ भ' क' हाथ मिलौलथिन आ मंत्रीजीक कार्यक्रमक एक प्रति हिनका देलथिन। सैहेब बराबरि कठहँसी हँसैत रहला आ किरण दाइक मोन मनबैत रहला जे जाबत तक अपन कियो पुश करैवला नइँ रहैत छैक, ताबत तक कियो आगू नइँ बढ़ि सकैयए। बजला," आब एखने देखू ने। एक छन पहिने तक जे आदमी सोझ मुँह गप्प नइँ करितए, से मंत्रीजीक कार्यक्रम देखिते हाथ मिलौलक।"



धूमकेतु

मुदा किरण दाइ गंभीरे बनलि रहली। सैहेब चुप भेला तँ हुनका आँखिमे तकैत बजली, "हमरा तँ ई छगुंता लगैयए जे हम एत' छी, से ओ कोना बुझलनि ?"

सैहेब सिटपिटा गेला, "से कोना कहू?" एतबा कहिक' सैहेबक ठोर पर मुस्की ऐलनि आ बिला गेलनि। मुदा किरण दाइक चेहरा पर गतान प्रकट भेलनि, "अपने नोत लेब' अबैत छथि कि निमंत्रित कयल गेलाहए ?"

सैहेब टाइ खोलैत आलमारी दिस बढ़ि गेला, "निमंत्रित के करतनि? अजुको दिनमे निमंत्रण होइ छै?"

किरण दाइ पंडितक बेटी छली। बजली, "स्मरण तँ कराओल जा सकैत छैक।"

सैहेब तिलमिलैला, "एह, भाए एक साँझ खैता, तै लए कत्ते जिरह पसारने छी!"

किरण दाइक आँखिमे जे भाव प्रकट भेलनि, से सैहेब नइँ देखि सकलथिन। अइ बहुत सामान्य प्रश्नक जबाबमे हुनका ओ सभ टा ब्यौरा देब' पड़ितनि, जे हुनका अंतस्मे काँट जकाँ गड़ैत रहलनि अछि। कनेक काल गुम रहली आ फेर साँस छौड़ैत बजली, ''खैता तै लए तँ नइँ कोनो। मुदा सवाल स्टेटसक छैक ।''

सैहेब हिनका दिस तकलथिन, मुदा रहि गेला गुम्मे। किरण दाइ बात पूरा कैलनि, ''मंत्रीजीक बहिनोइयोक कोनो स्टेटस छनि कि नइँ ? हुनका संग दिल्ली सँ जे लश्कर औतैक....।''

सैहेब जल्दी सँ बाजि उठला, ''धत्, ओइ लश्कर सँ हमरा की?'' आ कपड़ा बदलै लेल बेडरूममे पैसि गेला।

किरण दाइक कल्पनामे सिनुर- पिठारक हेतु पसरल अंजनी भैयाक हाथ झलकलनि। बलिष्ठ कब्जा, आँगुरक पोरे-पोरे जनमल काँट सन-सन केश...किरण दाइ कैँ भेलनि जे ओ कब्जा हुनका मुट्ठीमे दबा लै लेल आगू बढ़ि रहल छनि। ता सैहेब कपड़ा बदलिक' सिगरेट लेसैत बहरैला। किरण दाइ केश झटकिक' ठाढ़ि भेली आ बजली, ''एना करू... डीनरक अहाँ एकटा मेनू बना लिय' आ कोनो कैटरिंग संर्भिस सँ फिक्स अप क' लिय' ।''

सहैब गाउनक फीता बन्हैत लहकि उठला, ''अहाँ अजब लोक छी! लोग अमन्ध समन्ध जोड़िक' मंत्री सभ सँ लाभ उठबैयए... अरे एहन- एहन आगत- स्वागतमे भेल खर्च-वर्च...ई तँ लगानी छियै भाइ, तीनक तेरह ल'क' औतै।''

'लगानी' शब्द पर किरण दाइ पलटिक' सैहेब दिस तकलथिन तँ सैहेब कनखी मारि देलथिन। किरण दाइ आँखि पर गॉगुल्स चढ़ा लेलनि। मुदा दाँत पर ठोर कसा गेलनि। गॉगुल्सक तर सँ किरण दाइक दृष्टि अपन हाकिम स्वामीक खल्वाट माथ, नमड़ि आयल धोधि पर सँ होइत हुनक पयर तक जाक' रुकि गेलनि। बजली किछु नइँ, मुदा हुनका साँसक एक टा एहन अलक्षित धाह छलैक जे सैहेब एतवा दुत्कारियोक' अपने लजा गेल छला। किरण दाइ लंबा साँस लेलनि आ बजली, ''दोसर बात...भरदुतियामे की-की होइ छै...पान-सुपारी...अगरम-बगरम से जुटबै लेल ठाकुर कैँ बजा दिय'।''

किरण दाइ बड़ी काल धरि सैहेबक पेट सँ पाछाँ छाती आ ताहि पर उगल कारी- उज्जर केशक जंगल के देखैत रहली। सैहेब बजला, ''ओ. के., मुदा ई पूजा-पाठ हेतै कत'?''

किरण दाइ कहलथिन, ''एही हॉलक सेंट्रल टेबुल हटा देबै, पूजा-पाठ भ' जेतै, फेर सेट क' देबै।''

सैहेब छड़पला,'' आइडिया! अइ टेबुल कैँ बाहर किऐ ल' जायब? एही ठाम किछु सिम्पुल नाश्ताक प्लेट्स...अरे, अँकुरी-मखान...अही पर सजा देबै। अंतहिया लोक देखतै किने मिथिलाक भाइ-बहिनिक पाबनि।''

किरण दाइ फुसफुसैली, ''तखनि एना करू, अइ सभ संगे किछु स्वीट्स सेहो मिला दियौक। लश्करमे ओतबे चलतैक।''

सैहेब कैँ पूरा कार्यक्रम मनोनुकूल रूप लैत बूझि पड़लनि। आश्वस्त भेला जे किरण दाइ लगानीक मतलब आब बूझि रहलथिनहें। किरण दाइ कैँ भेलनि, लोक जत्तेक बेसी रहतै, ओ ततेक निर्भीक रहि सकती। सैहेब उत्साह सँ बाजि उठला, ''भेरी गुड।''

किरण दाइ मुस्कियाइत रहि गेली।

रतिनाथ कैँ मोने-मोन होइन जे बहिनिक खिस्सा तँ हुनका माए बहुत सुनौने छथिन, मुदा भेंट तँ दुइए बेर भेल छनि।एक बेर तँ भगवती कैँ छागर दै लेल गाम आयल रहथिन, तखन आ दोसर बेर परुकाँ, जखन ई नोत लेब' गेल छला। परुकाँ नोत तँ बहीन नहिएँ लेलथिन। अइ बेर देखा चाही। हुनका झोड़ामे सभ सँ तरमे लुंगी छलनि आ तै पर एक टा पतरकी प्लास्टिकक झोड़ीमे थोड़ेक उसनल सारुक, चारि टा कागजी नेबो आ गोट दसेक धात्री। तै पर

सँ गमछा छलनि, जकर एक खूँट पर दस-बारह ग्राम मखान, टू टा जिलेबी आ एक गद्‌दी सिनुर बान्हल छलनि आ दोसर खूँट पर पाँच जोड़ जनौ आ पाँच टा सुपारी।

पूरा हुब्बा सँ सीना तनने आ झोड़ा कैँ छातीमे सटने रतिनाथ निधोख बहिनिक कोठी पर पहुँच तँ गेला ,मुदा ओत' हाँजक हाँज सिपाही कैँ देखिक' हियओ हारि देलनि। कोठीक बाहर-भीतर आयब- जायब बंद छलैक। सड़क पर तक पुलिस सभ सह-सह करैत रहै। रतिनाथ पहिनें अचकचैला, तखन सहमला। उत्साह ठंढ़ा भ' गेलनि। मुदा ता गेट पर ठाकुर जमादार पर नजरि पड़लनि। रतिनाथ ओकरा चीन्है छलथिन। परुँको आयल रहथि तँ ओ भेटल रहनि। रतिनाथ काते-कात सहटल- सहटल ठाकुर लग पहुँचि गेला। मुदा ठाकुर तमकिक' पुछलकिन,"क्या है?"

रतिनाथ साहस सँ काज लेलनि, "भीतर जेबै।"

ठाकुर बाज जकाँ हाथ सँ झोड़ा झपटि लेलकनि आ लुंगी सहित सभ किछु कैँ चाँगुरमे ल'क' बाहर घीचिक'झोड़ा झाड़ि देलकै आ फेर सभ टा ओइमे कोंचिक' रतिनाथक आँखिमे तकैत बाजल, "अहाँ कैँ तँ बहीन हैती किने ?"

रतिनाथ तोतरैला' "हँ, बेमात्रे... बुझू खासे।"

ठाकुर कैँ भरदुतिया मोन पड़लै। रतिनाथक हाथ सँ फेर झोड़ा ल' लेलकनि आ भरि-भरि बाकुटक' ओकरा उपर सँ टोबैत बाजल, "बेमात्रे बहीन ?"

रतिनाथ कननमुँह भेला, "बुझू खासे "

ठाकुर झोड़ा आपसक' देलकनि आ एक टा सिपाही संगक' देलकनि, जे हिनका ल'जाक' हॉलक पछुवति वला असोरा पर इशारा क' क' भागि गेल।

रतिनाथ झंझट सँ मुक्त नइँ भेला। झोड़ा नेने इतस्ततःमे कखनो हॉल तक जाथि, कखनो हॉल सँ उपर सीढ़ी तक पहुँचथि आ फेर आपस आबिक' एक टा बेंच पर बैसि जाथि। हॉल सँ ओइ पारक कोठलीमे बहुत लोक रहैक। रतिनाथ कैँ देखाइन एत्तै सँ। मुदा लोक सभक बगय-बाना देखिक' ओत 'तक जैबाक सहास नइँ होइन। दहिना कातक बालकोनीमे बड़का-बड़का डेकची सभमे लड्डू-अमिरती डिकल रहैक आ एक टा बड़का बोरामे मखान देबाल लगाक' राखल रहैक। असलमे ऐबाक अहलदिलीमे रतिनाथ रातियो एक्के टा रोटी खैने छला। मुदा तँ मधुर ल' लेबाक मोन नइँ भेलनि।

हठात् रतिनाथ कैँ लागल छलनि जे कएक टा मोटर एक्के संग कोठीमे पीह-पाह क' रहल छैक। हॉलक ओइ पारक कोठलीमे किछु हलचल भेलैयए आ चहल- पहल बढ़ि गेलैयए। हठात् दू टा बंदूकधारी पछुवतिक असोरा पर आबिक' रतिनाथ लगमे ठाढ़ भ' गेलनि। ता पता नइँ कोमहर सँ ठाकुर जमादार ऐलनि आ रतिनाथक हाथ सँ झोड़ा छीनि लेलकनि, " अरे स्साला, सबको फाँसी लगबाबेगा ।"

रतिनाथक झोड़ा मोचड़ाक' डेकची सभक दोगमे चल गेलनि। त्रस्त रतिनाथ सुनलथिन, ठाकुर बंदूक बला कैँ हुनकर परिचय देलकै, "साहब का साला...मिठाई की निगरानी ।"

बंदूक बला गुम्हरि-गुम्हरि दू-तीन बेर हिनका दिस तकलकनि, तँ रतिनाथ सहमिक' पायामे सटिक' ठाढ़ भ' गेला।

ठीक हुनका सामने बैठकमे भरदुतिया मनाओल जा रहल छलैक। पीयर बनारसी पर पीयर नकमुन्नी पहिरने बहिन दाइ पंजा भरे बैसलि ककरो हाथमे सिनुर- पिठार लगा रहलथिनहें। रतिनाथ नइँ चिन्हलथिन। नोत लेल भ' गेलै तँ बहिनिक ओ भाए गोड़ लगैक बदला हुनकर चेहरा कैँ आँजुरमे ल'क' डोला देलकनि। रतिनाथ ओझाजी कैँ पुलकित भ'क' दोसर दिस गर्दनि झुकाक' कठहँसी हँसैत देखलथिन। रतिनाथ देखलथिन जे बहिनदाइक चेहरा सिनुर जकाँ लाल भ' गेलनिहें। भाएक हाथ पर किर्री देब', लगलथिन, तँ भाए मुँह बाबि देलकनि। बहिनिक हाथ मुँह तक उठलनि। किर्री कट द' उठलै तँ जत्तेक लोक रहैक, से थपड़ी पाड़' लगलैक, "हियर-हियर...।"

फेर रतिनाथ कैँ बूझि पड़लनि जे खेला उसरि रहलैयए। ओझाजी एम्हर सँ ओम्हर दौड़' लगलथिन आ भाए बहीन दाइ कैँ पाँजमे नेने भरि बाकुटक' हुनक कनहा पकड़ने बाहर जा रहल छनि। रतिनाथ देखलथिन जे ओझाजी बिगजी सँ सजाओल गेल चानीक प्लेट नेने देहरि छेकने ठाढ़ छथिन। मुदा ओ, जे बहीन कैँ पकड़ने ठाढ़ रहनि, कहलकनि, "आब ई की? भ' तँ गेलै।" ओझाजीक बत्तीसो दाँत देखार भ' गेलनि। रिरिएलथिन, "एह, एहनो भेलैयए? मुँहो ने अञिठौलियै....आइ लोक बहिनिक अन्न खाइ छै।"

रतिनाथ ओझाजीक कठहँसी आ ओइ पुरुखक आँखिमे उमड़ि आयल तिरस्कार, दुनू संगे देखलथिन। ओ पुरुख बजलै, "भ' गेलै सभ टा। किर्री अन्न नइँ भेलै? मुदा अहाँ जे एहन प्रचंड छी जे हमर सेक्रेट्रीक मार्फत प्रोग्राममे संबंधक दोहाइ दैत संशोधन करबै छी! केना अहाँ प्रशासनिक सेवामे आबि गेलौं ?"

रतिनाथ देखलथिन जे ओझाजी तँ खी-खी-खी-खी क' क' हँस' लगलथिन आ बहीनदाइ अही दोपखियामे भाएक पाँज सँ छुटि गेलथिन, जेना गैंची असावधान मलाहक हाथ सँ छुटि जाइ छै। ओ आदमी मोटरक केबाड़ीक दोगमे घोसिया गेलै तँ ओझाजी पुनः हँसिते बाजल छला, "तखनि अञिठ मुँहे धो लेल जाओ।" आ मीना कयल चानीक गिलास तरहत्थीमे नेने आगू बढ़ौलथिन। ओ आदमी एक घोंट पिलकै आ दोसर घोंट कुरुर क देलकै, "दुरजी, गिलास चानी के आ पानि तै में इन्होर?" आ उदास बहीन दिस तकैत बजलै, "अच्छा कीरू, बाइ। दिल्ली आ एक बेर।"

ओझाजी उत्फुल्ल भ'क' मोटरमे सटि गेल छलथिन', "बट हाऊ? सो लॉङआइ एम नॉट पोस्टेड इन देलही...।"

मुदा रतिनाथ देखलथिन जे मोटर बिदा भ' गेलैक। आश्चर्य लगलनि जे एक छनमे पूरा मजमा कोना बिला गेलैक। डीनर हॉलमे यत्र-यत्र डिश छिड़ियाएल छलैक। जहिं-तहिं आधा-सौंस लड्डू-अमिरती ओंघराएल। कत्तेक मधुर तँ ओहिना सौंसे रहै। रतिनाथ कैँ एक मोन भेलनि जे सौंस लड्डू-अमिरतीक गनती क' लएथि। मुदा ता बूझि पड़लनि जे किछु लोक आपस आबि रहल छैक। रतिनाथ सावधान भ' गेला।

किरण दाइ अपन हाकिम पतिक एहि आयोजित शोमे नायिकाक भूमिका निभबितो हर्षित नइँ छली। आपस ऐली तँ उपर जेबाक सीढ़ीक निच्चेमे एक टा कुर्सी घीचिक' बैसि गेली। सैहेब आपस ऐला तँ बहुत हर्षित छला। किरण दाइ कैँ निच्चाँमे बैसल देखिक' हुनका पीठ पर हाथ दैत बजला," इनभेस्टमेट हैज क्लिक्ड डियर। आब चलू दिल्ली।" जेना बहुत पाकल घावमे सँ पीज स्वतः बहि जाइत छैक, किरण दाइक आँखिमे छेकल क्रोध आ अपमान बह' लगलनि। मुँह सँ बहरैलनि, "अहाँ तँ कहने रही जे ओ अपने प्रोग्राम देलथिनहें ?"

सैहेब एक टा लड्डू कैँ दाँत सँ कटैत बजला, " ई कोन एहन बड़का बात भेलै जे तै लए अहाँ...अजब लोक छी..."

किरण दाइक आँखि सँ ज्वाला फेकलकनि,"दस लोकमे ओ की कहलनि से अहाँ सुनलियै?"

सैहेब फानिक' एक टा अमिरती हाथक' ल' लेलनि। उदास स्वरमे बजला," अरे भाइ, ओ तँ बात कैँ प्रोसेस करैक तरीका छियै। हुनका की पता छनि जे आइ भरदुतिया छियै आ अहाँ एत' छी? सेहो हुनकर सेक्रेट्री हमर क्लासफ्रेंड छी। ओकरा कहलियै। बस।"

किरण दाइ किछु बजली नइँ। कनेक काल शून्य दृष्टिएँ पतिक मुँह दिस तकैत रहली आ फेर आँचर सँ मुँह झाँपि लेलनि। सैहेब अप्रतिभ भ' गेला। एक टा लड्डू हाथमे ल'क' कनहा उचकाक' मुँह बिजका देलथिन आ सीढ़ी दिस बढ़ि गेला।

रतिनाथ कैँ बहीन कैँ कनैत देखिक' उत्तेजना सँ देह झनझनाए लगलनि। डेकचीक दोग सँ अपन झोड़ा निकालिक'

छाती मे सटा लेलनि आ सहटल– सहटल बहिनिक लग पहुँचि गेला। बहीन प्रायः आभास सँ मुँह उघारि नेने छलथिन। आँखि दुनू टा अढ़ूल भेल छलनि आ ठोर पूरा–पूरी स्थिर नइँ भेल रहनि। तैयो खखसिक' नहुँएँ सँ पुछलथिन,“ अरे अहाँ कखनि एलौं यौ ?” रतिनाथ प्रफूल्लित भेला, बहीन दाइ चीन्हि गेलथिन। गोर लगैत बजला, ‘एँह, बड़ी काल। ओ सभ आयलो ने छलैयए, तखने।” प्रमुदित रतिनाथ झोड़ामे सँ प्लास्टिकक झोड़ी बहार कैलनि आ आगूक' देलथिन। किरण दाइक चेहरा पर कौतुकपूर्ण स्मिति पसरि गेलनि। हँसिक'बजली,“बाप रे, अहाँ तँ ढेरी सनेस अनलौहें यौ।”

ता रतिनाथ बाकीयो वस्तु सामनेमे पसारि देलथिन। किरण दाइ बहुत प्रसन्न भेली। सिनुरक गद्दी खोलिक', चुटकीमे लैत बजली,“ एक एत्ते किऐ कैलौं? बाबू छथि कि ने नीके?”

किरण दाइ प्रकृतस्थ भ' गेलि छली। एक चुटकी सिनुर सीथ पर लेलनि आ एक टा सारुक उठाक' सोह' लगली “अहाँ कत' नुका गेलौं? चलू पहिने नोत लेब। अहाँ कें भूखो लागल हैत।” फेर रतिनाथक डेन पकड़ैत बजली,“आउ, पहिने ओइ नल पर हाथ–मुँह धोइ दुनू भाए बहीन।”

आह्लादित किरण दाइ भाए कैँ नोतै लेल बैसली तँ आँखिमे वैह ज्योति छलनि जे यम कैँ नोतै काल यमुनाक आँखिमे छल हेतनि। ता सैहेब उपर सँ निच्चाँ एलथिन। किरण दाइ रतिनाथक छोट आँजुरमे नोतक पदार्थ सरियाक' दैत छलथिन। चेहरा पर अलौकिक आभा पसरल छलनि। दृश्य देखिक' सैहेब तुर्छ होइत बजला, “ आब भरि दिन नोते–नोती चलतै की?”

मुस्कियाइत किरण दाइ भाएक हाथ धोक' ठाढ़ि भ' गेली। रतिनाथ चट द' गोर लागि लेलथिन। किरण दाइ दुनू हाथे हुनकर माथ हँसोथैत बजली, “ नोता–नोती तँ एखने टा भेलैयए। ओ तँ इनभेस्टमेट छलैक।”

सैहेब जोर सँ कुर्सी कैँ रगड़िक' घिचलनि आ बैसैत बजला “डैम दिस नोता–नोती, पाबनि–तिहार....।”

रतिनाथ आतंकित भेला, मुदा किरण दाइ आश्वस्त मुस्कियाइते रहली।

(१९९१)



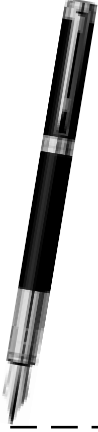
डाक्टर मिश्र अपन शोधपरक रचना द्वारा मैथिली साहित्यिक गौरवमयी परम्परा कैँ आधुनिक युगमे पुनर्जीवित कयलनि और हिनक एहि रचना दृष्टिक पाछा एकटा सुचिन्तित और सुविचारित समीक्षा छल। हिनक व्यक्तित्व और कृतित्वक मूल्यांकन नहि कयल जा सकैत अछि। मैथिली भाषा और साहित्य मध्य हिनक समतुल्य नहि अछि, हिनक अपन गरिमा छन्हि।

डाक्टर वीणा ठाकुर

साभार- जयकांत मिश्र समज्ञा

जीवन, काल आ कलेस

-विभूति आनन्द



भेंटघाँट तँ नहियें, गप्पो-सप नहि. कत्ता वर्ष भ' गेल। हम अपन निज संसार सिरजि लेलहुँ, ओ सेहो। मगन छी. ओहो भरिसक...

ओना कहियो काल, मास-दू-मास पर, आकि ताहू सँ बेसी, ध्यानमे आबि गेल करय. चिंतित होब' लागी. अतीत मन पड़' लागय. मुदा अपना कैँ विचलित होइ सँ बचा ली, कोनो-कोनो आन मानसिक व्यापारमे स्वयं कें जोति ली. रमि जाइ...

फोन नहि करिऐ. शुरू-शुरूमे मुदा करिऐ. बादमे अपनो लागय जेना नै करक चाही. फेर तँ एहि लेल मोन कें मनब' पड़ि जाय. मोन कें धन्यवाद, मानि जाय !

आब ओकरे जखन मोन औनाइ तँ हालचाल पूछि लिअय. मुदा बादमे सेहो नहि. एक बेर छौ मास, कि बर्ख दिन बाद मेसेज कयलक. भरिसक कोनो काज रहै. मुदा तुरंते बुझा गेल जे काज एकटा बहन्ना रहै. आ से मोहित कयलक. आखिर क्षरण होइत संबंध-बंधमे एहि तरहक अटूट धारा अपवादे छलै...

असलमे संबंध जोड़बाक, चाहे घर-परिवार हो, कि सर-समाज, स्त्री-मोन केर अहम भूमिका रहैत अयलैक अछि. लगैत अछि, अधिकांश स्त्री-मोन अंदर सँ कोमल आ भावुकता सँ भरल रहैत अछि. स्मरणीय जे एतय अपवादक गप नहि क' रहलहुँ !

आ से कहि रहलहुँ, ओ बहुत रास आने-माने क' क' कुशल-मंगल बूझि लेने रहय. फेर बाइ ! फिर मिलेंगे ! मुइल नहि छी !... आदि-आदि.

आश्वासन सभ दिन एक्के रंगक ! आ झूठ सेहो तदनुसारे. से ओकर झूठमे मुदा एक गजब केर मिठास रहै ! आ से ओकर विवशता सेहो भ' सकैत रहै. ओ हमर मोनकैँ दुखी नहि करक जेना सप्पत खा लेने रहय !


विभूति आनन्द

आ से कह' चाहलहुँ जे बहुत रास किंतु-परंतुक बादो ओकर एहन सन मोन हमरा मोहित करय...

अंतिम दिन. प्राय: ओकर अंतिम दिन सेहो ! हँ, ओ बहुत दिन सँ मोन पड़ैत रहैत छलि. किएक, से नहि जानि !

आ से कोन एहन टेलीपैथी रहै, ओ कोना-ने-कोना अवसर निकालि क'मेसेज कयलक. फेर तँ लागल जेना हमरो अन्दर ठंढीक बोध भेल...

आ से बिनु आहे-माहे केर शुरू भ' गेलि- अहाँक देल 'लेक्चर' त' 'फेयर' भ' गेल ! पैघ भ' गेलै. बोरिंग त' नै हैतै न !

– जे किछु हो, पठबा दिअ. देखि लेबै

– अरे नाटक वला कहि रहल छी !

– अच्छा

– जी

– एमहर बहुत बीमार चलि रहल छी

– की भेल

– अनेक-अनेक कारण...

– मतलब

– बहुत रास रोग जेना...

– घरमे शांति त' इया न !

– हँ. शरीर सँ...

– ओफो..., डॉक्टर स' नै देखेलौं

– चिह्निते छी...

– नीक जकाँ... डरपोक्का जे छी!

– हा हा हा...

– जा क' देखाय लिअ डॉक्टर स' चुपचाप !

– बड़ मोन पड़ै छी !

– हमरो

– की करबै

– हँ

– एक बेर देखय के मोन अछि. से मुदा आब जेना सपना अछि...

– अरे नै ! ई कोन बड़का बात छै भक्...

– हमर मोनमे सएह सभ अबैत रहैए. किएकि अहाँक वर्तमान हमरा स' एकदिन झगड़ि गेल छलय. एखनो तकर निशान देबाल पर छैके, हमर घरक देबाल पर..

– हमर माथो पर...

– कथी के

– चोट के ! माथ फुटि गेल छल !

– ओह

– अच्छा छोड़ू, किछ नीक नोट्स लिखि दिअ ने, मोन ठीक हुए त' !

– केहन बात करै छी ! ओना अहाँ लग अपने बहुत अछि !...

– जाह, अइ दिस ध्याने नै गेल !

– हूँ. अरे हँ, रफ जे कएल अछि, पठा दिअ !

– ठीक छै

– एक दिन पहिने कहि देब...

– अखन त' ओहि दिनक लेक्चर फेयर कय रहल छी...

– ओहो त' एकबेर हमरा स' देखा लितौं

– ई त' अहाँक देखल इए !

– अच्छा, हमरा आन किछु भेल.

– नया त' देखाइये लेब... बट हे, गोर लागै छी, डॉक्टर स' देखाइये लेब !...

– बिनु अहाँक..., आशाक दीप अहाँ रही...

– एना नै कहू

– हम झूठ नै बजै छी, अहाँ लग

– बूझल इए, टेक केयर...

– फेर कदाचित ऊर्जावान भ'...

– हँ, बाइ...

– मुदा अहाँ नै भेटब से बुझैत, बाइ बाइ !...

– किए ने भेटब, जरूर भेटब !

– बड़े घर की बेटी...

– ओह...

– बाइ !

– ओके बाइ...

हँ, मुदा आइ ओ एहि संसारमे नहि अछि. मुदा हमर संसारमे तँ अछि! आ से बिना नागा. जें कि आब ओ आमलोकक 'विजुअल्स'मे नहि अछि, तें नहि अछि...

आ से भने नहि अछि. जाधरि ओ रहलि, अनेक-अनेक तरहक उपालम्भ, अनेक-अनेक तरहक मानसिक यंत्रणाक शिकार होइत रहलि. आजिज भ' गेलि रहय. अंतमे तँ अपनो सँ. आब से निके भेलै, गॉसिप सभक फ्रेम सँ बाहर अछि.

आब ई अदृश्य-दृश्य जीवन ओकर केहन छै, के कहत ! जखन रहय, तखनो अपन जीवन लेल किछु नहि बाजय. आने लोक सभ जे बाजल करै... से तकरो ओ सुनय मात्र. आ अंदरे-अंदर कुढ़य. से फेर की सोचय अपन लोक पर, लोक-समाज पर, अव्यक्ते रहल. आब प्राय: रहिये गेल. आइ ओ कोनो तरहक फ्रेममे नहि अछि.

ओकर प्रेम-गाथा, अनेक-अनेक प्रेम-गाथा, अकल्पनीय प्रेम-गाथा, जहिया रहय, रहय जकाँ रहै. आ तें अनेक-अनेक ठोर सँ लेर जकाँ चुबैत रहय.

ओना से गाथा सभ रहलो होइ, से निस्तुकी के कहि सकत. ओ रहितय तँ कहितय. मुदा समाजक उपालम्भ ओकर त्वराक असमय हत्या क' गेलै. ओ गुम भ' गेलि रहय. से ओकर दुखी आत्मा जरूर ओहि मोन सभकें श्रापैत हैतै. मुदा आब बौक कैँ बजनहि की, बौक कैँ बौक भेनहि की !

एकदिन पुछलक– सुनू न, की करै छी !

– अहाँ संग चैटिंग

– भक्क, से नै...

– तखन

– हमरा बारेमे अहाँ की जनै छी ?

– मतलब !

– मतलब माने..., हँ !

– बाजू

– हमर चेहरामे एहन की छै !...

– की छै !

– सभ हमरा दिस...

– अच्छे

– आ से बच्चे सँ पागल भ' जाय सभ...

– अछा की !

– स्कूल स' जे घुरिऐ आकि जैऐ, छौंड़ा सभ सड़क पर 'चौक' स' फोटो बना देअय...

– से कोना बुझिऐ जे छौंड़ा सभ अहींक फोटो बनबैए!

– हाफ पैंट आ फराक पहिरिऐ

– आर !

– केश दुजुटिया रखिऐ

– से कोना, एना अहीं टा रखिऐ ?

– अपना स्कूलमे हमहीं एना केश रखिऐ. माँ कहै, ऐ स' माथा बान्हल रहै छै

– फेर

– छौंड़ा सभ देखि-देखि क' सीटी से बजबय !

– त' माँ-बाबूजी के, आकि मास्टरे साहेब के...

– से साहस नै होअय

– किए ?

– अरे माँ के कहितिऐ त' ओ उन्टे हमरे डाँटि दितय- एना अलगी जकाँ किए चलैत रहै छें जे...

– अच्छे

– आ मास्यैब के कहितियनि त' अनेरे आर लोक बुझि जैतय ! आ बाबूजी तक जँ ई सब फसाद चलि जैतनि त' ओ पहिल काज करितथि, पढ़ाइ बंद करा क' घर बैसा दितथि...

– अछा से !

– मुदा हम पढ़ाइ नै छोड़' चाही. हम पढ़' चाही...

– वाह

– से एकबेर जानिक' एकटा छौंड़ा संगे दोस्ती क' लेलौं ! आ से अइ लेल जे ओ आन छौंड़ा सभ स' बचाएत. छौंड़ा के चेहरा–मोहरा बलंठ जकाँ लागै...

– तखन !

– लेनी के देनी ! ओहो सएह बहरा गेल. ओ हमर आँखि छूबि कहय, कतेक नीक छौ गे ! हमरा ताइ पर गौरव होअय. तहिना कहियो ठोर, त' कहियो पाछू सँ पीठ पर हल्का मुक्का मारि डरा दिअय !

– अरे बाप रे !

– हँ, से बादमे अइ सभ के माने बुझलिऐ, जखन घरमे पहिल बियाह भेलै. दीदीक बियाह. फेर त'...

– हँ...

– स्कूल सँ बहरा गेल रही. कालेज आबि गेलहुँ.

– चलू बँचलौं, मुक्ति भेटल...

– नै ! एतौ त' लड़के सभ भेटल. से एत' डरक संग–संग उत्कण्ठा सेहो बढ़' लागल...

– की ?

– भक् जाउ ! अच्छा सूनू न, अनेरे बात के बतंगड होइत गेलै ! हम पूछ' चाहै छलौं जे अहाँ कोना–ने–कोना हमर फ्रेण्ड बनि गेलौं ! हम अहाँमे अपन सपना जीब' लगलौं. से आखिर हमरामे एहन की छै, जे नेनपन स' आइ धरि हमर संग नै छोड़ि रहलय !...

– आब एकर उत्तर त' हमरा लग नै अछि !

– अहाँ एना निराश नै करू ! गत दू–अढ़ाइ दशक सँ हम ई जिज्ञासा जोगौने जीबैत अयलौं जे क्यो–ने–क्यो एहन अपन भेटत जरूर, जकरा स' अपन चेहरा आ ई मोनजरुआ सौंदर्यक रहस्य जानि सकब... प्लीज !

– ओह नहि, नहि स्तुति नहि...

– एना किए यो !

– हमरो मोनमे किछु एहने सन सवाल चलैत रहल जे आखिर विवाहित रहितो एना किएक अहाँक प्रति...

– जा हे डरपोक्का...

आ एतबा कहैत स्विच ऑफ क' लेलक. आकि भ' गेलै. ई सभ सोचबाक होस कहाँ रहल छल. मोनमे बिहाड़ि उठि गेल रहय...

आइ ओ नहि अछि. आ से भनहि नहि अछि. जा धरि फ्रेममे रहल, ओकर सर्किलक समवयसी, समवयसी नहियो, ताहि फ्रेममे अपना कैँ राखि क' जीबय...

से बादमे तँ जेना ऊबि गेलि रहय. तैं छिटकलि घुरय. मुदा हमरा पर अंतहीन विश्वास रहै. आ दुनियाँक सभ टा तामस हमरे लग आबि उगिलय लागय– नै यो ओतय नै जायब ! ओतय ओ लफुआ सभ छै ! आ ओ जे नकुब्बा, गोरका छी न, से अंदर स' तहिना स्याह अछि. आँखिमे हमरा प्रति हवस छै ! मुदा ओकर दोस्त के सेहो कम क' नहि आँकियौ ! जखन मौका भेटै छै, फ्लर्ट करय स' नहि चुकैए ! आ ओ चोन्हुआँ त' हमर लाइफे चौपट्ट कर'पर बिर्त रहैए, रंग–रंग के अबलट...

हँ से एक हिसाब सँ नीके भेलै, ओ आब नहि अछि. रहैत त' जीनाइ मुश्किल भ' जैतै, आ आबय वला समय दिन–दिन आर बदतर भेल जइतै...

ओना बादमे अपनो बदलि गेलि रहय ! आ से हमरो सँ ! ओना हम अपना जनैत ओकर संग–साथ रह'मे कोनो तरह के कोर–कसरि नहि छोड़लिऐ. अपना भरि सतत लाठी बनल रहलिऐ. खैर...

बादमे तँ हम ओकरा लेल अदना सन भ' गेल रहिऐ. भेंट–घाँट बन्द, चैटिंग बंद, ओकर काव्यात्मक अंदाज, तरंगित हँसी आ 'एक शरीर दू देह' वला कॉन्सेप्ट सेहो जेना कल्पना भ' गेल ! ओकरा प्रति अनुराग तैयो...

...आ से आइयो स्तुतिक प्रति वैह राग–विराग, वएह सभ किछु ! मुदा कलेस जे...



जयकान्त मिश्र

– डॉ. भीमनाथ झा

संस्कृत– विद्यासिन्धु पितामह, पिता यशस्वी
गुरुवर आंग्लमहोदधि 'अमर' प्रखर वर्चस्वी
कर्मभूमि तपभूमि प्रयागे, स्वयं मनस्वी
मैथिलीक उत्थान काम्य–छी बनल तपस्वी

लिखि इतिहास मैथिली साहित्यक इङलिशमे
चारु प्रभा छिटकाओल जगभरि चारू दिशमे
आलोचन–सम्पादन–अनुसन्धान–निबन्धो
कोश–देखि सभ चकित अहँक साहित्य–प्रबन्धो

छल साहित्य अकादमीक आसन बड़ भारी
पाओल से मैथिली अहीँ बल–छी आभारी
दशवर्षाधिक तहिमे रहि भाषाक प्रभारी
कय संघर्ष विकास–द्वार खोलल हितकारी

शिशुशिक्षाक मैथिली–माध्यम हो अनिवार्ये
सम्प्रति यैह बनल अछि अहँक प्रमुखतम कार्ये
गाम–गाम घुमि–घुमि विद्यालय विद्यालय जा
अथक पथिक! एकसरे बढ़ल छी उठा ई ध्वजा

मिथिला प्रान्त बिना बनने नहि अछि उद्धारे
घूमथि श्री जयकान्त अही ले' द्वारे–द्वारे
सहलहुँ रहि बड़ शान्त, गेल थकुचल निज भाषा
कयलक सभ दिग्भ्रान्त, माटि मीलल अभिलाषा

पाञ्चजन्य फुकि बढ़ा देल रथ विजयवाहिनी
जगा देल चेतना अहँक वाणी प्रवाहिनी
अपन विजय निश्चिते जखन नायक जयकान्ते
शान्त भावसँ नहि बनि सकते मिथिला प्रान्ते

वीणावादिनि!

– डॉ. भीमानाथ झा

वीणावादिनी! गान करू
नवजीवनक ज्योति जन–जनमे
जगबय पञ्चम तान धरू
ठरल–झड़ल तरुसभमे अहिँ
नव पल्लव दान करै छी
कारी– झामर पिकक कंठमे
मधुमय तान भरै छी
जड़–चेतनमे, तनमे, मनमे
कन–कनमे नव जान भरू
वीणावादिनि! गान करू
उतरि अमरपुरसँ अवनी
पर आबि जखन विचरै छी
तखन अहीँ निज नव–नव कृति
सँ प्रकृतिक कोष भरै छी
हो भव–भार न भारत, भारति!
तेँ मति विमल प्रदान करू
वीणावादिनि! गान करू
उमड़ल जनमे नव उमंग
अहँ अबिर–गुलाल बँटै छी
किन्तु पड़ल–ठिठुरल–पिचैल–
सिकुड़ल हम काहि कटै छी
जड़मति तनयक हृदय–कुहरमे
करुणामयि! सद्ज्ञान भरू
वीणावादिनि! गान करू

(६.२.१९५६ बेगूसराय)

अन्तिम दर्शन : डॉ. अमरनाथ झाक

- यात्री

रिक्त कऽ गेलहुँ अप्पन क्षेत्र !
तकै छी आबहुँ अपलक नेत्र !
लेल अछि जे अंतिम निःश्वास
होइछ मिसियो भरि नहि विश्वास!
सूर्य मिथिलाक, भारतक चंद्र!
निखिल विश्वक हे अनुपम दीप
सुपरिचित रहय अहाँक निमित्त
जड़ि प्रज्ञाक, विवेकक छीप
ओह! झा साहेब, इ की कयल–
अनेरे की अन्तक पथ धयल?
अहाँकें रहय अभाव कथीक?
माँटि–जल ई लागल नहि नीक?
समय–कुसमय हुरपेटथिन राहु
डाँटि की सकथिन शरदक इन्दु?
पड़ल रहतै सितुआ मूँह बाबि
पऽरि नहि लगतै स्वातीक बिंदु
मनुष्यत्वक ओहने अभिमान
देखओत आब कतऽ के आन
कोन ठाँ छाहरि तर असंख्य
नवांकुर पाओत जीवन–दान
ओह! झा साहेब ई की कयल
रिक्त कऽ गेलहुँ अप्पन क्षेत्र!
तकै छी आबहुँ अपलक नेत्र!

मिथिला मिहिर / १६ फरवरी, १९६४

हम चढ़ल चराचर चाक उपर

- कविचूड़ामणि पंडित काशीकान्त मिश्र

हम चढ़ल चराचर चाक उपर अविराम घुमैत रहै छी
घुरमा–घुर–माझ पड़ल हसि आठोयाम झुमैत रहै छी

नव–नव कृति–आकृति देखि अपन सुख सपन मनहि मन आंकी
आ मरुमे भावी भावि अपरिमित कुसुमित नन्दन झांकी
हरि, हरि छाहरिओ टा न पा विश्राम घाम चुमैत रहै छी

पद–पदपर पुलकित प्राण कते प्राणिओ पीठ मम ठोकय
स्वेदक सरितामे सड़ितहुं लखि बीअनि परन्तु नहि होंकय
तैयो हम वाङ्मय बाङ लोढ़ि निःकाम तुमैत रहै छी

कलमे–साधन कलमे न तदपि, कहि हसय कतेक अज्ञानी
रस–बोरल–रसना, तैओ तव तबधल कहैछ विज्ञानी
सुनितहुं चिन्तन कोठीमे मन अभिराम गुनैत रहै छी

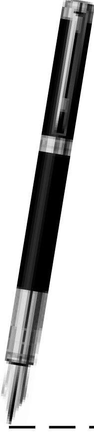
चलि विकट बाटमे ठेशी तजि कतेक, के जानय
चालनि बनलो तरबा पथसँ न उतरबाकेर गप मानय
मीलक पाथर पढ़ि–पढ़ि आगू अक्षाम जुमैत रहै छी

उद्देश्य–विषय जे देश हमर, आबहुं दूरस्थ जनै छी
लग जकां महान् लगनसँ बुझि थाकनि कनिओ न गनै छी
से निशा, निशासहिं हंस सुमिरि उद्दाम रमैत रहै छी

मिथिला मिहिर, २१ सितम्बर १९६०

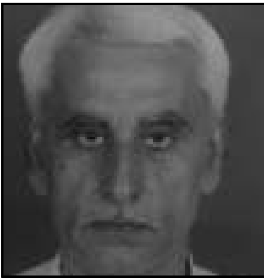
साक्षात्कार

'मैथिलीकेँ गुटबाजी खा रहल छै'- जयकान्त मिश्र



मैथिलीक हित लेल पुस्तक प्रदर्शनी लगा (१९६३) ओहिमे तत्कालीन प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरूकेँ बजायब, साहित्य आकदमीमे मैथिलीकेँ स्थान दिअयबा लेल तत्कालीन हिन्दीक वरिष्ठ साहित्यकार सभ सँ टक्कर लेब, सन १९६३मे साहित्य अकादमीक सदस्यक रूपमे चयनित होयब, माध्यमिक शिक्षामे मैथिलीकेँ स्थान दिअयबा लेल संघर्ष करब, मैथिली साहित्यक पहिल इतिहासकारक रूपमे परिगणित होयब, अनेक महत्वपूर्ण पोथीक प्रणयन कऽ भारतीय साहित्यक इतिहासमे मैथिलीकेँ सम्मानजनक स्थितिमे आनब, प्रयागमे रहि मिथिलामे आंदोलन करब-एहन-एहन असाधारण उपलब्धि सभसँ विभूषित एवं विभिन्न प्रकारक राष्ट्रीय सम्मानसँ सम्मानित भेल डॉ. जयकान्त मिश्र आइयो मैथिलीक एकटा सिपाही जकाँ संघर्षरत छथि। एक दिस जतय आइ बिनु पढ़ने, बिनु लिखने, बिनु इतिहासकेँ जनने कतेको तथाकथित साहित्यकार सम्मान पयबा लेल, गद्दी सम्हारबा लेल अपने आ अपन फौजकेँ लऽकऽ मारि करबा लेल फांड़ बन्हने छथि ओतय डॉ. जयकान्त मिश्र ८० वर्षक अवस्थोमे मैथिलीमे काज होअय ताहि लेल समर्पित छथि। सभ प्रश्नक उतारामे ओ काजकेँ अहमियत दैत बात आगां बढ़बैत छथि। आजुक मैथिली परिवेशसँ ओ बड़ बेसी दुखी छथि। आउ, हुनक एहि साक्षात्कारमे हुनक संघर्षक कथाक संग-संग मैथिली साहित्य, साहित्यकार, संस्था आ मैथिलीक विषयमे हुनक विचार जे सहज रूपमे अपने अभिव्यक्ति पौलक अछि तकर दिग्दर्शन करी।

''हमर वयस आगाँ जा रहल अछि, देह काज नहि करैत अछि, आँखि संग नहि दैत अछि, आब हृदयक धड़कन सेहो थीर नहि रहय दैत अछि तैयो मैथिलीक हितक नामपर इलाहाबादसँ दिल्ली, पटना आ दरभंगाक दौड़ लगा रहल छी। मुदा काज नहि भऽ रहल अछि। नहि भऽ रहल अछि काज आ जकरा-जकरा लग अपन लोक बुझि दौड़ैत छी सैह धोखा दैत अछि, सैह फूसि कहि कऽ टारि दैत अछि, बहटारि दैत अछि। लोक सभ बइमान भऽ गेल अछि आ मैथिलीक नाम पर गोलैशीटा करैत अछि मैथिलीकेँ स्थापित करबाक प्रयास नहि करैत अछि, खाली ओहिसँ पाबय चाहैत अछि।....की कहू अहाँ केँ, मैथिलीक रेल पटरीपर अबैत-अबैत उतरि जाइए आ लोक मूक भऽ बैसल रहैए।''



शरदिन्दु चौधरी

एके झोंकमे एतेक बात कहैत-कहैत हकमय लगैत छथि डॉ. जयकान्त मिश्र, जे मैथिलीक उन्नति एवं भारतीय भाषाक बीच मैथिलीक मान्यता लेल सन १९४३ सँ निरंतर काज कऽ रहल छथि। अंग्रेजीक निविष्ट विद्वान होइतो अपन मातृभाषाक लेल जाहि तन्मयता आ प्रखरतासँ ई काज कयलनि अछि ताहिसँ महान भाषाविद् सुनीति कुमार

चटर्जी हिनका जार्ज अब्राहम ग्रियर्सनक बाद दोसर महान व्यक्ति मानलनि अछि जे मैथिली कैँ भारतीय क्षितिज पर अनबा लेल अद्वितीय काज सब कयलनि।

जावत हम हुनकासँ कोनो समधानल प्रश्न साक्षात्कार हेतु पुछियनि तावत ओ पुनः शुरु भऽ जाइत छथि-

नव पत्रिका बेसी नहि चलाउ अहाँ सभ, नहि चलाउ। एहिमे सभटा 'एनर्जी' लागि जाइए। जे चलैए तकरे नीक जकाँ चलाउ। एहन- एहन वस्तु सभ छापू जे मैथिली-मिथिलासँ सम्बद्ध होइ, आन पत्रिकामे नहि भेटै। (कने रुकैत) जनैत छिऐ, स्वदेश किएक बन्न भेलै? स्वदेश एहि कारणे बन्न भेलै जे रेडियोसँ समाचार सुनि कऽ लिखल जाइत छलै। आन अखबार सँ समाचार संग्रह कयल जाइत छलै। समाचार-संकलन लेल लोक नहि रहै, पुरने समाचार छापल जाइ आ जाहि दिन रेडियो आ अखबारसँ समाचार संग्रह करयवला नहि रहथि ताहि दिन अखबारो ने बहराइ। धीरे-धीरे एहन समस्या सभ बढ़ैत गेलै आ अन्ततः स्वदेश बन्न भऽ गेलै। (कने दम लैत) जनै छी मिथिला मिहिर (पटना वला) बड़ काज कयलकै, ओ चलबो कयलै। एहि कारणे चललै जे ओहिमे जे भेटै से आनठाम नहि भेटै, लोककेँ ओहिमे मैथिली- मिथिलाक अनुकूल सभ वस्तु भेटै।'

डॉ. जयकान्त मिश्र यद्यपि लगभग ५० वर्ष सँ स्वयं एकटा मैथिली बुलेटिन 'मैथिली समाचार' प्रकाशित कऽ रहल छथि जे प्रारंभमे उच्च कोटिक सूचना दैत छल मुदा बादमे ओकर स्वरूप दिनानुदिन खराब होइत गेलै आ आब तँ ओकर उपादेयता सेहो नहि अछि। एकर कारण ओ अपन खसैत स्वास्थ्य, बढ़ैत वयस आ सहयोगीक अभाव मानैत छथि। मैथिलीक लेल समर्पित काज कयनिहार आ संस्थाक अभाव दिस ध्यान आकृष्ट कयलापर ओ पुनः बाजय लगैत छथि-

''जनैत छी सन ६३ मे हम दिल्लीक मथुरा भवनमे पुस्तक प्रदर्शनी आयोजित कयने छी जाहिमे स्व० जवाहर लाल नेहरु आयल रहथि। ओ बाजल रहथि जे अहाँक मैथिली नीक भाषा अछि। अहाँ सभ एहि लेल काज करु! काजे कयलासँ अहाँक भाषाकेँ मान-सम्मान भेटत, मान्यता भेटत। से जनै छी जँ हम ओहन प्रदर्शनी नहि करितहुँ, गोष्ठी नहि करितहुँ, मैथिली लेल लड़ितहुँ नहि, तँ साहित्य अकादमीमे मैथिलीक प्रवेश नहि होइत। तेँ हम कहै छी मैथिलीकेँ बढ़ाउ, एहि लेल निरंतर गोष्ठीक आयोजन करू, वाद-विवादक व्यवस्था करू, प्रतियोगिता आयोजित करू, पोथीक प्रदर्शनी लगाउ, मैथिलीक चर्च होइत रहत, काज होइत रहत।''

ठीके डॉ. मिश्र स्वयं जतेक काज कयलनि अछि से हुनका मैथिलीमे इतिहास पुरुष बना देलकनि अछि। साहित्य अकादमीमे मैथिलीक प्रवेश लेल जेहन संघर्ष ओ व्यक्तिगत स्तर पर कयलनि प्रायः दोसर व्यक्ति नहि कऽ पबैत आ आइ जे हमरालोकनि साहित्य अकादमीमे मैथिलीक अछि ताहि पर गर्व करैत छी, ओकर उदाहरण दैत आन अधिकार पयबा लेल लड़ैत छी, से नहि कऽ सकितहुँ। ओ सभ दिन मैथिलीक लेल किछु एहन-एहन काज करबाक इच्छुक रहैत छथि जे इतिहास ओकर साक्षी रहय। आइ मैथिलीकेँ जनगणनासँ हटा देल गेल छैक ताहि लेल सेहो ओ पटना उच्च न्यायालयमे केस कयने छथि। एहि मादे पुछलापर ओ बुमकार छोड़ैत बाजय लगैत छथि-

''की कहू यौ, एहू मुद्दा पर हम पटना उच्च न्यायालयमे केस कयने छी। एहिसँ सम्बन्धित सभटा कागज-पत्तर तारा बाबू (सीनियर ओकिल ताराकान्त झा) केँ दऽ देने छियनि। वैह ओकिल छथि एहि केसक। मुदा ओ गबदी मारिकऽ बैसल छथि। हाँ-हूँ सेहो किछु नहि कहैत छथि। बेर-बेर पटना दौड़ैत छी, भेट करैत छियनि, तैयो ओ ध्यान नहि दैत छथि। पता नहि मोनमे की छनि? (कने रुकैत छथि जयकान्त बाबू आ पुनः क्रोधित होइत बजैत छथि) बुझलहुँ नहि ई तँ राजनेता सेहो छथि ने। लालू -राबड़ीसँ

मिलल छथि। जनैत छी, बिहार लोकसेवा आयोग वला मोकदमाक जे निर्णय भेलै से चारि वर्ष पूर्वे हमरा बता देने रहथि जे एहिना निर्णय हेतै। आब अहीं कहू जे एते विलंब कयलासँ हुनका की भेटलनि। जे काज जल्दी भऽ सकैए तकरा तखने किएक ने कऽ लेल जाय। (एकाएक चुप भऽ जाइत आ फेर छथि।) मैथिल आ मैथिली संस्थामे बड़ शक्ति छै, मुदा ओ शक्तिक अपव्यय कऽ दैत अछि। आब जेना चेतने समितिकेँ देखू। ने ओकरा टाका-पैसाक कमी छैक आ ने साधनेक मुदा ओकरो काज करबाक पलखति नहि छैक। एकटा बुझू जे गलतीसँ एकटा नीक काज ओकरासँ भऽ जाइत छैक।''

बीचहिमे टोकारा दैत कहैत छियनि-एहि बीच बहुत काज भऽ रहल छैक, जेना प्रकाशन क्षेत्रमे मैथिलीक काज बेस मात्रामे भेल अछि, संगीत-गीतक कार्यक्रममे वृद्धि भेल अछि, ठमकल रंगमंचीय स्थितिमे सक्रियता बढ़ल अछि, पोथी-पत्रिकाक बिक्री बढ़ल अछि आदि-आदि।

'बड़ बेस, बड़ बेस, अहाँक बात मानलहुँ। मुदा अहीं कहू जे की ई पर्याप्त अछि? नहि। हम कहब किछु नहि भऽ रहल अछि। अहीं कहू जे मैथिलीमे विद्यार्थी कैकटा रहि गेल अछि। अधिकांश कालेज-स्कूलमे मैथिलीक विद्यार्थी नहि अछि आ शिक्षक लोकनि चैनक वंशी बजा रहल छथि। हुनका ई नहि बूझल छनि जे जँ हुनका विभागमे विद्यार्थी नहि रहतनि तँ जेना लोकसेवा आयोगसँ मैथिलीकेँ सरकार हटा देलकै तहिना महाविद्यालय-विश्वविद्यालय सँ सेहो हटा देतै। तेँ ई आवश्यक छै स्थिति मजगूत करय लेल जे स्कूल-कॉलेजमे विद्यार्थीक संख्या बढ़ाओल जाय।''(बजैत-बजैत श्री मिश्र सुस्त भेल जाइत छथि आ किछु बजैत-बजैत चुप जकाँ भऽ जाइत छथि)

अपने किछु कहय चाहैत रही मुदा चुप भऽ गेलिऐ? (श्री मिश्र जेना अपनाकेँ बंधनमुक्त करैत छथि आ पुनः पहिने जकाँ अनवरत बाजय लगैत छथि।)

''मोन तँ नई होइए, मुदा जखन अहाँ जोर दैत छी तँ एकटा साक्षात्कारक खिस्सा सुनबैत छी। पटनामे एकटा महिला शोधार्थीक साक्षात्कार रहैक। हम इलाहाबादसँ आयल रही आ डॉ. आनन्द मिश्र सेहो रहथि। शुरू भेलै साक्षात्कार। हम किछु-किछु पुछलिये, तकर बाद आनन्द बाबूकेँ पुछबाक रहनि। ओ विद्यापतिक एकटा पद्यजाहिमे सेक्सक अतिरेक रहैक तकर अर्थ पुछलथिन। महिला परीक्षार्थी सज्जन एवं बुझनुक रहय। ओ बड़े शालीनता सँ झांपला-तोपल शब्दें उत्तर कहि सुनौलकनि। मुदा हुनका मन नहि भरलनि तकरा बाद ओ ओकरा खुल्लमखुल्ला अर्थ सुनयबा लेल बाध्य करय लगलथिन आ जखन ओ शालीनतापूर्वक बाजय लगनि तँ आंखि मूनि रस लेबय लगलाह। (श्री मिश्र रुकैत पुनः बजैत छथि) हमरा कहबाक अभिप्राय ई जे जखन विद्यार्थी नहि जुटैत अछि, बहुत तरहक समस्या अछि, ताहि स्थितिमे जँ कियो महिला विद्यार्थी आगां बढ़ैत अछि तकर मनोबल अपन आनन्दक कारणे तोड़ब कहाँ धरि उचित अछि? हमरा आइ धरि ओ दृश्य स्मरण अछि जे ओ महिला माथ निहुरौने अपन साक्षात्कारक क्षण कोन विकट परिस्थितिमे बितौने रहय।....जनै छी बादमे हम आनन्द बाबूकेँ एना नहि करबाक मादे कहने रहियनि मुदा ठहक्का लगबैत बातकेँ उड़ा देलानि ओ।.... जनैत छी मैथिलीक प्रोफेसर लोकनि चाहथि तँ मैथिलीकेँ आगाँ बढ़ा सकैत छथि मुदा पद पौलाक बाद अपन दायित्व बिसरि जाइत छथि ओ सभ। हुनका ई सोचबाक चाहियनि जे ओ वर्तमान सत्ताक विरोधक बादो पद पर बनल छथि तेँ ओ एहन स्थिति बनौने रहथि जे केओ आंगुर नहि उठा सकनि। मुदा...कते कहू, की कहू ककरा-ककरा विषयमे कहू, किछू नहि फुराइये।''

साहित्य आकादमीमे एखन जे सभ भऽ रहल छै, पुरस्कार पर जे भऽ रहल छै, ओकर सदस्य लोकनि जे उठा–पटकक स्थिति बनौने छथि ताहि पर किछु कहबै?

''की कहू, किछु-किछु अनुचित काज तँ रमानाथे बाबूक समयमे प्रारंभ भऽ गेल छलै मुदा आब जे पीढ़ी साहित्य अकादेमीसँ लागल-भिड़ल अछि ओकर कथे भिन्न अछि। हमहूँ कैकटा पत्र-पत्रिकामे फिक्सिंगक मादे देखलहूँ-पढ़लहुँ अछि। ई सभ नहि होयबाक चाही। असलमे मैथिलीकेँ गुटबाजी खा रहल छै। सभ अपना-अपना लेल बेहाल अछि। ककरो टाका चाही, ककरो पुरस्कार चाही, ककरो गद्दी चाही-यैह सभ मैथिलीकेँ खा रहल अछि। एम्हर मैथिली साहित्यमे जाति-पातिक बात सेहो राजनीति जकाँ उठि गेल अछि से देखै छिऐ की नहि?''

एहि बात पर अपने की सौचैत छी, के सभ एकर अगुआ बनलाह अछि।

''देखू ई जे प्रारंभ कयलनि अछि जे ठीक नहि कयलनि अछि। हम तँ ककरो फराक नजरिस नहि देखैत छिऐक। मुदा किछु तिकड़मी साहित्यकार सभ एहि तरहक बात उठाकऽ अपन प्रभाव बढ़ाबऽ चाहैत छथि। हम तँ कहब जे ई सभ कयलासँ कोनो लाभ नहि। सभ मीलिकऽ मैथिलीक काज करैत चलू। मैथिली रहत तँ सभ किछु भेटत नहि रहत तँ कथी लऽकऽ लड़ब।''

अपने मैथिलीमे बड़ आन्दोलन केलिऐ, लिखलियइ आ जतय–ततय मैथिलीक लड़ाइ ठनलै ताहिठाम उपस्थित भऽ अपन योगदान देलिऐ।

अपने ई कहल जाओ ई अपने अपन सम्पूर्ण जीवनमे जतेक व्यक्तिकेँ मैथिलीक क्षेत्रमे काज करैत देखलियनि ताहिमे सँ लेखन, आंदोलन आ सेवीक रूपमे 'टाप टेन' किनका मानैत छियनि?

''ई तँ बड़ा कठिन प्रश्न कऽ देलहुँ अछि अहाँ मुदा हम कोशिश करब जे जेना-जेना स्मरण होइत जायत कहैत जायब। (क्रमिक रूपें जे नाम ओ एहि कोटिक व्यक्तिक रूपमे लेलनि ताहिमे महामहोपाध्याय उमेश मिश्र, महाराजा डॉ. कामेश्वर सिंह, भोला लाल दास, शशिनाथ चौधरी, रमानाथ झा, बाबू साहेब चौधरी, प्रबोध नारायण सिंह, सुमन जी, किरण जी, शेखरजी, आदिक नाम लेलनि। आ पुनः स्वयं बजैत छथि।) **वर्तमान कालमे हम जीवकान्तकेँ सर्वश्रेष्ठ साहित्यकार मानैत छियनि आ नवका पीढ़ीमे अरविन्द अक्कू केँ। गोविन्द बाबू सेहो बड़ पैघ विद्वान छथि। यात्री जी सेहो महान साहित्यकार छलाह। आन्दोलनकर्त्ताक नव नाममे पं. ताराकान्त झाक नाम सेहो लऽ सकैत छियनि।''**

मैथिलीक वर्तमान स्थिति, साहित्यकारक राजनीतिपूर्ण आचरण मैथिली भाषीक चुप्पी आ सरकारी विरोधक एहि वातावरणमे अपने मैथिली भाषीकेँ की संदेश देबय चाहैत छियनि?

''हम बेर-बेर कटब जे काज करैत चलू। झगड़ामे समय नहि बेरबाद करू। नेहरू हमरा कहने रहथि- ''साहित्यमे झगड़े की क्या बात है? काम करते जायें, आपकी भाषा को प्रतिष्ठापूर्ण स्थान प्राप्त होता जायगा।'' वस्तुतः नेहरूक कथन हमरा आइयो ओहिना मोन अछि। तेँ मरबोक बेरमे मैथिली लेल दौड़बरहा कऽ रहल छी। ई चिन्ता नहि करू जे श्रेय ककरा भेटि रहल छै। इतिहास ओकरे बनै छै जे काज करै छै। तें हम फेर कहैत छी जे मैथिली लेल जी जान लगा दिअऽ।''

मैथिली लेल गत ५ दशकसँ जीजान लगौनिहार डॉ. जयकान्त मिश्रक आँखिसँ उपर्युक्त बात कहैत –कहैत नोर खसि पड़लनि। हमर जिज्ञासा हुनक स्थिति देखि बीचहिमे ठमकि गेल। शिवकुमार जी टेप बन्द कऽ देने रहथि। टेपमे हुनक कहल गेल यथार्थ सभ बंद भऽ भेल गेल छल मुदा हमर दिमाग पर तँ बहुत रास बात ओहिना एखन धरि चोट कऽ रहल अछि जकरा ओ लिखबासँ परहेज करबाक अनुरोध कयने छथि।

साभार : समय साल, अप्रैल-मई-२००२



Sankardeva and Maithili

(ई श्रद्धेय जयकान्त मिश्रक एकटा अप्रकाशित कृति थिकनि जे हमरा हुनक सुपुत्र श्रीयुत् काशीकान्त मिश्र सँ लाभ भेल – सम्पादक)

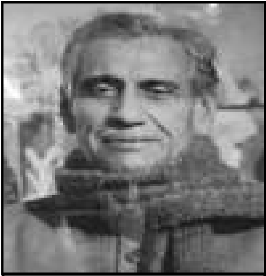


Sankardev wrote his dramas and hymns in Maithili. This fact has been pointed out again and again. But it has not been fully investigated as to why did he do so. He was fully conversant with and had written books in Sanskrit long before writing in Maithili. If his aim was to adopt a vernacular for propagating the Neo – Vaishnava cult among the common people of Assam, he could have done so easily by resorting to Assamese. Indeed he had written some books in Assamese too before adopting Maithili. It has been surmised that he wanted to use some kind of dignified vernacular medium for his religious aim. He took up Mithila's sanctified vernacular. Throughout Eastern India the great Vidyapati's language had somehow got associated with the Krishna Cult and became the sanctified vernacular. Obviously, this explanation satisfies the ordinary reader's curiosity. A penetrating investigator, however, is faced with certain pertinent queries:

1. When and where did Sankardeva get an access to the Maithili language?

2. Was Maithili introduced by Sankardeva just like Prakrit in Sanskrit dramas?

3. Should the dramas and hymns be taken as Assamese dramas and Assamese hymns or Maithili dramas and Maithili hymns?



Dr. Jaykant Mishra

4. Was Sankardeva influenced by Kirtaniya dramas and Maithili Padavalis prevalent in contemporary Mithila?

5. What was the influence of Oriya Brajabuli and Bengali Brajabuli on Assamese Brajabuli?

6. Did the Nepalese use of Maithili in dramas and hymns have anything to do with Sankardeva's use of it in Assamese?

One of the most puzzling aspects of these lines of investigation is that we have almost no positive data or evidences on anyone of

these points. In the present state of our knowledge we can only relate a few known facts with one another and draw some conclusions from the Maithili dramas and hymns of Sankardeva to answer the above queries.

Sankardeva's Access to Maithili

Sankardeva is said to have toured the whole of India for 12 years (1481 – 1493). During this pilgrimage he is reported to have Visited Varahkshetra which is situated within Mithila's northern borders. This is likely to be probable, as the Varahkshetra shrine is connected both with the story of Narakasura, a legendary ruler of Assam and with Vishnu worship. That this Varahkshetra lies in the Maithili speaking area is the only evidence from which we may guess that he liked the language and thought of writing in Maithili. This, however, has not been substantiated yet.

Another incident that could have given Sankardeva an opportunity to learn Maithili is connected with his visit to Jagannathpuri and is more interesting. We do not know how and why one Jagdish Mishra of Mithila, who was a disciple of the famous Vishnupuri, Mithila's poet and saint devotee of Vishnu/ Shiva, came in close contact with him there. It is traditionally said that Jagdish Mishra was directed in a dream by Lord Jagannath at Jagannathpuri to meet Sankardeva at Baradova and hand over to him a copy of Bhagvwat Purana. It is further said that Jagdish Mishra visited Sankardeva there and gave him a copy of Bhagwat Purana along with its commentary called Bhavaith Dipika. Indeed it appears that Sankardeva studied Bhagwat under Jagdish Mishra who resided with him for whole year and eventually even met with his death in Baradova.

This incident proves the fact that at one stage Sankardeva was initiated into Bhagwat by Mithila's Jagdish Mishra as a brother devotee, a companion or a disciple. We do not know much about Jagdish Mishra, even as tradition, but obviously he had his training under Vishnupuri. Vishnupuri was quite a well known Vaishnav saint and his full identity has been established(1). He flourished in the middle of 15th century. Before became a hermit he was known as Ramapati, a Maithil Brahmin from an orthodox family from district Madhubani (Bihar). A learned and widely travelled scholar he was well versed in Bhakti literature. His great work Bhakti Ratnakar in Sanskrit was translated into Bengali by Luria Krishnadas in about 1487. His Maithili poems are quoted by Lochan in his celebrated anthology of Maithili Lyrics in 17th century called Ragatarangini and by Jagajjyotirmalla in his Maithili drama Haragourivivaah. Of course, all these poems are in true Maithili tradition – not at all Vaishvav. Out of the two one is Literary and the other is on Lord Shiva. But as yet we have no evidence if Sankardeva met any Mathili personality. Vidyapati was no doubt an ardent devotee of Bhagwat Purana – even today a whole MSS of it very neatly written in his hand dated 309 La. Sam i.e. 1428 A.D. is extant. He used the legend of Radha and

Krishna in his Maithili poems but not in Vaishnava tradition.

These poems are in Brahmavaivarta tradition in Sanskrit literary tradition. Also a drama that he wrote in Maithili cannot be called a Vaishnava drama in Maithili. Though Vidyapati influenced all vaishnava saints and devotees of Krishna, we cannot say that he (Sankar) got direct inspiration from Vidyapati for writing Maithili dramas on Vishnu and Krishna. Vidyapati's only extant Maithili drama Gorakshvijaya is, however, a drama which shows how religious renunciation prevailed over Gorakhnath's worldly pleasures at a city called Kadalipur (Assam?), and also goes to show how people could be persuaded to follow the path of religion and can be considered to have inspired him to write in Maithili - provided Sankardeva could access it. Under the influence of the cotemporary courts of Mithila and, Maithili writers, the courts of Nepal were replete of dramatic performances of various kinds in Maithili and Bengali. Maithili – Sanskrit texts on music and dancing such as Shubhankar Thakur's (c.1600) Srihastmuktavali and Sangita Damodara found their way to Assam. The boundaries of medieval Mithila and medieval Kamrupa were contiguous. We have evidence of Mithila's artistes migrating to court of Koch Bihar where Sankardva happened to reside e.g. under Raja Vishnusmha (Vishwamalla? c.1515). One Maithili Karnakayastha named Narharidas rose to be the chief minister of the state and later his son Payonidhi was appointed the cief minister after his death. Payonidhi's son Kvindra is known to have introduced Kulinism in Assam(2). We know from Rajmala the details of this constant influx of Mithia's men and their arts in Assam.

It is mentioned that in Kamta (Koch Bihar) Court Malladeva alias Naranarayana patronized Maithili artistes, poets and scholars. Indeed many of his (or under his name as author somebody else's) poems are quoted in Lochan's Ragatarangini(3). This Malladeva is referred to as a patron by a famous tantra scholar of Mithila, Devanatha Thakur in his work Tantra Kaumudi(4). Snkardeva adorned the court of Kamta (Koch Bihar). Under its patronage he completed the Ramayana of Madhav Kandali by adding to it the Uttar Kanda. I have refrained from referring to the Kirtaniya tradition of Maithili dramas as I am not sure if this name had become popular at all by the time of Sankardeva. No doubt it existed in some form in Mithila and might have influenced Sankardeva through these contacts. There is, however, another point to consider. Mithila's dramas were not, as I pointed out above, only concerned with the subject of Krisha – there were varied topics of the Lore in the puranas and the epics which formed the subject matter of Mithila's drama. Nevertheless it can be concluded that Sankardeva had an opportunity of being influenced by Mithila and Maithili writers.

Nature of Sankardeva's acquaintance with Brajbuli-Although it is nowhere mentioned specifically that Sankardeva

adopted Maithili through his contacts with Mithila's eminent poetic achievements through Maithili writers and scholars, I am inclined to believe that they might have supported his choice. Actually however he chose the idioms and vocabulary of the Vaishnava cult as he found them in the language of Brajbuli Vaishnava poetry in Bengal and Orissa. In other words, there is internal evidence that he did not know Vidyapati's original language as it was used in Mithila – the complex verb conjugation and the pronouns, especially the use of 'aha' (you) of Maithili is not present in his Maithili. We note complete absence of the intricacies of Vidyapati's Maithili in Sankardeva's language. On the other hand there is ample evidence to show that the simplified linguistic characteristics of his Maithili are very much in common with those of Bengali and Oriya BrajbuliOf course there is profuse evidence that Bengali and Oriya Brajbuli writers modeled their Maithili on the basis of Vidyapati's original language. But obviously they made a selection of Maithili language, primarily with easy and malleable elements

Sanskrit, Maithili or Assamese?- I should now like to analyse a few passages, selected at random and determine the content of of each language in the dramas of Sankardeva. Let us examine the following prose passage:

"तोहे विने जिवन नाहि धरब। स्वभावे मरब। कि निमित्ते हामाक चारह? ओहि चाँद बदन ने देखिये कैचे प्रान राखब। बोलि कृष्णेर मुख निरेखि जैसे विलाप कयल ताहे देखह सुनह। निरंतरे हरि बोल।" ।। कालिय दमन यात्रा।।

(महापुरूष शंकरदेव ब्रजबोली ग्रन्थावली, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग)

All the 32 words in this passage are Maithili with a few phonetic changes. Take a passage of poetry: "

"गृह मोहि सब तेजिआ तेरि
चरने तरन कैली।
कयोसब नास तुहु तेजि जास
अब अनाथिन भैलौ रे।।
बंसी स्वान सुनि, आसिये गोपिन
काहेरि हेरल मुख।
कमल नयने निरोखिये कोने
हरल हमार दुख रे।।"

Here are 37 words. Barring a few phonetic changes the language is the same as that of Bengali – Oriya brajbuli variety of Maithili. There are other two or three points of similarity between the dramas and hymns of Mithila and those of Sankardeva, the reason, for which I am inclined to call these works as Maithili dramas and hymns written in Assam. The first point to note is that the names of Raga & Raagini are mentioned at the top of the songs in the true fashion of Jayadeva, a well known Maithili writer. In this Maithii literature and Brajbuli literature are at one with Sankarddeva's dramas and hymns. Secondly, the use of Sanskrit verses now and then in these dramas is exactly similar to that in the Kirtaniya dramas of Mithila. Thirdly, at the end of each speech the refrain (e.g. in the above prose passage) "निरंतरे हरि बोल" may be paralleled with Maithili dramatic practice

of using in the refrain such lines as "हरिपद प्रनत रमापति भान" e.g. at the end of songs in Ramapati's Rukmaniparinaya. Fourthly, the presence of the Sutradhar in the Maithili dramas of Nepal and Mithila is not so pronounced in literary specimens but in actual performance the Kirtaniya performances had the Sutradhar present throughout - from the beginning till the end. Fifthly, in Assam there is an equal deviation from the Sanskrit tradition of drama writing in Assamese and Maithili. For example Maithili is not used by lower classes or women alone – Maithili is used - in Mithila, Nepal as well as Assam – by hero, by the men folk and by the main characters. So these plays cannot be called Sanskrit plays using Maithili/Bengali/Prakrit. They are actually Maithili/Bengali plays using Sanskrit. Nor these are the three language plays. If one wishes to see 'three language plays' one may pursue the Rupakatrayam (edited by Dr. Maheshwar Neog). There you see the use of three languages (Sanskrit, Prakrit and Assamese). Indeed in the medieval plays of Mithila also, when in later years Sanskrit Pandits used Maithili as secondary language the three languages were used as such but the proper kirtaniya plays did not use Maithili so as to make the plays 'three language plays'. They wrote Maithili plays with Sanskrit or Prakrit as conventions only to establish them. To conclude Sankardeva's visit to Mithila is a myth like that of Chaitanyadeva's or that of Chandidas's visit to Vidyapati. However the Mithila Kirtaniya tradition is equally devoted to Shiva with Krishna whereas Assamese dramas and poems are more devoted to Krishna. As a conclusive evidence I must say the tradition of Sankardeva was never known in any regard or at any place in Mithila. Here is in fact no trace of any influence of 'Ekasaraniya' Mithila. Nevertheless the fact remains that these writings of Assam should be taken as Brajbuli specimens (i.e. mixed language pieces with Maithili as base – mixed with Bengali, Brajbhasha, Assamese and Sanskrit).

(1). See Ramanath Jha's essay on Vishnupuri in Patna University Journal Vol.1, no2, pp 7-20.

(2). Radhakrishna Choudhary, Eastern Language, Literature and Culture, P7, quoted by Rajeshwar Jha in Madhyakalina Purvanchal Vaishnava Sahitya, P132.

(3). Radhakrishna Choudhary, Eastern Language, Literature and Culture, see also Jayakanta Mishra's History of Maithili Literature (Maithili Version), P141, though his identity is not undisputed.

(4). Ibid, P134. Also see Umesh Mishra Commemoration Volume, published by Ganganath Jha Research Institute, Allahabad, P254.

(5). For details of the Maithili elements in Bengali - Oriya – Brajbuli as compaired with Vidyapati's Mathili see Shailendra Mohan Jha's Brajbuli Sahitya (Bihar Hindi Granth Academy, Patna, 1974) pp 16-54. For the language of Sankardeva see Mahapurush Sankardeva Brajbuli Granthawali (Hindi Sahitya Sammelan, Prayag, 1975) pp 91-107. Courtesy: unpublished.



छांह



साभार- श्री काशीकांत मिश्र



I was happy to inaugurate yesterday the Maithili Book exhibition and to see the large collection of books and manuscripts in Maithili. This demonstrates that Maithili has been for a long time and is today a living language among the people of that area. The language deserves encouragement and this can best be done by good books being written in it.

Jawaharlal Nehru

Dec. 10. 1953

आदित्य सदन, मिश्रटोला
दरभंगा- ८४६००४

स्वस्ति
आयुष्मान श्री काशीकान्तजीकें शतशः शुभाशीर्वाद।
ने हम अहाँकें देखने छी ने अहाँकें हमरासँ [illegible] । तथापि मैथिली भाषा-
साहित्यक आधारभूमिकें [illegible] प्रकाशन [illegible]
[illegible] परिचय [illegible]
हमर [illegible] 'विद्या ददाति विनयम्' [illegible]
अनुरूप आचरण करैछी।
अहाँ के देखने नहि छी। [illegible] भेंट हो। अहाँक गाम
[illegible] दरभंगा छैक। [illegible] मिश्रटोलामे
हमर निवास अछि। [illegible] संकेत की। हमरा चलबा-
फिरबामे कठिनता होइत अछि, ने तँ हम स्वयं अबितहुँ।
[illegible] अहाँक
पिता [illegible] जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी'। [illegible]
पुण्यक फल [illegible] छैक। आब मातृभूमिक सेवा [illegible]
[illegible] अहाँक प्रतीक्षा करब। हमर [illegible]
दूरभाषक नं. ०६२७२- २२३४८६ अछि। शेष भेंट भेलापर। इति शुभम्।
कल्याणाकांक्षी —
श्री [illegible] अमर
























भारतमे प्रस्तावित मिथिलाराज्य
प०चम्पारन
पूर्व चम्पारन
सीतामढ़ी
शिवहर
मधुबनी
सुपौल
अररिया
किशनगंज
मुजफ्फरपुर
दड़िभंगा
सहरसा
मधेपुरा
पुर्णिया
समस्तीपुर
वैशाली
खगड़िया
कटिहार
बेगुसराय
भागलपुर
मुंगेर
लखी
सराय
शेखपुरा
बांका
गोड्डा
साहिबगंज
जमुई
पाकुर
देवघर
दुमका
जमतारा



संस्थाक अध्यक्ष डॉ. अवधेश झा संग न्यायमूर्ति अजीत कुमार



संस्थाक साहित्यिक सत्र



प्रयागस्थ मैथिल समाजक समागम

